मन्त्र
सिद्धि और साधना
सत्यवीर शास्त्री
श्रीं
ह्रीं
क्लीं
नमः
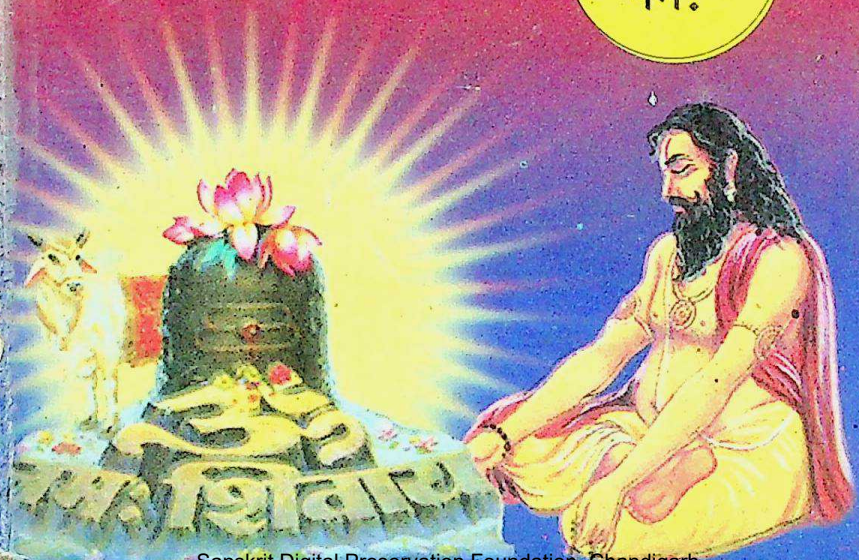
मन्त्र सिद्धि और साधना

मन्त्र विद्या

सत्यवीर शास्त्री

पूर्व

ॐ वज्राय नमः
ॐ इन्द्राय नमः

ईशान
ॐ त्रिशूलाय नमः
ॐ ईशानाय नमः

अग्नि
ॐ शक्तये नमः
ॐ अग्नये नमः

उत्तर

ॐ गदायै नमः
ॐ कुबेराय नमः

ॐ
हुं गं ग्लौं
हरिद्रागणपतये
वर वरद सर्वजनहृदय
स्तम्भय स्तम्भय
स्वाहा

दक्षिण

पश्चिम
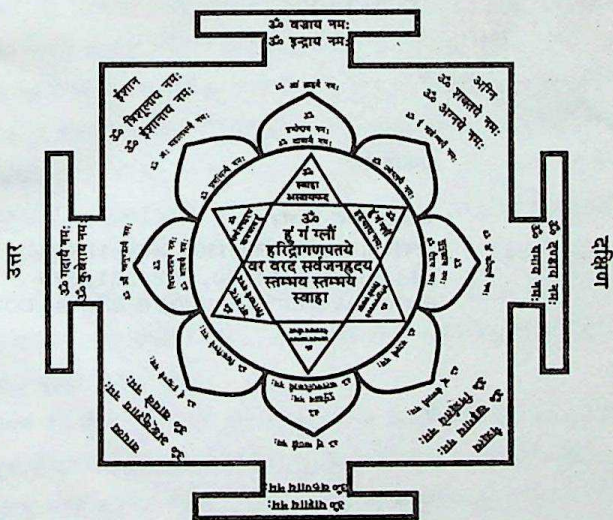
वर्ल्ड बुक कम्पनी

चावड़ी बाजार, पोस्ट बॉक्स–1300, दिल्ली–110006

दो शब्द

आज विज्ञान के चमत्कारों की धूम चहुं ओर मची है, परन्तु इस विद्या से आकर्षित व्यक्ति यह नहीं जानता कि आधुनिक विज्ञान का अन्वेषण मात्र स्थूल जगत तक सीमित है। विज्ञान निर्मित यन्त्र स्थूल वस्तुओं की गतिविधियों का पता चला सकने में समर्थ हैं, सूक्ष्म जगत में प्रवेश करने की क्षमता उनमें नहीं है। स्थूल वस्तुएं जड़ और निर्जीव होती हैं उनकी अपनी स्वतन्त्र शक्ति कुछ नहीं होती बल्कि वे सूक्ष्म का सहारा लेकर अपनी गतिविधियां संचालित करती हैं।

जिन ऋषियों ने भारतीय संस्कृति के सिद्धान्तों, मान्यताओं और साधना पद्धति का आविष्कार किया था, वे निश्चय ही महान आविष्कारक कहे जा सकते हैं। उन्होंने अपने तप के बल से यह ज्ञात कर लिया था कि स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म समर्थ है। उन महान विज्ञान विशारदों ने सूक्ष्म शक्तियों की खोज की, उन तक पहुंचने के उपाय तलाश किये। उन्होंने अपनी शक्ति और बल का भरपूर उपयोग इन सूक्ष्म शक्तियों की कार्य प्रणाली को समझने में किया ताकि आने वाली पीढ़ी हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करती रहे।

व्यक्ति की सुप्त शक्तियों को जाग्रत करने के दो मार्ग हैं इन मार्गों का आश्रय लेकर व्यक्ति स्वयं के विराट से साक्षात्कार कर सकता है। एक है मन्त्र और दूसरा योग। जहां मन्त्र का चरम साध्य एकत्व है तो योग का अन्तिम प्राप्य भी मुक्ति है। मन्त्र इस विश्व में व्याप्त अनेकत्व में एकत्व का अन्वेषण करता है। आकाश में एक ही तन्मात्रा है अर्थात एक मात्र शब्द ही आकाश का व्यक्तिकरण है। जब कि योग वायु तत्वाश्रयी हैं, इसलिए इस में शब्द और स्पर्श दो तन्मात्राएं

हैं, दो तन्मात्रा होने के कारण वायुतत्त्व की शक्ति क्षीण हो जाती है, इसलिए योग साधना अधिक सावधानी और श्रम चाहती है। मन्त्र साधना योग से सरल मार्ग है।

आज का मानव पीडित है, काम कुण्ठाओं और नाना प्रकार के दुःख व्याधियों से, वह असहाय अनुभव करने लगा है। वह स्वयं ऐसे सहारे की तलाश में भटक रहा है जो उसके पीडित मन-मस्तिष्क को राहत दे सके। प्रस्तुत पुस्तक में नाना प्रकार के मान्त्रिक प्रयोग दिये गये हैं जो कि धैर्य और आस्था से अपना लेने पर भौतिक सुख के साथ पारलौकिक सुख वृद्धि भी करते हैं। इस लघु पुस्तक में जो कुछ लिखा है वह हमारे प्राचीन दर्शन एवं वैज्ञानिक विद्या से परिचित कराने का प्रयास है।

असफलताएं एवं विघ्न हर कार्य में आते हैं, परन्तु इन से डरने या घबराने से कार्य नहीं चलेगा। साधना करते समय, प्रति पल गुठली को उखाड़ कर देखने की (कि उगी है या नहीं) बाल सुलभ चंचलता और आतुरता मत रखिये, एक निष्ठ होकर करते रहिये। यह प्रायोगिक विषय है इस का परीक्षण करिये, किन्तु सफलता विश्वास और धैर्य से अपना लेने पर मिलेगी।

इस पुस्तक की कुछ सामग्री प्रसिद्ध धार्मिक पत्रिका, कल्याण, से ली गई है अतः मैं इसके प्रकाशक गीता प्रेस गोरखपुर का भी आभारी हूं।

—सत्यवीर
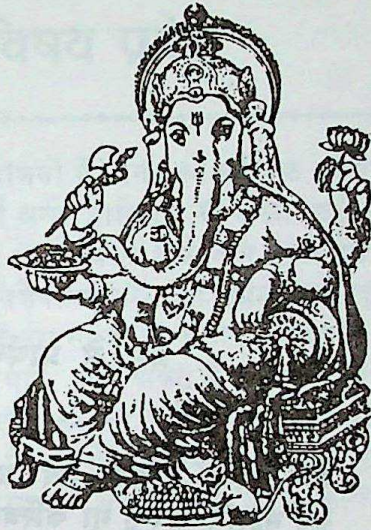
विषय-सूची

प्रभु से प्रार्थना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ।।

सब मनुष्य सुखी हों, सब मनुष्य निरोगी हों, सब मनुष्य भली बातें देखें, कोई मनुष्य दुखी न हो।

विषय प्रवेश

संसार के समस्त प्राणियों में मानव को सर्वश्रेष्ठ प्राणी माना जाता है क्योंकि उसमें अन्य प्राणियों की अपेक्षा कहीं अधिक गुण और विशेषताएं हैं। मानव में पाई जाने वाली इन अनेक विशेषताओं में से दो विशेषताएं और गुण अत्याधिक महत्वपूर्ण और विशिष्ट हैं, जिन्हें हम सहज ही संसार के विकास प्रगति और उन्नति का आधार मान सकते हैं। मानव के ये दो विशिष्ठ गुण हैं उसकी कल्पना शक्ति तथा जिज्ञासा की भावना। मानव मन में उसकी बुद्धि विवेक, ज्ञान और उसके आस-पास के वातावरण के आधार पर उसकी कल्पना हर समय कोई न कोई चित्र या विचार प्रस्तुत करती रहती है और जब वह चित्र या विचार मानव मन की गहराईयों तक पैठ जाता है तो उसे साकार रूप में देखने या उसे क्रियात्मक रूप देनें की एक सहज इच्छा (जिज्ञासा) मानव के मन में जाग उठती है और फिर वह अपनी उस कल्पना को यथार्थ में प्रकट करके (परिवर्तित करके) अपनी जिज्ञासा शांत करने के प्रयास में जुट जाता है।

आदिम युग अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानव में यह गुण विद्यमान रहे हैं। नये ज्ञान की प्राप्ती और अज्ञान को ज्ञान में परिवर्तित करने की सहज जिज्ञासा, और इसके जीते जागते प्रमाण हमारे समक्ष आज हैं। यदि मानव में उपरोक्त गुण

विद्यमान न होते तो आज हम अपने आपको, अपने समाज को अपनी सभ्यता और संस्कृति को जिस उन्नत और परिष्कृत रूप में देख रहे हैं उस रूप में न देख पाते।

आज का मानव भौतिक विज्ञान के बल पर अन्तरिक्ष में जा पहुँचा है। निरन्तर कार्यरत रह कर प्रकृति पर विजय पाने की चेष्टा कर रहा है। काल के सुदृढ़ पाश को काट फेंकना चाहता है, उसका यह प्रयास मानव जाति के इतिहास में पहला नहीं है। भारतीय प्राचीन शास्त्रं और दर्शन इसे पहला प्रयास मानने से इन्कार करते हैं। प्राचीन भारतीय ग्रन्थों के अनुसार अणु से भी अधिक शक्ति वाले अन्य स्रोतों का ज्ञान भारतीयों को था।

आज भौतिक और जड़वादी विज्ञान के युग में मन्त्र को विज्ञान कहना कोरी कल्पना मानी जाती है (यह दूसरी बात है कि आज विज्ञान शब्द की शक्ति को मानता है) आज के युग में मंत्र विज्ञान आऊट आफ फैशन (out of Fashion) हो गया है। लेखक की कल्पना शक्ति मिट सकती है, उसके वर्णन की शैली पुरानी पड़ सकती है, परन्तु उस विषय का मूलभूत आधार झूठा नहीं हो सकता। समय का प्रवाह उसके विषय को उपेक्षा योग्य कर सकता है परन्तु असत्य या मृत नहीं कर सकता। जैसे गणित में दो और दो चार होता है, यह कालजयी सत्य है यह न बूढ़ा होगा न मृत भले ही कोई इसका व्यवहार करे या न करे, इसी प्रकार मंत्र भी शाश्वत सत्य है।

अगर कोई व्यक्ति मंत्र शक्ति की कोई पुस्तक पढ़कर उसमें लिखा कोई प्रयोग करता है और उसमें असफल हो जाता है तो वह इस शास्त्र को झूठा कहने में संकोच नहीं करता, इस विद्या को निराधार कल्पना तथा अन्ध विश्वास कह कर उपहास करता है। जबकि शास्त्रों के कथन गणितीय सत्य हैं। आज का

मानव भौतिक विज्ञान के आविष्कारों से चमत्कृत हो रहा है, एक तरह से विज्ञान का दास बन गया है। परन्तु भौतिक विज्ञान से भिन्न प्रकार का यह मंत्र विज्ञान है। यह विज्ञान और इसकी अलौकिक सिद्धियां पैसे से क्रय नहीं की जा सकतीं। यह सूक्ष्म विज्ञान है, सचेतन शास्त्र है तथा अन्तर्मुखी सिद्धि है। इसके सत्य को किसी की स्वीकृति की अपेक्षा नहीं।

आज के युग में जो भौतिकता पनपी है उसने इस आत्मवादी विज्ञान की प्रतिष्ठा को कम कर दिया है। समाज की उपेक्षा के कारण यह आत्मवादी ज्ञान तथा इसकी सिद्धियां लुप्त प्राय: होती जा रही हैं। आज सिर दर्द करने वाली किसी दर्द निवारक दवा के चमत्कार को मानने वाले बहुत हैं साथ ही सिर दर्द, पीलिया, मिरगी जैसे रोगों को झाड़ने से दूर करने की बात को कपोल कल्पना और अन्ध विश्वास कहने वाले भी हैं। मंत्र विज्ञान जैसी आत्म विद्या की प्रतिष्ठा कम हुई है यह सत्य है, परन्तु प्रतिष्ठा कम होने का यह अर्थ कदापि नहीं है कि बात सिरे से ही असत्य है। आत्मवादी अतीन्द्रिय विज्ञान कभी भी इतना सस्ता नहीं होता कि उसे भौतिक उपकरणों से खरीदा जा सके।

संसार की रचना का पंच तत्वों को आधार माना है। इस बात को हम भी जानते हैं तथा हमारे पूर्वज भी जानते थे। हमारे ऋषियों ने इस आधार को ढूंढ़ कर बड़ा सुगम बना दिया था मानव जीवन को। वेदों का आविर्भाव भी इसी अर्न्तदर्शन के कारण हुआ। आज यह विज्ञान सम्मत सत्य है कि संसार की रचना पंच तत्वों से हुई है। इसी का आधार बना कर हमारी भाषा बनी और विकसित हुई। भाषा में पांच वर्ग हैं और प्रत्येक वर्ग में पांच अक्षर। स्वर भी पांच हैं तथा उन्हें उच्चारण करने के भी पांच स्थान हैं, कण्ठ, तालू, मूर्धा, दन्त

और ओष्ठ। लोक में जिस प्रकार एक तत्व का दूसरे तत्व में प्रवेश हो जाता है उसी प्रकार प्रत्येक वर्ग के पांच अक्षरों की सख्या दूसरे तत्वों की उपस्थिति का प्रतीक है। प्रधान तत्व का प्रतीक वह वर्ग होता है इसलिए उसकी मुख्यता के साथ अन्य गौण तत्वों का प्रतिनिधित्व शेष अक्षरों पर निर्भर करता है जैसे हम 'ह' कार बनने वाले शब्द लें। हस्ती, हस्त, सिंह महान आदि इन शब्दों में 'ह' कार का योग है। 'ह' आकाश तत्त्व का प्रतीक है इसी कारण 'ह' कार के योग से बने इन शब्दों में आकाश की सी बुलन्दी और महिमा किसी न किसी रूप में विद्यमान है।

ऋषियों ने अपने योग बल-अन्तर्दृष्टि से शब्द के महत्व को पहचाना और इसे ब्रह्म कह कर इसकी उपासना विधि निकाली। शब्द अच्छा है या बुरा, उसे ब्रह्म मान कर उस की उपासना करना ही यहां ध्येय माना है क्योंकि इससे शब्द मात्र के लिए समबुद्धि बनी रहती है और वह निन्दा या स्तुति से प्रभावित नहीं होता। यही समवृति मानव के अन्तः करण को शुद्ध करके उसे शान्ति और आनन्द के मार्ग पर पहुचा देती है।

शब्द को मन्त्र का आधार मानने का मुख्य कारण यह है कि यह अन्य तत्त्वों की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली तथा समर्थ है। शास्त्रकारों ने इसकी इसी असीम सामर्थ्य को देखकर ही इसे ब्रह्म कहा है। शब्दों के उच्चारण से जो कम्पन पैदा होते हैं वे ईश्वर-तत्त्व के माध्यम से आकाश में परिभ्रमण करके कुछ ही क्षणों में अपना चक्र समाप्त कर लेते हैं और अपने साथ अनुकूल कम्पनों को यात्रा करते समय मिला लेते हैं (क्योंकि अनुकूलता में एकता का सिद्धान्त सर्वत्र है) इन कम्पनों का एक पुंज बन जाता है। यात्रा से लौटते-लौटते वह अपनी शक्ति को काफी बढ़ा लेते हैं। यह कार्य इतनी तीव्रता तथा सूक्ष्मता से होता है

कि साधक को इसका अनुभव नहीं होने पाता कि शब्द के उच्चारण से यह चमत्कार कैसे उत्पन्न हो रहे हैं।

व्यवहार में भी हम शब्दों के चमत्कारों को देखते हैं। बीन बजाकर सपेरा सर्प को मोहित कर लेता है। संगीत की ध्वनि से मृग तन्मय हो जाते हैं। थाली बजा कर सर्प तथा अन्य जहरीले जन्तुओं के विष को दूर किया जाता है। पुल के ऊपर सैनिकों को कदम मिला कर नहीं चलने दिया जाता। आज विज्ञान ने शब्द किंवा ध्वनि के प्रभाव का भिन्न भिन्न प्रकार से परीक्षण करके देखा है। शब्द की सामर्थ्य सभी भौतिक शक्तियों से बढ़कर सूक्ष्म और विभेदन क्षमता रखती है इस बात की निश्चित जानकारी भारतीय तत्त्व दर्शियों ने कर ली थी तत्पश्चात् ही मन्त्र विकास उन्होंने किया था।

हम जो कुछ बोलते हैं उसका प्रभाव व्यक्तिगत तथा समष्टिगत रूप में सौर ब्रह्माण्ड पर पड़ता है। जिस प्रकार तालाब में फेंके गये कंकर से उत्पन्न लहरें काफी दूर तक जाती हैं इसी प्रकार हमारे मुख से निकला शब्द आकाश के सूक्ष्म परमाणुओं में कम्पन्न पैदा करता है। इन्हीं कम्पनों से लोगों में अदृश्य प्रेरणायें जागृत होती हैं तथा मस्तिष्क में विचार न जाने कब आ जाते हैं हम समझ नहीं पाते परन्तु मन्त्र विद् जानते हैं कि यह सब सूक्ष्म कम्पनों का चमत्कार है जो कि मस्तिष्क के ज्ञान कोषों से टकराकर विचार के रूप में प्रकट हो उठते हैं।

जब हम शब्द की शक्ति पर विचार करते हैं तो अनायास ही हमारा ध्यान भारतीय आत्मवादी ज्ञान मन्त्र की ओर जाता है। भारतीय शास्त्र मन्त्र शक्ति के चमत्कारों से भरे पड़े हैं। शास्त्रों में मन्त्र शक्ति की अपार महिमा बतलाई है। आज भी बहुत से लोग इस मन्त्र शक्ति द्वारा अपनी कामना सिद्धि करते

देखे जा सकते हैं। भारतीय जन समुदाय का मन्त्र शक्ति के प्रति अटल विश्वास और श्रद्धा है। आधुनिक शिक्षा पाए कुछ लोग इस विद्या को कपोल कल्पना और अन्ध विश्वास कहते हैं क्योंकि उन्हें मन्त्र शक्ति का कोई ठोस तर्क नहीं मिल पाता। वे कहते हैं कि ऐसा कैसे हो सकता है कि कोई व्यक्ति मन ही मन कुछ शब्द बुदबुदा कर किसी मिरगी के रोगी या ज्वर से ग्रस्त रोगी को ठीक कर दे। मंत्र शक्ति के बारे में जहाँ विश्वासी मिल जाएंगे वहां अविश्वासी भी मिल जाएंगे। वाद-विवाद चलने पर एक मन्त्र को शास्वत सत्य कहता है तो दूसरा उसे ढोंग और अन्ध विश्वास बतलाता है। ऐसा इसलिए हो रहा है कि मन्त्र विद्या के जानकार लुप्त प्रायः हो गए हैं और आजकल ढोंगी लोगों ने इसे व्यवसाय बना लिया है। इन लोगों को इस विद्या की कोई जानकारी नहीं होती। आज अगर इस विद्या पर वैज्ञानिक तरीकों से अनुसंधान किए जाएं तो हमारा व्यक्तिगत कल्याण तो होगा ही साथ ही देश भी गौरवान्वित होगा।

प्राचीन ऋषियों के मतानुसार शब्द में अपार शक्ति छिपी रहती है क्योंकि यह आकाश तत्व से सम्बन्धित है और आकाश तत्व अति सूक्ष्म है। स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म की शक्ति अधिक होती है। बारूद में निहित शक्ति को प्रयोग करने के लिए उसके स्थूल रूप को सूक्ष्म में परिवर्तित करना पड़ता है। यदि हम बारूद के ढेर में आग लगा दें तो वह मात्र 'सर' की आवाज करके जल उठेगा। परन्तु इसी को जब बम या गोली में भरकर चलाया जाता है तो वह विनाश लीलामय बन जाता है। आज के वैज्ञानिक ने खोज करते-करते स्थूल पदार्थों को एटम बम और अणुबम में बदल दिया है। भारतीय ऋषियों ने स्थूल की बजाए सूक्ष्मतम तत्व आकाश से उत्पन्न शब्द पर अनुसंधान

किए और समस्त विश्व में अपनी विद्वता की पताका फहराई।

नेपाम बम और टैंकों की खोज से पहले भारतीय शास्त्रों में वर्णित अग्निवाण और अग्निरथ जैसे अस्त्र-शस्त्रों को लोग कोरी गप्प समझते थे परन्तु आज वे विज्ञान की खोजों के अनुसार सत्य सिद्ध हो रहे हैं। आज हमें आश्चर्य हो सकता है कि प्राचीन ऋषि-मुनि किस प्रकार कुछ शब्दों का गठन करके उनके उच्चारण से क्षण भर में विनाश और सृजन कर लेते थे। हमारे ये पूज्यजन त्रिकालज्ञ थे, उनमें योग और ज्ञान की शक्ति तथा तप का बल था। प्राचीन ग्रंथों में जिन अलौकिक सिद्धियों का वर्णन मिलता है वह आज कहां देखने सुनने को मिलती हैं। ब्रह्मास्त्र, नारायणास्त्र, पाशुपति अस्त्र आदि अस्त्र-शस्त्रों में जो शक्तियां थीं वैसी शक्तियां आज के एटम बम, और अणुबम आदि किसी अस्त्र-शस्त्र की नहीं हैं।

आज विज्ञान ने इतनी प्रगति कर ली है कि वह अन्तरिक्ष में जा पहुंचा है। हजारों मील प्रति घण्टा की गति से आकाश मार्ग में गमन करने वाले वायुयान आज के विज्ञान की देन हैं। विज्ञान के इस चमत्कार को देखकर आज का मानव चमत्कृत हो रहा है, इतरा रहा है अपनी इस वैज्ञानिक खोज पर। जरा शास्त्रों में वर्णित कुबेर के पुष्पक, राजा शाल्व का सौभविमान आदि विमानों की ओर ध्यान दीजिये कितने विचित्र थे वे विमान, आज ऐसे विमान कहां देखने को मिलते हैं।

आज का विज्ञान जड़ विज्ञान है और इस जड़ विज्ञान का दास बनकर मानव ने अशान्ति मोल ले ली है, वह जकड़ गया है इस अशान्ति के बन्धन में। आज मानव की वही हालत है जो दलदल में फंसे की होती है। दलदल में फंसा व्यक्ति जितना प्रयत्न अपनी मुक्ति का करता है उतना ही वह उसमें फंसता चला जाता है। यही हाल आज के विज्ञान भोगियों का है।

विज्ञान ने चिकित्सा के क्षेत्र में काफी प्रगति करने का दावा किया है, यह दावा कहां तक सच है यह आज का व्यक्ति भली प्रकार जानता है। एलोपैथिक मेडीसिन्स जहां तुरन्त प्रभावी हैं वहां उनका साईड इफैक्ट भी है, जैसे एस्प्रो, एनासिन जैसी दर्द निवारक दवाएं जिनमें एस्प्रीन नामक द्रव्य मुख्य रूप से होता है दिल को क्षति पहुंचाती हैं। इसी प्रकार इस पैथी की समस्त दवाएं कुछ न कुछ साईड इफैक्ट व्यक्ति को देती ही हैं।

आयुर्वेद चिकित्सा में रोग को दूर करने में देरी अवश्य लगती है परन्तु ये औषधियां निरापद और निर्दोष हैं। रोग को दबा देने की अपेक्षा जड़ से खत्म करने की क्षमता इनमें रहा करती है। ध्वनि से चिकित्सा इससे भी सरल तथा उपयोगी है। जैसे जौंडिस (पीलिया) एक घृणित रोग है (इसमें पित्त खून में उतर आता है और व्यक्ति को सर्वत्र पीला-पीला ही नजर पड़ता है। टट्टी, पेशाब पीला हो जाता है। पसीने से कपड़े तक पीले हो जाते हैं) इसका एलोपैथी में कोई ठोस इलाज नहीं है। आयुर्वेद में भी उसे 6 महीने चिकित्सा करने पर यह रोग जा पाता है, परन्तु ध्वनि चिकित्सा से मात्र तीन दिन में यह समाप्त हो जाता है। आज पश्चिम में ध्वनि चिकित्सा पर प्रयोग हो रहे हैं जो कि शतप्रतिशत सफल रहे हैं।

आज का वैज्ञानिक ध्वनि विज्ञान की खोज में लीन है जब कि भारत में प्राचीन काल से इसका प्रचलन था। संस्कृत के एक कवि "मयूर कवि" थे जिन्हें कोढ़ हो गया था और उन्होंने सूर्य स्तोत्र का प्रयोग अपने इस रोग को दूर करने में किया था। मयूर कवि हरिद्वार गये वहां उपरोक्त प्रयोग कर रोग मुक्त हुए थे। सन्तों में गोस्वामी तुलसीदास ने "ताऊन" नामक रोग की चिकित्सा अपने रचे हनुमान बाहुक द्वारा की थी। हनुमान बाहुक के अन्तिम पृष्ठ पर उन्होंने बाहुक द्वारा रोग मुक्त होना

माना है। संस्कृत के एक और कवि पदमाकर जी ने गंगा लहरी नामक स्त्रोत के पाठ से कोढ़ से मुक्ति प्राप्त की थी।

ध्वनि का सीधा प्रभाव शरीर की बजाए हृदय पर पड़ता है, जिसके कारण रोगी रोग मुक्त हो जाता है। फ्रांस के एक वैज्ञानिक मि० क्यूवे ने ध्वनि के विभिन्न प्रयोग किये और ध्वनि द्वारा हृदय और मस्तिष्क पर सीधा प्रभाव डाल कर गठिया और लकवे के रोगी रोग मुक्त किये। सन् 1924 में मि० क्यूवे ने अपनी इस सफलता का राज सार्वजनिक तौर पर प्रकट करके कुछ चमत्कार दिखलाए थे। उनकी एक स्त्री रोगी गाड़ी पर बैठकर अपने लकवा मारे शरीर की चिकित्सा कराने आई थी और पैदल वापिस गई थी। पश्चिम के ही एक डॉ० पाल ने ध्वनि विज्ञान से क्षय, रक्तचाप तथा मियादी बुखार के रोगों की सफल चिकित्सा की थी।

शास्त्रों में राग विद्या के माहिर नारद मुनि माने गये हैं। इनकी संगीत व्याख्या के अनुसार संगीत में सात स्वर होते हैं। प्रत्येक स्वर की अलग-अलग तासीर है प्रभाव है। जैसे गर्म, ठण्डा, शुष्क, तर आदि। नौ रस माने हैं इन्होंने संगीत में। वे कहते हैं कि संगीत कानों (कर्ण) को प्रिय लगता है यह गलत है। संगीत सीधा हृदय और मस्तिष्क को प्रभावित करता है, कान तो मात्र माध्यम हैं। जब हृदय में संगीत की स्वर लहरी गूंजती है तो कई प्रकार का सूक्ष्म प्रभाव (गैसीय) वहां पड़ता है स्थूल से सूक्ष्म का प्रभाव अधिक पड़ता है यह विज्ञान मानता है। संगीत भी गैस से सूक्ष्म है। जैसे चूर्ण से तरल औषधि सूक्ष्म है और गैस तरल से भी सूक्ष्म। इन हालात में यह मान लेने में कोई बुराई नहीं है कि ध्वनि चिकित्सा श्रेष्ठ पद्धति है।

शास्त्रों के अनुसार चिकित्सा तीन प्रकार की मानी गई है। आसुरी चिकित्सा, मानुषी चिकित्सा तथा दैवी चिकित्सा।

आसुरी चिकित्सा को अंग्रेजी भाषा में सर्जरी कहते हैं। विश्व की यह धारणा भ्रान्त है कि शल्य चिकित्सा का उद्गम स्थल यूरोप है। जर्मन विद्वान् डॉ० अलबर्ट वेबर ने स्वीकार किया है कि भारतीय ज्ञान-विज्ञान के ग्रंथों में आयुर्वेद भी अन्यतम है। हमने शल्य चिकित्सा का ज्ञान इसी ग्रंथ से प्राप्त किया था।

औषधि से की जाने वाली चिकित्सा मानुषी कहलाती है।

पारद से की जाने वाली चिकित्सा को दैवी चिकित्सा कहा जाता है। जो भयंकर रोग व्याधि उपरोक्त चिकित्साओं से दूर नहीं होते उन्हें दैवी चिकित्सा द्वारा दूर किया जाता है। मंत्र, यंत्र एवं तंत्र द्वारा की जाने वाली चिकित्सा भी दैवी चिकित्सा मानी जाती है। यन्त्र-मन्त्र आदि सब विद्युत के रूपान्तर हैं। विद्युत वज्र है। विश्व का कोई भी पदार्थ वज्र से अभेद्य नहीं है। मन्त्र चिकित्सा दैवी चिकित्सा है और विश्व में ऐसा कोई रोग नहीं है जो दैवी चिकित्सा से असाध्य हो।

□□

मन्त्रों की रचना

भाषा की उत्पत्ति कैसे हुई होगी—यह प्रश्न जितना जटिल है उतना ही रोचक भी। ऐसा नहीं है कि भाषा की उत्पत्ति के बारे में लोगों ने विचार नहीं किया—किया है और अपनी तरफ से किसी निर्णय पर भी पहुंचे हैं। किन्तु आज तक के अनुसंधानों और निष्कर्षों को देखकर ऐसा लगता है कि खोज करने वाले कुछ विशिष्ठ शब्दों को आधार मान कर अनुमान के सहारे चले हैं।

सारे विश्व की एक भाषा रही थी, आज के विस्तार को देखते हुए इस मान्यता पर सन्देह किया जाता है। फिर भी इतना माना जा सकता है कि सभ्य संसार की एक भाषा अवश्य रही थी और उस सभ्य संसार के अलावा जो दुनिया रही थी, वह असभ्य थी। सभ्य लोगों ने ही विश्वजनीयता की और वसुधैव कुटुम्बकम् की परिकल्पना की थी।

भारतीयों को पूरा विश्वास है कि सभ्य संसार का केन्द्र भारत ही रहा था। भारत के वैचारिक इतिहास को देखते हुए इतना तो निस्सन्देह कहा जा सकता है कि चिन्तन के सूक्ष्म एवं अति दूर के दिगन्तों को देखने ढूंढ़ने का अनुपम प्रयास इस धरती के पुत्रों ने किया था।

आधुनिक भाषाओं को साक्ष्य मानकर हम भाषा के मूल कारण और प्रेरणा तक नहीं पहुंच सकते, क्योंकि ये यायावर

शब्द विभिन्न देशों की यात्रा करते हुए उन भाषाओं की सदस्यता ग्रहण कर लेते हैं, और व्यक्ति के धर्म परिवर्तन की तरह स्थानीय (भौगोलिक और वातावरण जनित) तौर तरीकों में घुल मिल जाते हैं। कोई आश्चर्य नहीं प्रकृति में हो रही क्रियाओं के अनुकरण पर (सर्प-वत-फुत्कार जैसे शब्दों की तरह) विश्व की अन्य भाषाओं में भी कुछ शब्दों का आविष्कार किया गया हो और वे व्यवहार के बल पर सजीव हो उठे हों। इन शब्दों की संख्या अत्यन्त सीमित हो सकती है और इनके आधार पर समग्र भाषा के प्रारम्भिक स्तर एवं उद्गम को जान लेना सम्भव नहीं दिखता।

मैं प्रकृति से लेने और सीखने की बात से इन्कार नहीं कर रहा, किन्तु प्रकृति की प्रतिक्रिया को तो केवल स्वर चाहिये। जिन प्राणियों के पास व्यञ्जन नहीं हैं अथवा जिन प्राणियों का कण्ठ इतना मुक्त और परिमार्जित नहीं है कि व्यंजन को व्यक्त कर सकें वे भी स्वरों तक ही सीमित हैं और हर्ष या शोक के तीव्र आवेग को व्यक्त कर ही लेते हैं।

व्यक्त होना प्रकृति का गुण है, इसलिए व्यञ्जन सीधे प्रकृति से जुड़े हैं, किन्तु प्रकृति का यह विस्तार शून्य में या निरालम्ब नहीं हो रहा, जो कुछ भी होता है वह इन्द्रियों की परिसीमा में आने से पहले अत्यन्त सूक्ष्म अवस्था में हो चुकता है। दृश्य या ज्ञेयरूप में बहुत बाद में आता है और व्यञ्जन माला प्रकृति के इस विस्तार को सूक्ष्म एवं स्थूल दोनों ही स्तरों पर व्यक्त करने की क्षमता रखती है। यह अलग बात है कि हम सामान्य अवस्था में व्यञ्जनों के सूक्ष्म सम्बोध्य को ग्रहण नहीं कर पाते किन्तु भाषा के मूल को पहचानने के लिए सूक्ष्म पहलू पर विचार करना ही पड़ेगा।

हम भारतीय भाषा को नाद् से प्रारम्भ करते हैं, भाषा की

प्राप्ती के सम्बन्ध में प्राप्त उपाख्यानों में यही रहस्य समझाया गया है कि भाषा का उद्गम नाद् से है और वहां से यह असंयुक्त (प्रत्येक शब्द ध्वनि स्वतन्त्र) रूप से आती है, इस प्रवाह की गति अत्यन्त तीव्र होने से और निरन्तर बने रहने के कारण समग्ररूप में किसी विशिष्ठ अर्थ को व्यक्त करती है।

नाद् उत्पन्न होने का अर्थ है विक्षोभ, और विक्षोभ प्रकृति का धर्म है। विक्षोभ क्रिया है और प्रकृति कभी भी निष्क्रिय नहीं होती। जिनको हम कार्य या फल कहते हैं वे सब भी क्रिया ही हैं। माना आपने एक पेड़ उगाया उसमें फल लगे, आपकी दृष्टि में उस ऋतु की क्रिया सम्पूर्ण हो चुकी, किन्तु ऐसा नहीं है; उस फल को आप खायेंगे तो भी क्रिया चालू है, नहीं खायेंगे तब भी क्रिया चालू है। यही स्थिति हमारे देह और जीवन की है। हम एक क्रिया के आवर्त्त में फंस रहे हैं जिसमें प्रत्येक अणु क्रियाशील है।

भाषा के उद्गम में भी क्रिया का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कई अक्षर ऐसे हैं जो स्वयं व्यक्त रूप में क्रियाशील कम हैं और प्रेरक रूप में अधिक इसलिए शब्दों की रचना में क्रिया एवं क्रिया पदों की बहुलता रहती है।

स्वरों और व्यञ्जनों में व्यक्त रूप में अन्तर है किन्तु नादावस्था में नहीं है। हमने भाषा को डमरू निनाद अथवा वीणा की झंकार से आविष्कृत किया है। डमरू ने स्वर और व्यञ्जन दिये हैं तथा वीणा ने अनुस्वार और विसर्ग। शंकर और सरस्वती के रूप में ये प्रतीक देवता हमारे प्रश्न का उत्तर देते हैं। शिव को हम भाषा का ज्ञाता-आविष्कर्ता और उपदेष्टा मानते हैं इसीलिए हमारी भाषा में सृजन और संहार की शक्ति है। एक ही शंकर के शिव और रुद्र ये दो रूप हैं।

यदि भाषा में ऐसी दोहरी शक्ति नहीं होती तो हम इस कथा के साथ किसी दूसरे प्रतीक को जोडते। सरस्वती ज्ञान की अधिष्ठात्री है इसलिए उसकी वीणा ने अनुस्वार, विसर्ग, अनुनाद और झंकार दिये हैं। यदि सरस्वती से भाषा का आविर्भाव होता है तो निश्चय से भाषा में रुद्र भाव या संहारक शक्ति नहीं आ पाती।

हमारी आस्तिकता प्रत्येक बात के अन्त में भगवान् या भगवती प्रतीकों को गढ़ लेती है, इसे हम रूढि या हमारे चिन्तन की असमर्थता नहीं कह सकते बल्कि यह वह सत्य है जिसका साक्षात्कार भाषा कराती है या जिस साक्षात्कार के फलस्वरूप भाषा उपजती है। शब्दों के संयोजन से जैसे प्रतीक बनते हैं उनको वैसे ही नाम देने की अन्तर्दृष्टि हमारे ऋषियों को प्राप्त थी। व्यवहार में हम जैसे ईंटों को जोड़कर या लोहे को मोड़कर अपने उपयोग के लिए कई प्रकार की वस्तुएं बना लेते हैं या बनी हुई चीजों के उपयोग खोज लेते हैं, ऐसी ही बात इन प्रतीकों के आविष्कार में रही थी।

नाद के रूप में प्राप्त ध्वनि को, जो चैतन्याकाश में प्रतिध्वनित होती है बुद्धि के क्षेत्र में से गुजरना होता है। ज्ञान (अनुभव नहीं) बुद्धि का गुण है, विवेक जो बुद्धि का ही उदात्त स्तर है का संस्पर्श पाकर इच्छा मन के मान सरोवर में उतरती है। यहां तीनों गुण प्रबल रूप में रहते हैं। चैतन्य का निर्व्याज प्रकाश और गुणों की हिलोलें यहां अपना स्वरूप निर्धारित करती हैं और मन उनका उन्मोचन करता है।

भाषा के उद्गम खोजते हुए हम उनकी ध्वनि घटकों तक पहुँचते हैं जो शब्द की लघुत्तम एवं अविभाज्य इकाई है—इसे हम व्यवहार की भाषा में अक्षर कहते हैं। यों अक्षर का व्युत्पत्तिक अर्थ होता है जो क्षरता, स्रवित या स्पन्दित अतएव

विकृत नहीं होता है। यह अक्षर का मूल स्वरूप है, इस गुण के बिना शब्द, भाषा और व्यवहार तथा संसार सभी अचेतव रहते हैं। किन्तु इस अक्षर को हम लोक में क्षरणशील का प्रतीक मान लेते हैं और अक्षर क्षर का बोधक बन जाता है। खैर ! सम्प्रति हम दार्शनिक पक्ष पर विचार नहीं कर रहे।

भाषा का उद्‌भव अक्षरों से होता है, अविभाज्य ध्वनि घटक दूसरी इकाईयों से मिलाया जाता है और दो से अधिक व्यन्जनों (अपवाद रूप में तीन भी) को संयुक्त नहीं होने दिया जाता है। प्रत्येक व्यन्जन या प्रति दो के बाद अनिवार्य रूप से स्वर को जोड़ दिया जाता है। भाषा में अनेक अक्षरों से निर्मित शब्दों का व्यवहार किया जाता है ये शब्द रसायन शास्त्र की मिश्रित और संयोजन पद्धति की भान्ति चलते रहते हैं जैसे राम, रामा एवं रमणी आदि शब्दों में हम देखते हैं। मूल पदार्थों के विभिन्न अनुपातों में सम्मिश्रण करने से जैसे अनेक नये पदार्थ बनते हैं उसी प्रकार संसार में संयोजन और सम्मिश्रण से अनेक पदार्थ बनते रहते हैं।

मूल-पदार्थ की तरह भाषा का मूल भी अक्षर है इसे बीज मन्त्रों में सुरक्षित एवं आज भी उसी रूप में अवस्थित देख सकते हैं। माला मन्त्रों या मन्त्रों का जप करने से अधिक शक्ति बीज मन्त्रों का जाप करने से प्राप्त होती है। बीज मन्त्र किसी अर्थ या भाषा का अर्थ व्यक्त नहीं करते बल्कि वे सीधे शक्ति को अवतरित होने के लिए तथा उसे अभीष्ट दिशा में गतिशील होने के लिए उद्दीप्त करते हैं। वे किसी देवता से याचना करने वाले स्तोत्र नहीं हैं। स्तोत्रों में भी याचना की बात जन-सामान्य को समझाने के लिए कही जाती है, अन्यथा जिस देवता का स्तोत्र होता है उसके प्रकट होने पर कुछ विशिष्ट प्रकार की स्थितियां या सिद्धियां प्राप्त होती हैं। देवता के रूप

में कल्पितःप्रतीक शक्ति की मात्रा, कार्य विधि एवं परिणामिता का सूचक है इसके अलावा कुछ भी नहीं।

बड़े सारे स्तोत्र में एक उपाख्यान होता है या देवता के रूप में एक अलौकिक क्षमता का विवरण होता है। एक ही देवता के अनेक नाम होते हैं ये सब मूलत: एक शब्द के या शक्ति के प्रतीक के बहुआयामी पक्ष हैं जो कि बीज मन्त्रों में अत्यन्त संक्षिप्त होकर सुनिश्चित दिशा में सक्रिय होते हैं। अधिक नहीं, अनुभव के आधार पर मैं विश्वास के साथ कहता हूं कि कोई भी व्यक्ति किसी विशिष्ट बीज मन्त्र का जप करके अनुभव कर ले कि उसके जप से क्या कैसा और कितना परिवर्तन होता है।

बीजों किंवा अक्षरों के रूप में भाषा का प्रारम्भ हुआ था। यह प्रारम्भ प्रतीकों के माध्यम से भी हो सकता है और अन्त: चेतना के प्रस्फुरण से भी। सच यह है कि जब कभी हमारी अनुभूति और संचेतना का विस्तार होता है तो हम इतने विभोर और विस्मृत हो जाते हैं कि उस समय जो कुछ भी बोलते या कहते हैं वह नैसर्गिक रूप से अलौकिक हो जाता है एवं इतना पवित्र हो जाता है कि उसके अन्त: स्तल से निकलने वाली वाग्धारा गंगा की धारा की भान्ति कवित्व के कलकल से पूर्ण हो जाती है या उसके प्रवाह पथ की तरह कथात्मक हो जाती है।

ऋषियों ने आत्मसाक्षात्कार की विधि, सिद्धि और अनुभूति को शब्दों का माध्यम दिया। इसी भाषा को स्थूल का भी बोधक बना दिया—यह उनके आत्म दर्शन और वाह्य दर्शन का समन्वय परक विश्लेषण था।

व्यवहार में जो बात कहने पर उसका फल और प्रभाव हमें तत्काल ज्ञात हो जाता है मन्त्र में ऐसा क्यों नहीं हो पाता ? यह सहज जिज्ञासा हमारे मन में हो सकती है। किन्तु

स्मरण रखने योग्य तथ्य है कि भाषा का यह व्यापार स्थूल से स्थूल की क्रिया है। जिन शब्दों को या दिन भर में हम जितने शब्दों को व्यवहार में लाते हैं उनमें वास्तविक शक्ति न के बराबर रहती है, इसलिए क्रिया हमें अधिक करनी पड़ती है। मन्त्र उसी क्रिया को सूक्ष्म में हमारे मानसिक जगत् में प्रबल एवं तीव्र रूप से होने देते हैं। इसलिए शब्द अपने वास्तविक रूप में फल देने योग्य हो पाता है।

जिन लोगों की वाणी में हम विलक्षणता या प्रभावशालिता देखते हैं वह उनकी स्वयं की शक्ति है जो भाषा के माध्यम से बिखरती है, भाषा की शक्ति को प्राप्त करने के लिए तो शब्द की साधना करनी पड़ती है।

आशय यह है कि अक्षरों के रूप में आविष्कृत सूत्र स्थूल और सूक्ष्म दोनों स्तरों के प्रतीक बने। स्थूल में शब्दों की बहुलता आवश्यक थी, सूक्ष्म में अत्यन्त सीमित शब्दावली से भी काम चल सकता था। असल में सूक्ष्म स्तर अगोचर के समानान्तर ही रहता है, इसलिए उसमें शब्द मूल रूप में ही रहा करता है भाषा के रूप में नहीं। यही वह स्थल है जहां अक्षर को वर्ण संज्ञा मिलती है। वैसे वर्ण संज्ञा तात्विक दृष्टि से पश्यन्ती के क्षेत्र में आते ही हो जाती है, क्योंकि वर्ण का अर्थ दृश्य हो जाता है और पश्यन्ती में भाषा के समस्त प्रतीक दृश्य रूप में रहते हैं। (परा में नाद और उससे अतीत की स्थिति रहती है) पश्यन्ती ही वह क्षेत्र है जहां अक्षरों के संयोजन से बनने वाली प्रत्येक आकृति दर्शनीय रूप में विद्यमान है।

यहां यह प्रश्न उठ सकता है कि हम पहले अर्थ के स्तर पर सोचते हैं या शब्द के स्तर पर? सामान्य रूप में मन का विलास शब्द से ही पूर्ण होता है उसकी अनुभूति और कल्पना शब्द के ही सहारे चलती है अर्थात् अर्थ शब्द के बिना नहीं

चल पाता, और शब्द अर्थ से रहित नहीं हो सकता। निरर्थक शब्द लौकिक दृष्टि में ही हुआ करते हैं, अन्यथा असंगत शब्द हुआ करते हैं, जिनमें परस्पर विरोधी या अनेक प्रकार के कार्यों की शक्ति का सम्मिश्रण रहता है। बिच्छु के काटने पर जो वेदना होती है वह या उसका अर्थ बिना शब्द के भी समझ में आ रहा होता है, किन्तु वह अर्थ भी शब्द में समा सकता है।

कालीदास ने "वागर्थाविव सम्पृक्तौ" वाणी और अर्थ की तरह परस्पर जुड़े कह कर शब्द और अर्थ के प्रकट सम्बन्ध का संकेत किया है। शब्द के और अर्थ के क्षेत्र से आगे (वाचा अगोचर) की स्थिति में जाने पर पार्वती और परमेश्वर या परम शिव के जिस रूप का साक्षात्कार करते हैं वह भी अर्धनारीश्वर का ही होता है।

परां पश्यन्ती जैसी वृत्तियों का विस्तृत विश्लेषण यहाँ अप्रासंगिक रहेगा यहां केवल साधारण नामोल्लेख किया गया है।

शब्द सूक्ष्म और स्थूल दोनों प्रारूपों का निर्वाह करता है। जैसे अक्षर शब्द है यह क्षरण शील न होने का प्रतीक है। जो ब्रह्म या शिव की अवस्था है, किन्तु व्यवहार में हम उस शब्द को अक्षर कहते हैं जो अविभाज्य इकाई है, जिसमें किसी भी तरह का क्षरण सम्भव नहीं होता।

यह हम जान चुके हैं कि भाषा का उद्गम अक्षरों के रूप में या अविभाज्य इकाई के रूप में हुआ। प्रत्येक अक्षर का अपना रूप (वर्ण) क्षेत्र और शक्ति ग्राहकता होती है। शक्ति ग्राहकता का अर्थ यही है कि जैसे हम ने मोटर, बल्ब, हीटर जैसे पदार्थ बना लिए उनमें बिजली ही प्रकट होगी, और बिजली शक्ति के रूप में एक है, किन्तु इन विभिन्न आधारों में आवेशित होकर वह भिन्न प्रकार के कार्य करती है। भिन्न भिन्न अक्षर किंवा

वर्ण भी शक्ति के परिणामी रूपों से जुड़े हुए हैं, अर्थात् जैसे अमुक अक्षर अमुक गुण का संग्राहक है और तदाश्रित तत्त्व में इस प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है । बीज मन्त्र इसी सिद्धान्त पर रचे गये हैं और उनके निरन्तर जप करने से हमारे में ऐसी विशेषता आ जाती है, दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि बीज ऐसे साधन हैं जो हमारे शरीर में बह रही शक्ति को कार्य विशेष के लिए प्रकट होने की योग्यता और दिशा प्रदान करते हैं ।

यह संगत है कि "वर्ण" गुणात्मक जगत् का प्रतिनिधित्व करते हैं, किन्तु शब्द या भाषा के रूप में व्यवहृत शब्दावली अन्तरंग पक्ष की अपेक्षा बहिरंग को अधिक व्यक्त करती है जैसे बिजली में इलैक्ट्रान और प्रोटोन जैसे अंग ही काम करते हैं, किन्तु हमारे घरों और कारखानों में हम उसके उपयोग पर विचार करते हैं मूल आधार पर नहीं, और उपयोग का यह विस्तार सूक्ष्म शक्ति के स्थूल रूप पर फैलता है। भाषा का प्रसार भी संसार के बहिरंग विस्तार पर अधिक विचार करता है फलस्वरूप वे बीजात्मक वर्ण तन्मात्रा और तत्त्वों के स्तर पर प्रतीक बोध कराने लगते हैं ।

शब्द की बहिर्मुखी बोधकता के कारण ही हम भाषा के महत्व और शक्ति से परिचित होते हैं । यही गुण हमें मूक नहीं होने देता । प्रकृति की प्रत्येक कृति को और हमारी अनुभूति को वह शब्दों का रूप दे डालता है । किसी वस्तु को हम देख कर तुरन्त उसके नाम तक पहुंच जाते हैं । इन शब्दों में जैसा कि ऊपर पढ़ चुके हैं ये तत्त्व स्तर पर कार्य कारिणी शक्ति के आश्रित रहा करते हैं । इसलिए ये पदार्थ के गुण (तत्त्वगत तन्मात्रा) आकार, रूप, तत्त्वों को अनुपात-प्रभाव आदि

आयामों को दृष्टिगत रखते हुए क्रिया को खण्डों में व्यक्त करते हैं।

हमारा देह दो रूपों या स्तरों में विभाजित है जिन्हें करण कहते हैं। करण का अर्थ होता है साधन। तीन आयामों लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई वाला स्थूल देह बाह्य करण है जिसमें इन्द्रियां धातु और दोष हैं। इन्द्रियों के विषय हैं, कार्य हैं और सीमित शक्ति हैं, धातु हैं धातुओं के कारण मल है तथा वात, पित्त, कफ नाम के तीन दोष हैं। स्मरण रखने की बात यह है कि यह सारा समुदाय भी साधन ही है, करण ही है।

दूसरा स्तर है आभ्यन्तर शरीर जिसे अन्तःकरण कहा जाता है इसमें मन, बुद्धि और चित्त आते हैं। मन में सत्व, रज एवं तम् नामक तीन गुण हैं। बुद्धि प्रतीक बोध करती है और चित्त चैतन्य को ग्रहण करके शेष सभी करणों को चैतन्यमय बनाता है। इन तीनों की संयुक्त अवस्था को ही अन्तः करण कहते हैं। किसी भी काम के करने न करने के सम्बन्ध में जो युक्तियाँ हमारे मन में उठती हैं वे सब मन की क्रिया हैं, निर्णय बुद्धि करती है। मन के अनियन्त्रित रहने पर बुद्धि पराक्रान्त किवां कुंठित रहा करती है इसी कारण हम मूर्खतापूर्ण कार्य कर जाते हैं। पण्डित, मनीषी, प्रतिभाशाली, विद्वान, मनस्वी जैसे शब्द बुद्धि की अवस्था के सूचक हैं। ये बुद्धि के निर्मल होने पर प्राप्त होते हैं।

भाषा का अर्थ ग्रहण सम्पूर्ण रूप से अन्तःकरण में होता है और उसमें मन, बुद्धि एवं चित्त की भिन्न भिन्न क्रियाएं भी इतनी तीव्र गति से होती हैं कि हमें वे एक ही नजर आती हैं। अनुकूलता या प्रतिकूलता, सुख या दुःख जैसी वेदनीयता शुद्ध रूप से मन का क्षेत्र और विषय है। इस कल्पना को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त शब्दावली बुद्धि के क्षेत्र में जा कर प्रतीक

बोध करने लगती है और चैतन्य की चेतनता के कारण ये सब सार्थक होते हैं। इस तरह भाषा के साथ एक विस्तृत परिप्रेक्ष्य और लम्बी क्रिया परम्परा जुड़ी रहती है।

हमारी भाषा बाह्य संसार से सम्बद्ध रहती है इसी लिए मन की संवेदन शीलता तक पहुँच पाती है। किन्तु जब यही भाषा किसी अगोचर बिन्दु तक पहुंचने का माध्यम बनती है तो बुद्धि और चैतन्य के क्षेत्रों को पार करती है। जो ध्वनियां, शब्द या मन्त्र हमें ऐसे स्थल पर ले जाने की शक्ति देते हैं उन्हें हम तारक मंत्र कहते हैं।

भाषा के या वर्णों के विस्तृत परिचय के पहले हम एक उदाहरण समझ लें जिससे आगे के सूत्र समझने में सुविधा रहेगी। मान लिया किसी पूर्णिमा की रात्रि में हम चन्द्रमा का दर्शन करते हैं और विभोर हो उठते हैं। इस स्निग्ध, शीतल, भास्वर बिंव को हम कोई नाम देना चाहते हैं, अक्षरों किवा वर्णों को हम जानते हैं किन्तु उनका संयोजन हम किस प्रकार करें कि वे हमारी अनुभूति को यथार्थ प्रतीक के रूप में प्रस्तुत कर सकें—भाषा के शब्दों की रचना में यही सूत्र प्रेरक तत्त्व के रूप में काम करता है। एक ने इसे देखकर एक नाम सोचा चन्द्रमा, दूसरे ने सुधाकर, तीसरे ने निशाकर चौथे ने शीतांशु, पांचवे ने मृगांक छठे ने पियुष वर्षी तथा सातवें ने कहा औषधीश। इस प्रकार अनेक व्यक्तियों ने अनेक नाम दे डाले।

भाषागत परिभाषा में ये पर्याय हैं किन्तु एक दूसरे के समानार्थक नहीं हैं बल्कि एक ही वस्तु के बोधक हैं। इनमें प्रत्येक शब्द एक स्वतन्त्र आयाम है और ऐसे सारे आयाम मिल कर ही उस वस्तु का सम्यक एवं अविकल रूप उपस्थित कर पाते हैं और यह क्षमता केवल बीज मन्त्रों में आ पाती है, शब्द संसार में नहीं। इतने पर भी बुद्धि इन प्रतीकों को ग्रहण कर

लेती है और बोध कराती रहती है। बुद्धि की शक्ति और यथार्थ के आधार पर ही किसी भाषा या शब्द का वास्तविक बोध किया जा सकता है और ऐसी बुद्धि ही शब्दों के औचित्य और उपयोगिता का निर्वाह कर पाती है।

भाषा में रूढ़ शब्दों की अपेक्षा आख्यात (क्रियापद) अधिक हैं। ये बहुलता संसार में चल रहे प्रकृति के क्रियाशील रूप के कारण हैं।

□□

मनोकामना पूरक अलौकिक मन्त्र

हनुमान मन्त्र

ॐ हनुमानः हनुमतः राम भक्ता ह्लां ह्लां ह्लू ह्लू ह्ला ह्ला स्वाहा।

किसी भी मङ्गलवार को किसी नदी के किनारे जाकर वहां की मृतिका से हनुमान जी की मूर्ति बनाकर उनकी विधिवत् पूजा अर्चना करके उपरोक्त मन्त्र का जाप करना चाहिये। इस मंत्र का पुरश्चरण बारह लाख मन्त्र जप से होता है। मन्त्र सिद्ध होने के पश्चात् हनुमान जी साधक के वशीभूत होकर उसकी हर इच्छा पूरी करते हैं। यदि साधक किसी कठिन समय में इस मन्त्र का पन्द्रह बार उच्चारण करता है तो तुरन्त ही हनुमान जी प्रकट होकर उसकी सहायता करते हैं।

शत्रुनाशक हनुमान मन्त्र

ॐ हुं हुं क्रां रं महागाड सङ्खमुखी दोई दाड दिरना विदार भकार तेंतीस करोड देवता करंत स्तुति डही भो देव नमो लोक सन्ति हाथ कटार गनमिली लोह की असीशर मुंच कम्य पाताल पर मार महाबीर देवता, महाबीर बीताल कामरू कामाक्षा की कुटि की आज्ञा ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं हुं हुं छं छं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र को पचास हजार जप लिया जाये तो यह सिद्ध हो जाता है। साधक के शत्रुओं को कष्ट व्यापता है। यदि इस मन्त्र को कागज पर लिख कर और उस कागज को जूते के तले में लगा कर शत्रु के चित्र पर जूता मारा जाये तो शत्रु के भी वैसे ही जूते लगने लगेंगे।

श्री हनुमदष्टदशाक्षर मन्त्र

ॐ नमो भगवते आञ्जनाय महाबलाय स्वाहा।

यह अष्टदशाक्षर मन्त्र, मन्त्र महोदधि के अनुसार है। इस मन्त्र को किसी शुभ समय स्नान एवं संध्या आदि नित्य कृत्यों से निवृत होकर प्रारम्भ करना चाहिये। मूल मन्त्र का पुरश्चरण विधि से लक्षवार जप करना चाहिये। जप का दशांश हवन, हवन का दशांश मार्जन, मार्जन का दशांश तर्पण एवं तपण का दशांश या यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर हनुमान जी प्रसन्न होकर साधक को इच्छित वर दे देते हैं।

शृंखला मोचक हनुमत् मन्त्र

ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय अमूकस्य शृङ्खलां त्रोटय त्रोटय बन्ध मोक्षं कुरू कुरू स्वाहा।

इस मन्त्र के ईश्वर ऋषि, अनुष्ट्प छन्द और शृंखलामोचक श्री हनुमान देवता हैं, हम् बीज और स्वाहा शक्ति है। बन्धन से छुटने के लिए इस मन्त्र का विनियोग किया जाता है। इस मन्त्र का ध्यान इस प्रकार करे कि हनुमान जी बायें हाथ में शत्रुओं को विदीर्ण करने वाला पर्वत एवं दाहिने हाथ में विशुद्ध टंक धारण करने वाले स्वर्ण के समान कान्तिमान, कुण्डल-मण्डित वानर राज हनुमान जी का ध्यान करो।

पुरश्चरण पद्धति से एक लाख जप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है, जप के पश्चात् दशांश हवन आम्र पल्लवों से करें। यदि साधक जेल में बन्द कर दिया जाता है तो स्वयं के लिए दस हजार जप करे तो महान कारा से भी छुट सकता है। साधक यह प्रयोग अन्यों के लिए भी कर सकता है। अमुकस्य के स्थान पर साध्य व्यक्ति का नाम लिया जाये।

बन्धन से छुड़ाने वाला मन्त्र

हरि मर्कट मर्कट वाम करे परिमुञ्चित मुञ्चित शृङ्खलि काम्।

यह चौबीस अक्षरों का हनुमत् (बन्धन मोक्ष) मन्त्र है। इसकी पूजा विधि भी उपरोक्त मन्त्र के अनुसार ही है। जब कोई मनुष्य कारागार में डाल दिया जाये (निर्दोष) तब उसे चाहिये कि इस मन्त्र को अपने दाहिने हाथ की उंगली से बायें हाथ की हथेली पर लिखे और मिटा दे। यह क्रम एक सौ आठ बार करे। ऐसा सात दिन तक करने से इक्कीस दिन में कारागार से मुक्ति पा लेता है।

प्लीहा नाशक मन्त्र

ॐ यो यो हनुमन्त फलफलित धग्गधगित आयुराष परूडाह।

श्री मारुति का यह पच्चीस अक्षर का मन्त्र है। इसके दस हजार जप से इसे सिद्ध समझना चाहिये। प्लीहा (एक प्रकार की उदर ग्रंथि) रोग से पीडित व्यक्ति को सीधा लिटा कर उसके उदर पर नागर बेल के पत्ते रखने चाहियें तथा पत्तों के ऊपर आठ तह किया कपड़ा रखना चाहिये। कपड़े के ऊपर सूखे बांस के टुकड़े रखें अब बेर की लकड़ी को चकमक पत्थर

की आग से जला कर पेट पर रखें टुकड़ों को तड़ित करें यह क्रिया सात दिन करने से प्लीहा रोग ठीक हो जाता है।

हरिद्रा गणपति मन्त्र

ॐ हुं गं ग्लौं हरिद्रागणपत्ये वरद सर्वजन
हृदय स्तंभय स्तंभय स्वाहा।

इस मन्त्र के मदन ऋषि अनुष्टप छन्द तथा हरिद्रा गणनायक देवता हैं। अभीष्ट सिद्धि के लिए इसके जप का विनियोग किया जाता है। इस मन्त्र की सिद्धि चार लाख जप की बतलाई गई है। जप के पश्चात् हरिद्रा (हलदी) चूर्ण मिश्रित अक्षतों (चावलों) से दशांश हवन एवं ब्राह्मण भोजन का विधान है। नीचे लिखे मन्त्र से ध्यान करके जप किया जाता है।

पाशांक शौमोदकमेक दन्तं करैर्दधानं कनकासनस्थम्।
हारिद्राखण्ड प्रतिमं त्रिनेत्र पीतांशुकंरात्रि गणेश मीडे॥

शुक्लपक्ष की चतुर्थी को किसी क्वांरी कन्या के हाथों से हलदी पिसवा कर तथा उसका अपने शरीर पर लेप करके स्नान कर, गणपति का पूजन करना चाहिये एवं आठ सहस्र मन्त्र से तर्पण कर, घी के पूओं का एक सौ एक बार हवन करें, ब्रह्मचारियों एवं क्वांरी कन्याओं को भोजन दक्षिणा से सन्तुष्ट करें इससे शत्रुओं का मुख बन्द हो जाता है तथा जल, अग्नि, चोर एवं हिंसक जन्तुओं का भय नहीं रहता।

बन्ध्या स्त्री को चाहिये कि पुत्र प्राप्ती के लिए रजः स्नान से निवृत होकर सर्वप्रथम गणेश पूजन करे फिर एक पाव हलदी चूर्ण को गोमूत्र में पीसकर उपरोक्त मन्त्र से एक सहस्र संख्या जप से अभिमन्त्रित करे और ब्रह्मचारियों और क्वांरी कन्याओं को भोजन कराये तथा उस हलदी का पान करे तो उसका बन्ध्यत्व दूर होकर उसे गुणवान पुत्र की प्राप्ति होती है।

उच्छिष्ट गणपति मन्त्र

तन्त्र शास्त्रों में उच्छिष्ट गणपति की अपार महिमा बतलाई गई है। उनके मन्त्र नीचे लिखे अनुसार हैं—

1. ॐ हस्ति पिशाचिनि खे ठः ठः

2. ॐ हस्ति पिशाचिनि खे स्वाहा

3. गं हस्ति पिशाचिनि खे स्वाहा।

उच्छिष्ट-गणेश जी की आराधना के लिए तिथि, वार आदि का कोई नियम नहीं है, न ही व्रतोपवास की आवश्यकता है। साधक जिस कामना से इस देवता की आराधना करता है, उसकी सिद्धि अवश्य मिलती है। साधक उपरोक्त मन्त्रों में से किसी एक मन्त्र की साधना कर सकता है। इस मन्त्र का पुरश्चरण सोलह सहस्र जप का माना गया है। साधक को चाहिए कि कृष्ण पक्ष की चतुर्थी से लेकर शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तक अपनी पत्नि के साथ एक सहस्र की संख्या में जप करे।

श्वेत अर्क (सफेद आक) या लाल चन्दन की अगुंष्ट प्रमाण मूर्ति बनवा कर उसकी प्राण प्रतिष्ठा कर, देवता को नित्य मधु से स्नान कराके गुड़ पायस का नैवेद्य प्रदान करें। भोजन के पश्चात् उच्छिष्ट (जूठे) मुख ही जप करें तो मन्त्र की सिद्धि होती है।

तन्त्र ग्रंथों में उच्छिष्ट गणपति के विशेष प्रयोगों का वर्णन नीचे लिखे अनुसार है—

1. मूल मन्त्र से अपामार्ग की समिधाओं को एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करके हवन करने से साधक को सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

2. जिस मनुष्य को वशीभूत करना हो उसके नाम से यदि एक सहस्र की संख्या में जप किया जाये तो साध्य व्यक्ति का

वशीकरण हो जाता है।

3. विवाह की इच्छा वाला व्यक्ति यदि इस मन्त्र को पांच हजार जप करे तो उसे मनोनुकूल पत्नि प्राप्त होती है या पति प्राप्त होता है।

इस मन्त्र को भोजपत्र पर लाल चन्दन से लिखकर किसी तावीज में बन्द करके गले में डाल लिया जाये तो सौभाग्य की वृद्धि एवं सर्वत्र रक्षा करता है।

गणेश मन्त्र

ॐ ह्रीं ह्रूं विटपाये स्वाहा।

इस मन्त्र की सिद्धि पांच लाख मन्त्र की मानी गई है। इसे पांच माह में पूरा करना होता है। इस मन्त्र से साधक में वीर्य एवं बल की वृद्धि होती है। साधक जिस स्त्री से एक बार सहवास कर लेता है वह फिर किसी अन्य की ओर देखती भी नहीं। यह प्रयोग उन व्यक्तियों को अवश्य करना चाहिये जिनकी पत्नी अन्य पुरुषों में अनुरक्त होती हैं।

श्री चक्रेश्वरी मन्त्र

ओम ह्रीं श्रीं चक्रेश्वरी, चक्रवारूणी, चक्रधारिणी
चक्रवेणेन मम उपद्रवं हन हन शान्तिं कुरू कुरू स्वाहा।

उपरोक्त चक्रेश्वरी मन्त्र की एक माला का जप करते रहने से साधक अपने समस्त उपद्रवों को शान्त कर लेता है एवं जीवन में विविध लाभों को प्राप्त कर लेता है। इस मन्त्र को दीवाली की रात को चांदी की कलम से यक्ष कर्दम की स्याही से भोजपत्र पर लिखकर चांदी के तावीज में बन्द करके भुजा पर धारण करने से ज्वर रोग तथा भूत-प्रेत का नाश होता है तथा जहां भी साधक इसको साथ लेकर जाता है जय प्राप्त करता है।

श्री लक्ष्मी मन्त्र

ओम श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः ।

इस मन्त्र का अनुष्ठान माघ मास में गुरु+मघा योग में (जब गुरुवार को मघा नक्षत्र हो) प्रारम्भ करने का विधान है। इसका एक लक्ष जप का एक पुरश्चरण माना गया है। किसी एकान्त कमरे में पीला आसन लेकर पूर्वाभिमुख बिछा कर साधक को पीले ही वस्त्र धारण करने चाहिये। महालक्ष्मी के चित्र की षोडशोपचार से पूजा करके (पूजा में भी पीले फूलों का प्रयोग करें) भक्तामर स्तोत्र का पाठ करें एवं पीली माला से मन्त्र की दश माला का नित्य जप करें तो लक्ष्मी प्राप्ति के के योग बनते हैं।

श्री सरस्वती मन्त्र

ओम ह्रीं ऐं ह्रीं ओम सरस्वत्यै नमः।

किसी शुभ मुहूर्त में इस मन्त्र का जप प्रारम्भ करके सवा लाख जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। साधक को चाहिये कि वह पूर्वाभिमुख होकर सफेद वस्त्र धारण करके सफेद आसन पर विराजमान हो सफेद चन्दन की माला से जप करे। सामने सरस्वती देवी का चित्र रखकर उनका षोडशोपचार से पूजन करे एवं सरस्वती स्तोत्र का पाठ करे। सिद्ध मन्त्र से ब्राह्मी घृत को अभिमन्त्रित करके खाने से सरस्वती की कृपा मिलती है।

कर्ण पिशाचिनी मन्त्र

ओम कर्ण पिशाचिनी महादेवी रतिप्रिये स्वप्न
कामेश्वरी पद्मावती त्रैलोक्य वार्ता कथय कथय स्वाहा।

कई बार आप लोगों को शायद देखने का अवसर प्राप्त हुआ हो कि कोई व्यक्ति किसी भी व्यक्ति को देखकर उसके परिवार की स्थिति, मन में विचारे प्रश्न, या खोये व्यक्तियों का पता बतला देता है। ऐसे व्यक्तियों के पास निम्न कोटि की आत्मायें रहा करती हैं। ये वर्तमान एवं भूत का हाल पूर्णरूपेण सही-सही बतला देते हैं किन्तु भविष्य को बताने की क्षमता इनमें नहीं रहा करती। ये आत्मायें वायवीय स्वरूप में विचरण करती हैं जिसके कारण इनके लिए स्थान-भेद का कोई महत्व नहीं रहता। क्षणमात्र में दूर-प्रदेश से कोई वस्तु ला देना या विश्व के किसी भी प्रान्त में रहने वाले व्यक्ति या वस्तु के बारे में सही जानकारी दे देना इनका मामूली काम है।

जो व्यक्ति इस प्रकार की साधनाएं कर लेते हैं वे भी अपने आप को ज्योतिषी कहते हैं, किन्तु भविष्य इनकी पकड़ से परे रहता है। चमत्कार प्रदर्शन के लिए इस मन्त्र की साधना की जा सकती है। ऐसी निम्न कोटि की साधना का अंत बुरा ही होता है। साधक की मृत्यु बड़ी कष्ट साध्य हुआ करती है जिन्हें लोक सिद्धि प्राप्त करनी हो संसार में पुजना हो, चमत्कार दिखलाना हो उन्हें यह साधना करनी चाहिए।

प्रारम्भ में साधक को कानों में, स्वप्न में सुनाई पड़ता है फिर जैसे-जैसे साधना बढ़ती रहती है तो जाग्रत अवस्था में ही प्रश्नों के उत्तर मिलने लग जाते हैं। कर्ण पिशाचिनी के दो प्रयोग दे रहा हूं दोनों ही अनभूत हैं। पहला सफल न हो तो दूसरा कर लेना चाहिए। दोनों में से एक निश्चित रूप से सिद्ध होगा। अपने इष्ट और गुरु का ध्यान एवं विश्वास करते हुए मंत्र जप में रत रहना चाहिए। कर्ण पिशाचिनी के अनेक मंत्र हैं और इनकी साधन प्रणाली भी अनेक हैं। किन्तु किसी एक का जप करने से ही सफलता मिल जाया करती है।

इस मंत्र की साधना करने के लिए किसी एकान्त कमरे का चयन करना चाहिए। साधना स्थल को गोबर से लीप कर पवित्र कर लेना चाहिए। एक दीपक एवं अगरबत्ती जलाकर पूर्व की ओर मुख करके मंत्र का जप करना चाहिए। जिस दिन जप प्रारम्भ करें उस दिन उपवास रखना पड़ता है। साधना स्थल पर ही भूमि शयन किया जाना चाहिए। नित्य क्वांरी कन्या को खीर का भोजन कराना चाहिए तथा उन्हें चूड़ी, चुनरी एवं दक्षिणा देकर प्रसन्न करना चाहिए। यह साधना नौ दिन तक चलती है अंतिम दिनों में शराब, खाण्ड एवं गुग्गुल का हवन करें तो मंत्र सिद्ध हो जाता है। जब कोई प्रश्न करे तो मंत्र को सात बार जपकर दाहिना हाथ दाहिने कान पर रखें तो कर्ण पिशाचिनी प्रश्न का उत्तर साधक को कान में बतला देती है।

दूसरा मन्त्र

**ओम ह्रीं श्रीं क्लीं नृ ठं ठं नमो देव पुत्रि
स्वर्ग निवासिनि सर्व नरनारि मुख वार्तालि
वार्ता कथय कथय सप्त समुद्रान दर्शय दर्शय
ओं ह्रीं श्रीं क्लीं नीं ठ ठं हुं फट् स्वाहा**

इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए आम के पत्ते पर रोली या गुलाल बिछाकर रात्रि के समय एक सौ आठ बार लिखे (लिखे और मिटा दे, ये क्रम १०८ बार करे) कलम अनार की हो तथा लिखते समय मन में बोलता भी रहे। अंत में लिखे मंत्र का षोडशोपचार या पंचोपचार से पूजन करे, और मंत्र की ग्यारह माला कर जप करे तथा उस मंत्र लिखे पट्टे को सिरहाने रख कर सो जाये। यह क्रिया इक्कीस दिन करने से मंत्र सिद्ध हो जाता है और कर्णपिशाचिनी प्रश्नों का उत्तर देने लगती है।

प्रयोग सम्पूर्ण हो जाने के पश्चात् इसे निरन्तर करने से प्रश्नों के उत्तर मिलते रहते हैं। जब प्रश्नों का उत्तर पूछना हो तो प्रथम पवित्र होकर यह मंत्र जप लेना चाहिए।

यदि यही मंत्र होली-दीवाली या ग्रहण काल से प्रारम्भ कर, के खाट पर ही पांच सौ बार जप ले तब भी कर्ण पिशाचिनी प्रसन्न होकर प्रश्नों के उत्तर देने लगती है।

धन प्राप्ती के प्रभावशाली मन्त्र.

ओम् ऐं ह्रीं श्रीं श्रियै नमो भगवति मम समृद्धौ ज्वल मां सर्व सम्पदं देहि देहि ममालक्ष्मीं नाशय नाशय हुँ फट् स्वाहा।

चन्द्र अथवा सूर्य ग्रहण में इस मन्त्र से गौघृत की एक माला की आहुति देने से यह सिद्ध हुआ माना जाता है। दैनिक जप प्रयोग करने से पूर्व इसकी सिद्धि आवश्यक है। सिद्ध करने के पश्चात नित्य प्रति एक, तीन या पांच माला (यथा शक्ति) जप करते रहना चाहिये। किन्तु समय, जगह एवं गिनती का एक होना भी अनिवार्य है। इस प्रकार जप करने से साधक धन-सम्पति प्राप्त करके उसकी वृद्धि कर लेता है।

दूसरा मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं ठं ठं ठं नमो भगवते मम सर्व कार्याणि साधय साधत मां रक्ष रक्ष शीघ्रं मां धनिनं कुरू कुरू हुं फट् श्रियं देहि प्रज्ञां देहि ममापत्ति निवारय निवारय स्वाहा।

किसी शिव लिङ्ग पर उपरोक्त मन्त्र से सात विल्व पत्र, चढ़ाने के पश्चात मन्त्र की न्यूनतम एक माला का जप अवश्य करना चाहिये। जप घर के एकान्त कोने में या शिवालय में

कहीं भी किया जा सकता है। अधिक अच्छा रहे इस प्रयोग को श्रावण मास में प्रारम्भ करे। इस प्रकार नित्य जप करने से धन प्राप्ती के साधन जुड़ते हैं, सब कार्यों में सफलता प्राप्त होती है एवं समस्त विपत्तियों का नाश हो जाता है।

किसी भी मन्त्र की सिद्धि में ध्यान एवं भावना का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। मन्त्र को जपते समय साधक को चाहिये कि वह अपने इष्ट देवता का ध्यान करे एवं यह भावना करे कि धन प्राप्ती के साधनों (व्यापार-नौकरी या अन्य) में जो अवरोध उपस्थित हो गये थे वह सब मिट गये हैं। सभी प्रतिकूल स्थितियां अनुकूलता में परिवर्तित हो गई हैं जो शत्रु थे वे मित्र हो गये हैं एवं भविष्य में सर्वदा सहयोग देंगे ऐसा वचन दे रहे हैं। मेरे सौम्य व्यवहार से मेरे ग्राहक-अधिकारी गण सन्तुष्ट हैं, मुझे अज्ञात स्रोतों से लक्ष्मी की प्राप्ती हो रही है इत्यादि।

यह भावना जितनी दृढ़ होगी मन्त्र भी उतना ही प्रभाव शाली होकर कार्य सम्पन्न करेगा। यह भावना सभी मन्त्रों में करनी चाहिए जिस प्रकार का मन्त्र हो उसी प्रकार की भावना साधक को करनी होती है।

तीसरा मन्त्र

ॐ श्रां ह्रीं क्रौं श्रीं श्रियै नमः ममालक्ष्मीं नाशय नाशय मामृणोत्तीर्णं कुरू कुरू सम्पदं वर्धय वर्धय स्वाहा।

इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए सिन्दूर, कुशा की जड़ और विल्व पंचांग (लकड़ी+जड़+फूल+फल एवं पत्र) का चूर्ण करके एक चन्दन की चौकी पर बिछाकर अनार की कलम से मन्त्र को लिखे, मन्त्र का पंचोपचार पूजन करे, नित्य अग्नि में घृत से सात आहुतियाँ दे एवं नित्य २२८ मंत्रों का जप करे।

यह क्रिया ४३ दिन करनी होती है चवालीसवें दिन १९६ मंत्र जपे और दशाँश हवन एक हजार आहुतियों से करे। इस प्रकार यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। इस साधना से व्यक्ति ऋण से छुटकारा पाकर समृद्धि को प्राप्त होता है।

वर प्राप्ति के मन्त्र

आजकल प्रायः ऐसा देखा जा रहा है कि माता-पिता अपनी पुत्री के विवाह की समस्या को सुलझा नहीं पाते, परेशान हो जाते हैं। इच्छानुसार वर नहीं मिलता, उन माता-पिता को चाहिये कि वे स्वयं परम्परा के अनुसार अपनी कन्या से नीचे लिखे किसी मंत्र का जप करावें, सफलता अवश्य मिलेगी।

१. हे गौरि शङ्कराधांगि ! यथा त्वं शंकर प्रिया
तथा मां कुरू कल्याणि ! कान्तकान्तां सुदुर्लभां।

इस मंत्र की साधना करने के लिए किसी शुभ मुहूर्त में साधिका अपने सामने भगवती गौरी का अथवा भगवान् आशुतोष शङ्कर जी को वर माला पहनाती हुई पार्वती जी का चित्र स्थापित कर ले। चित्र की पूजा पंचोपचार से करे (पंचोपचार में स्नान, धूप, दीप, नैवेद्य एवं नमस्कार माने गये हैं) फिर मंत्र का कम से कम पांच माला का जप करे। यही क्रम इक्तीस या इक्कीस दिन करने से उत्तम वर की प्राप्ती होती है।

२. ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय सहस्त्रकिरणाय मम वांच्छितं देहि देहि स्वाहा।

वर प्राप्ति का यह दूसरा मंत्र है। इसकी साधना करने के लिए साधिका प्रातः कृतादि से निवृत होकर, स्नान करके स्वयं को पवित्र कर ले और बिना कुछ खाये-पिये पूर्वाभिमुख हो

(जिधर से सूर्य निकलता है उस ओर मुख करके) भगवान् सूर्य नारायण को नमस्कार करे और पहले से तैयार किया जल जो कि तांबे के पात्र में हो उसमें रक्त चन्दन, रक्त पुष्प, अक्षत (१०८ बार धुले बिना टूटे चावल) मिले हों, नीचे लिखा मंत्र बोलकर अर्घ्य दे (जल चढ़ाये) यही क्रिया चार बार करके धूप दीप जलाये, गुड़ का नैवेद्य (प्रशाद) चढ़ाये। बायें पैर को ऊपर उठाकर अर्थात मात्र दाहिने पैर पर खड़े होकर (यदि सम्भव न हो तो दोनों पैरों पर भी खड़ा रहा जा सकता है, किन्तु एक पाद खड़ा होना अच्छा है) मंत्र की एक माला का जप करे। जप के पश्चात् भगवान् भास्कर से अपना मनोरथ "हे मार्तण्ड ! मुझे मनानुसार पति की प्राप्ति कराओ" कहे। ऐसा एक मास करने से मनोनुकूल वर प्राप्त होता है। रविवार को व्रत रखकर खीर का भोजन करे।

३. ॐ देवेन्द्रणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्रप्रिय भामिनि।
विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्र लाभं च देहि मे॥

यह वर प्रद तीसरा मंत्र है। जो साधिका इस मंत्र की साधना करना चाहे उसे सर्व प्रथम तुलसी के पौधे की पूजा करनी चाहिये। तुलसी के उसी पौधे की पूजा के पश्चात् बारह बार परिक्रमा कर पूर्व की ओर मुख करके भगवान् सूर्य नारायण को बांयें हाथ से जल एवं दाहिने हाथ से दूध का अर्घ्य दे। अर्घ्य देते समय उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करना चाहिये। पहले वाले मंत्र में अर्घ्य चार बार दिया गया था इसमें बारह बार अर्घ्य देने का विधान है। अर्घ्य देने के पश्चात् तुलसी की माला से मंत्र का (एक माला का) जप करे। इसी प्रकार परिक्रमा, अर्घ्यदान एवं मंत्र जप करने से शीघ्र ही मनोरथ की सिद्धि हो जाती है।

काक वन्ध्या दोष निवृति के लिए

बन्ध्या कई प्रकार की होती हैं। जिस औरत को एक बार ही प्रसव हो, पुनः वह गर्भ धारण न करे तो काक वन्ध्या कही जाती है। ऐसी अवस्था में उसे पुनः संतान प्राप्ति के लिए तन्त्रोक्त नीचे लिखा प्रयोग करना चाहिये।

जब पुष्य नक्षत्र एवं रविवार का योग हो अर्थात् रविपुष्य वाले दिन विधि विधान से अश्वगन्धा की जड़ लाकर उसे साये में सुखाकर चूर्ण कर लें, नित्य सवा तोले चूर्ण दूध के (भैंस का दूध) साथ सेवन करें। इसके साथ ही नीचे लिखे मंत्र की एक माला नित्य जपें। स्त्री यदि मंत्र जप न कर सके तो उसका पति या कोई अन्य मंत्र को उस औरत को सम्मुख बिठाकर सुनादे। यदि कोई दूसरा मंत्र को कहे तो मम के स्थान पर स्त्री का नाम लिया जाये।

ॐ नमः शक्ति रूपाय मम गृहे पुत्रं कुरू कुरू स्वाहा।

दूसरा पुत्र प्रद मंत्र निम्नलिखित है :—

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं पुत्रं कुरू कुरू स्वाहा।

यह भगवान् शङ्कर का द्वादशाक्षरी मंत्र है, भगवती पार्वती की प्रार्थना पर महादेव ने इसे प्रकट किया था। जो साधक इस का जप करे उसे चाहिये कि किसी आम्र वृक्ष की जड़ के समीप अर्थात् आम के पेड़ के नीचे पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख हो एकाग्र मन से उपरोक्त मंत्र का जप करे। जप कम से कम एक माला का अवश्य हो। अधिक जप कर सके तो शीघ्र लाभ की आशा हो सकती है। साधक जब तक साधनारत रहे तब तक नित्य शिवार्चन, पूजन एवं दर्शन किसी शिव मन्दिर में जाकर करता रहे। ऐसा करने से पुत्र की प्राप्ती होती है।

पुत्र उत्पत्ति कारक यन्त्र

किसी शुभ दिन और शुभ नक्षत्र में इस यन्त्र को भोजपत्र पर गोरोचन से लिखना चाहिए। इसके पश्चात् इसे गूगल की धूप देकर चांदी के तावीज़ में भरकर बन्ध्या स्त्री के गले में बांधना चाहिए। जिन स्त्रियों के लड़का न होता हो या होकर मर जाता हो उनके इस यन्त्र के प्रभाव से लड़का अवश्य पैदा होता है और जीवित रहता है।

शंकर मातु शंकर पितु

४०	४२	४	५
१	३	४८	४३
४६	४७	५	४
२	७	४७	४४

शंकर राखै चारों दीप

पापी के जारू दीप

कैसे बरन लक्ष्मी पति

वशीकरण का गोपनीय प्रयोग

वशीकरण का अर्थ है किसी अन्य व्यक्ति को अपने अनुकूल करना। जैसा आप चाहें वैसा ही वह करे तथा आपकी आज्ञा का पालन करे। कभी-कभी ऐसे अवसर भी आते हैं कि आपका कोई सम्बन्धी बुरी संगति में पड़ गया है। दुश्चरित्र लोगों के प्रभाव में आकर अपनी मान प्रतिष्ठा आचार-विचार को नष्ट कर रहा है। आपके सत्परामर्श का उस पर कोई प्रभाव नहीं

पड़ता। आपकी बात नहीं मानता। या यह भी कह सकते हैं कि वह उनके वशीकरण में आ गया है। आपकी पत्नी, बहन या अन्य किसी आत्मीय जन पर इसी प्रकार से किन्हीं अवांछित तत्वों ने वशीकरण कर लिया है और वे आपकी बात नहीं मानते। इसी तरह की कितनी ही अन्य परिस्थितियाँ भी मनुष्य के जीवन में आती हैं जब उसे यह जरूरत महसूस होती है कि किसी प्रकार की अलौकिक शक्ति द्वारा वशीकरण मन्त्र-तन्त्र का प्रयोग करके अपनी नैतिक इच्छा की पूर्ति की जाय।

वशीकरण क्रिया में आपने देखा कि दो पक्ष होते हैं एक तो वह जो वशीकरण करता है और दूसरा वह जो वशीभूत होता है। इनमें प्रथम पक्ष की आत्मशक्ति सदा दूसरे पक्ष की आत्मशक्ति से प्रबल होती है। इसका अर्थ यह हुआ कि वशीकरण मन्त्र तन्त्र का प्रयोग करने वाले व्यक्ति को अपनी मानसिक तथा आध्यात्मिक अथवा आत्मिक शक्ति को मजबूत बनाना बहुत जरूरी होता है तभी वह दूसरों पर अपनी इच्छा शक्ति का प्रभाव डाल सकता है।

आत्मिक शक्ति को बढ़ाने के साधनों में प्रथम "मन्त्र जप" है। मंत्र जप करने से देवी देवता तक वश में हो जाते हैं। जिस देवी देवता का मन्त्र जप किया जाता है वह जप पूर्ण होने पर सिद्ध हो जाता है और इष्ट देवता साक्षात् या स्वप्न में दर्शन देकर अभीष्ट कार्य की सिद्धि का वरदान देता है। इसी को देवी देवता को वश में करना कहा जाता है। मन्त्र जप के साथ-साथ इष्ट देव या इष्टदेवी की मूर्ति या चित्र को सामने रखकर विधि-विधान से पूजा अनुष्ठान करने से भी वे प्रसन्न होते हैं और साधक की इच्छाओं की पूर्ति करते हैं।

किसी मानव या मानवी पर वशीकरण प्रयोग करना तो देवी देवताओं को वशीभूत करने से अपेक्षाकृत सरल है। मन्त्र

एक प्रकार से इष्टदेव का नाम ही होता है। जिस मनुष्य या स्त्री पर वशीकरण प्रयोग करना हो उसका नाम जानना आवश्यक है। उसके साथ ॐ तथा वशीकरण बीज अक्षर लगा कर मन्त्र बना लिया जाता है। यह ध्यान रखना जरूरी है कि आपका उद्देश्य अनैतिक नहीं होना चाहिए। जिस स्त्री या पुरुष को वशीभूत करना हो या अपने अनुकूल करना हो उसका चित्र या फोटो उपलब्ध हो तो उसे सामने रखकर प्रयोग करना चाहिए। फोटो या चित्र उपलब्ध न हो तो एक कोरे कागज पर उसका नाम लिखकर सामने रख लेना चाहिये और अन्तर में उसके स्वरूप का ध्यान करके प्रयोग करना चाहिये।

तीसरी चीज। उसका पहना हुआ कोई वस्त्र या वस्त्र का टुकड़ा प्राप्त हो सके तो प्रयोग में सफलता जल्दी मिलने की सम्भावनायें बढ़ जाती हैं। किसी वस्त्र को, वस्त्र के टुकड़े को उसके हाथ या शरीर के किसी भाग से स्पर्श कराने से भी काम चल सकता है। अथवा उस व्यक्ति के पैरों के नीचे की धूल मिल जाय तो थोड़ी सी इकट्ठी कर लीजिए। जिस मार्ग से वह व्यक्ति आता जाता है, वहां पर पैरों के निशान जिस मिट्टी पर पड़ें उस मिट्टी को इकट्ठा करके ले आइये। यदि उसका मार्ग पक्के फर्श, सीमेन्ट का चिकना है तो भी थोड़े बहुत रजकण तो प्राप्त किये ही जा सकते हैं। रूमाल से फर्श को साफ करके उनको कागज में बांधकर ले आईये। मिट्टी के बरतन बनाने वाले को कुम्हार कहते हैं। वह जिस घूमने वाले पहिये पर बर्तन बनाता है उसको 'चाक' कहते हैं। चाक पर वह गीली मिट्टी रखकर घुमाता है और उस मिट्टी से मनचाहे बर्तन बनाता जाता है। किसी कुम्हार से आप बात कर लीजियेगा कि आपको किसी पूजा के लिए कुछ मिट्टी की

जरूरत है। थोड़े बहुत पैसे लेकर वह राजी हो जायेगा। एक से बात न बने तो दूसरे कुम्हार से बात करना।

किसी शनिवार को या अमावस्या को या सूर्यग्रहण अथवा चन्द्रग्रहण वाले दिन, होली, दिवाली या शिवरात्रि के दिन उससे आप किलो दो किलो गीली मिट्टी (चाक पर रखी हुई मिट्टी में से ही) ले आइये। इतना ध्यान रहे कि आपके घर से कुम्हार के घर तक मार्ग में कोई आपको टोके नहीं। बहुत से व्यक्तियों की आदत होती है बिला वजह पूछने की कि भाई साहब कहां चले, किधर चले आदि-आदि। मामूली कुशल मंगल तक बात रहे तब तो कोई हर्ज नहीं है, लेकिन प्रश्न हो जाय कि कहां जा रहे हो तो आप वापिस आ जाईये और घर से दुवारा प्रस्थान कीजिये। मिट्टी को किसी पोलीथीन या प्लास्टिक के थैले में रख कर फिर कपड़े के थैले में रखकर एक तरह से छुपा कर ही लाईये। ध्यान रहे कि जब तक कुम्हार का घर दिखाई दे तब तक आप पीछे मुड़कर भी नहीं देखें। घर लाकर उस मिट्टी को परिवार के अन्य लोगों से छिपाकर किसी सुरक्षित स्थान पर रख दीजिये।

मध्य रात्रि के समय जब सब सो जायं और एकान्त शान्त वातावरण हो तब आप उस मिट्टी से एक मानव मूर्ति का निर्माण कीजियेगा। जिस व्यक्ति पर आपने वशीकरण प्रयोग करना है वह पुरुष है तो पुरुष की मूर्ति बनाइये और यदि वह स्त्री है तो स्त्री की मूर्ति बनाइये। उसको लाल रंग के वस्त्र पहना कर पूरा शृंगार कीजिये। पुरुष को सफेद या पीले रंग के कपड़े, जैसे आपका अभीष्ट व्यक्ति पहनता है, वह छोटे-छोटे कपड़े से लपेट दीजिये और स्त्री है तो साड़ी ब्लाउज जैसे गुड़िया को पहनाये जाते हैं और काजल बिन्दी सिन्दूर एकाध नकली आभूषण पहना कर एक पीतल की थाली में स्थापित

कर दीजिये। अगर आपने उस व्यक्ति के पैरों के नीचे की धूल इकट्ठी की है तो उसको चाक वाली मिट्टी में मिला दीजिये और यदि उस व्यक्ति का कोई वस्त्र ग्रापको मिल गया है तो उसे या उसके कुछ भाग को मूर्ति को पहना दीजिये या पास में रख दीजिये यह जरूरी नहीं है कि मिट्टी की मूर्ति सुन्दर सुघड ही बने। जैसी भी ग्रनगढ़ आपसे बन सके बना लीजिए। परन्तु पुतला ऐसा ग्रवश्य बने जो बिना किसी सहारे के परात आदि में खड़ा रह सके। पुतले की टांगें मोटी बनाने से वह खड़ा रह सकेगा। उसकी छाती पर एक कागज पर या भोजपत्र पर निम्नलिखित मन्त्र लिखकर वस्त्रों के नीचे चिपका दीजिये। मान लीजिए जिस व्यक्ति को आप वशीभूत करना चाहते हैं उसका नाम हेमलता है तो मन्त्र इस प्रकार बनेगा।

"**ॐ क्लीं हेमलता मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा**"

ग्रौर यदि उस व्यक्ति का नाम मूलचन्द है तो मन्त्र इस प्रकार बनेगा—"**ॐ क्लीं मूलचन्द मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा**"

यदि आप किसी अन्य व्यक्ति के लिए यह प्रयोग कर रहे हैं। उदाहरण स्वरूप शान्ती देवी का पति रूपकिशोर अपनी पत्नी से विमुख हो गया है और किसी अन्य स्त्री की ओर आकृष्ट हो गया है तो इसमें वशीकरण और उच्चाटन दोनों प्रयोग करने होंगे। यदि शान्तीदेवी स्वयं यह प्रयोग करती है तो वशीकरण मन्त्र इस प्रकार बनेगा—**ॐ क्लीं मम पति रूपकिशोर मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा**" और यदि कोई अन्य व्यक्ति यह प्रयोग करता है तो मन्त्र इस प्रकार बनेगा—"**ॐ क्लीं रूपकिशोर शान्तिदेवी वश्यं कुरु कुरु स्वाहा**"। मान लीजिये किसी की पत्नी या प्रेमिका रेखादेवी उससे विमुख हो गई है रुष्ट हो गई है सम्बन्ध विच्छेद तलाक़ आदि की आशंका प्रतीत हो रही है तो स्त्री आकृति की छाती पर जो मन्त्र

उसके पति द्वारा चिपकाया जायेगा वह इस प्रकार लिखा जायेगा—"**ॐ क्लीं मम पत्नी रेखा देवी मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा**" उपरोक्त उदाहरणों से आशा है आपको स्पष्ट हो गया होगा कि भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में वशीकरण मन्त्र किस प्रकार बनाया जाता है।

जब उच्चाटन प्रयोग भी साथ-साथ करना हो तो जिससे उच्चाटन कराना हो उसकी भी एक मिट्टी की मूर्ति बनानी होती है यह मिट्टी भी वही होती है जो उपरोक्त मूर्ति के लिए प्रयोग की गई है। अन्तर यही है कि इसको लोहे की परात या बर्तन में रखा जाता है और इसमें या तो सेई का कांटा या गूलर की लकड़ी की चार अंगुल लम्बी खूंटी मध्य भाग में छाती पेट के आस-पास घुसेड़ देते हैं फिर उसको काले वस्त्रों से ढक दिया जाता है। उपरोक्त प्रकार से बनाई गई मूर्ति या मूर्तियों को या तो धूप में रखकर या किसी प्रकार से गरमी पहुंचाकर सुखाने के लिए २-४ दिन इसी प्रकार रखी रहने देना चाहिए। उच्चाटन के लिए मन्त्र बनाने का नियम यह है कि जिन दो व्यक्तियों का आपस में उच्चाटन मतभेद वैराग्य कराना अभीष्ट हो तो दोनों के नाम लगाकर मन्त्र बनेगा। इसे तीसरा आदमी जपेगा या प्रयोग करेगा। यदि आप चाहते हैं कि आपकी ओर से किसी का मन फिर जाय तो उस व्यक्ति का नाम लगाकर मन्त्र बनाया जायेगा।

"**ओम ऐं यं रूपकिशोर हेमलता उच्चाटनाय फट स्वाहा**" इसमें रूपकिशोर और हेमलता का उच्चाटन अभीष्ट है। अपने से उच्चाटन कराना है तो "**ओम ऐं यं मम ओर हेमलता उच्चाटनाय फट स्वाहा**" अथवा यदि आपका नाम रामलाल है तो "**ॐ ऐं यं रामलाल हेमलता उच्चाटनाय फट स्वाहा**" इस प्रकार मन्त्र बनाकर हेमलता के पुतले की छाती पर चिपका

दीजिये। उसे काले वस्त्र पहना दीजिये। पुरुष आकृति है तो भी काले ही वस्त्र पहनाईये। सेई का कांटा या गूलर की लकड़ी की खूंटी उसमें खोंस दीजिए। छाती के भाग में कील की तरह गाढ़ दीजियेगा।

वशीकरण प्रयोग है या दोनों तरह के साथ-साथ हैं तो भी साधन की रीति एक ही प्रकार की है। एक पीतल की थाली में रखे हुए पुतले पर वशीकरण तन्त्र करना है। किसी भी शनिवार या मंगलवार की रात से या अमावस्या की रात से साधना आरम्भ की जा सकती है। इस तरह की साधनायें गुप्त रूप से की जाती हैं तभी सफलता मिलती है। अपने तन्त्र प्रयोग के बारे में किसी को मालूम न होने दें तभी ठीक रहेगा। जहां साधना की जाय वह एकान्त स्थान हो। घर में और लोग हों तो अपनी साधना का अभिप्राय प्रकट न करें। बाहर कहीं एकान्त स्थान मिल जाय तो भी साधना का अभिप्राय किसी अन्य को न बतायें। रात के बारह बजे से तीन बजे तक का समय इस कार्य के लिए सर्वोत्तम रहता है। घर में कमरे का द्वार अन्दर से बन्द कर लीजिये। खाना अधिक न खायें सूक्ष्म भोजन करें ताकि आलस्य न आये। भोजन से पहले मौसम के अनुसार ठण्डे या गरम पानी से स्नान करना भी आवश्यक तो नहीं है परन्तु अच्छा रहता है। स्नान न कर सकें तो हाथ मुंह धो लें। मध्यरात्रि के समय कमरे के अन्दर अपने समस्त वस्त्र उतार कर अलग रख दें और बिल्कुल नग्न होकर आसन पर पूर्व की ओर या उत्तर की ओर मुख करके बैठ जायं यदि बिल्कुल नग्न बैठने में संकोच हो तो लंगोट बांध सकते हैं। स्त्रियों को केवल सिर उघाड़कर साधना करना काफी है। पश्चिम की ओर मुख करके भी बैठा जा सकता है परन्तु दक्षिण की ओर मुख करके न बैठें। आसन कैसा भी हो

परन्तु लाल रंग का हो तो ठीक रहता है। माला भी लाल रंग की ही होनी चाहिए। घी का दीपक पुतले वाली थाली के बांई तरफ जला कर रखें। धूपवत्ती जलायें और एक मिट्टी के बर्तन में गुलाल व लोवान भी जलावें। एक बर्तन में कुछ मिठाई किशमिश मेवा वगैरा, दूसरे में खुशबू वाले फूल, इत्र पान के पत्ते साबत सुपारी सुगन्धित तेल सिन्दूर का जल इलायची लौंग सजा कर रखें। एक अन्य बर्तन में दूध दही घी शहद मिलाकर रख लें। यह सब पूजा का सामान पहले से ही प्रबन्ध करके रख लेना चाहिये।

सबसे पहले स्त्री के पुतले को आप दूध, दही, घी, शहद मिले हुए द्रव से स्नान कराईये यानी उस द्रव को आप ऊपर से डाल दीजिए। वह पीतल की परात में बिखर जायेगा। किसी कपड़े से पुतले को साफ कर दीजिए फिर उसे कपड़े के सुन्दर वस्त्रों से सजा दीजिए, काजल सिन्दूर तेल इत्र वगैरा लगा दीजिए, फूल माला पहना दीजिए या फूल चढ़ा दीजिए। मिठाई मेवा वगैरा मुख से स्पर्श कराके सामने रख दीजिए और फिर पान सुपारी इलायची भी मुख से स्पर्श कराकर सामने रख दें। इसके बाद जो मन्त्र बताया गया है उसका जप करें। दृष्टि पुतले पर या फोटो पर या उसके स्वरूप के ध्यान में स्थिर रखें। माला है तो पच्चीस माला कम से कम नित्य करें अथवा गिनती नहीं रखनी है तो ३ बजे तक जितनी संख्या जप की हो जाय करते रहें। दूसरे दिन स्नान कराने के स्थान पर मधुपर्क को पैरों से स्पर्श भर करा देते हैं। फूल नये ताजा चढ़ाये जाते हैं। पान का बीड़ा बना हुआ हो तो ठीक है नहीं तो अलग-अलग पान सुपारी इलायची अर्पण कर देते हैं। फूल की माला या गजरा मिल जाय तो सर्वोत्तम होता है। इस प्रकार आठवें दिन मन्त्र तथा साधन पूरा हो जाता है। यदि

आप उस व्यक्ति से मिलते रहते हैं तो मिलने पर अनुकूल व्यवहार करेगा। मिलने का साधन नहीं है तो किसी प्रकार साधन बनाना होगा। पुतले पर लगे हुए काजल सिन्दूर भभूत धूप लोवान की राख माथे पर लगाकर सामने जायेंगे तो अनुकूल व्यवहार पायेंगे। यदि पत्र पर यह सब लगाकर अपने फोटो के साथ भेजेंगे तब भी प्रभाव पड़ेगा। यदि उस व्यक्ति से किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं है तो सिद्धि में कठोर साधना करनी पड़ती है आठ की बजाय १५, २९ या ४० दिन तक भी साधना करनी पड़ती है। तब कोई देवी शक्ति अशरीरी अलौकिक सुन्दरी दर्शन देकर कार्य में सहायक होने का आश्वासन देती है।

वातावरण में बहुत सी बुरी आत्मायें भूत प्रेत योनि की विचरती रहती हैं और रात के उस एकान्त वातावरण में आपकी पूजा की वस्तुओं से आकृष्ट होकर आ भी सकती हैं। आप भयभीत न हों तो उनसे अपने कार्य में सहायता करने का वचन लेकर उनको पूजा निवेदन करने का आश्वासन दे सकते हैं। ये आत्मायें नित्य या अमावस्या की रात को नियमित पूजा की मांग करती हैं। इसके देने में तो कोई हर्ज नहीं है परन्तु आप कहीं उनके वश में न हो जायं इसी की आशंका रहती है। तरह-तरह के सुन्दर रूप धारण कर यह लुभाती हैं और आपने यदि कामवश संसर्ग कर लिया तो यह अपनी प्रेत योनि में ले जाती हैं। इसलिए सावधान रहना। अपने आसन के चारों ओर गंगा जल से छींटे मारकर भैरव मन्त्र से रक्षा करके बैठना। "**ॐ ह्रीं बटुकाय आपद् उद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं ॐ नमः शिवायः** इस मन्त्र को ७ बार पढ़कर आचमन करना और चारों ओर जल छिड़क कर पूजा आरम्भ करने से इस प्रकार की आशंका नहीं रहेगी। इस प्रकार

की आत्मायें दिखाई भी देंगी तो भी तुमको स्पर्श नहीं कर सकेंगी। इस मन्त्र को पढ़कर जल के छींटे दोगे तो अदृश्य हो जायेंगी। हां यदि अपनी पूजा के बदले तुम्हारी सहायता का वचन दें तो तुम चाहो तो स्वीकार कर सकते हो। फिर जीवन भर वह नियम पालन करते रहना होगा।

यदि किसी पुरुष को वशीभूत करना है तो पूजा की सामग्री में काजल सिन्दूर आदि जनानी चीजें नहीं होतीं। बाकी सब बातें वैसे ही की जाती हैं। स्नान जल से ही छींटे मारकर करा दिया जाता है इत्र फुलेल के स्थान पर केवल फूल से ही काम चल जाता है।

यदि उच्चाटन का प्रयोग साथ-साथ या अलग से करना हो तो राई व उड़द के दाने मन्त्र जप करते समय उस पुतले पर फेंके जाते हैं। उच्चाटन मन्त्र का जाप भी १०-११ हजार तो कम से कम अवश्य करना चाहिये। साथ-साथ दोनों प्रयोग करो तो पहले वशीकरण वाला साधन पूरा करके बाद में उच्चाटन के लिए कम से कम आधा घण्टा समय अवश्य देना चाहिए। उच्चाटन वाले पुतले को उल्टा रखना चाहिए यानी पीठ सामने करके मुख को पीछे करके रखना चाहिए।

प्रयोग में जोत जगाने का भी आयोजन किया जाना ठीक रहता है। एक छोटे मिट्टी के सकोरे में या लोहे की प्लेट या चद्दर के टुकड़े पर जोत जलाना चाहिए। उसके लिए रुई को घी या वनस्पति में भिगोकर रख दें। उसके चारों तरफ नारियल के सूखे गोले के टुकड़े घी में भिगोकर सजा दें। आहुति मन्त्र बोलकर स्वाहा के साथ घी से दें। रुई में माचिस से अग्नि प्रज्वलित करने के थोड़ी देर बाद ज्योति पूरी तरह प्रचण्ड हो जायेगी। उसकी पूजा रोली चावल फूल धूप बताशे मिश्री डालकर करें और उच्चाटन मन्त्र की आहुति में तेल

राई गूगल लोबान काले उड़द गूलर की लकड़ी का प्रयोग अधिक करें। ज्योति जब तक जले, जलती रहने दें। दीपक पूरे समय तक जलायें। मन्त्र जप करते रहें और ध्यान पुतले की मूर्ति पर ही केन्द्रित रखें। प्रयोग जितना मन लगाकर एकाग्रचित्त से किया जायेगा उतना ही शीघ्र सफल होगा। पूजा समाप्त होने पर दीपक बुझा दें, धूपबत्ती बुझा दें और पुतले वाली थाली परात आदि को किसी लाल वस्त्र से ढककर रख दें और वहीं जमीन पर या दूसरे स्थान में विस्तर पर सो जायें। हो सकता है स्वप्न में अभीष्ट व्यक्ति या अन्य दैवी अलौकिक शक्ति किसी रूप में आपको कोई आदेश, सूचना या संकेत या आश्वासन दे। उसका जहां तक सम्भव हो उचित पालन करें।

समस्त नेत्र रोगों के नाश के लिए चक्षुष्मती विद्या

हमारे प्राचीन ग्रन्थों, वेदों तथा पुराणों आदि में बहुत सी ऐसी विद्याओं तथा मंत्र तंत्र आदि का वर्णन है जिनसे मनुष्य के अनेक कष्टों का निवारण हो सकता है। अथर्ववेद में इस प्रकार के सैकड़ों प्रयोग बताए गए हैं। इन्हीं ग्रंथों में एक चाक्षुषोपनिषद है जिसमें दी गई चक्षुष्मती विद्या के नियम पूर्वक पाठ करने से समस्त नेत्र रोगों का नाश हो जाता है। चक्षुष्मती विद्या वास्तव में सूर्य भगवान की उपासना है। इस उपासना से सूर्य प्रसन्न होकर भक्त के नेत्र रोग को नष्ट कर देते हैं।

चक्षुष्मती विद्या के चमत्कार का एक अनुभवपूर्ण प्रयोग, पाठकों के लाभार्थ दिया जा रहा है। यह प्रयोग प्रसिद्ध धार्मिक पत्रिका कल्याण के जनवरी १९७९ के अंक (सूर्यांक) में प्रकाशित हुआ था। लेखक के विवरण के अनुसार राजपीपल। (गुजरात)

के प्रसिद्ध डाक्टर श्रीनरहरि भाई को सन् १९४० में Detatchment of Retina नामक भयंकर नेत्र रोग हुआ। इस रोग में आंख का पर्दा फट जाता है एवं ज्योति आंशिक रूप में या सर्वांश में चली जाती है। सर्जनों के प्रयत्न असफल रहने पर डाक्टर साहब अत्यन्त निराश हो गए। उक्त डाक्टर साहब के घर पर प्रातः स्मरणीय पूज्य महात्मा पुरुष श्रीरङ्ग अवधूत महाराज आया करते थे। ये महात्मा ईश्वर का दर्शन किये हुए पवित्र सिद्ध अवतारी पुरुष माने जाते थे। डाक्टर साहब की प्रार्थना पर पूज्य श्री अवधूत जी महाराज ने उन्हें प्रसाद विधि सहित 'चक्षुष्मती विद्या' प्रदान की। इस विद्या का विधि पूर्वक अनुष्ठान करने से डाक्टर साहब को नेत्र ज्योति प्राप्त हुई। उसके बाद उन्होंने कई वर्षों तक जनसेवा की तथा उनकी दृष्टि-शक्ति अब भी बनी हुई है। डाक्टर साहब कहते हैं कि इस चक्षुष्मती विद्या के प्रभाव से आज मेरी नेत्र-ज्योति है, अन्यथा मैं कब का अंधा हो गया था। उन्होंने इस विद्या की प्रतियां छपवाकर निःशुल्क प्रसाद के रूप में जनसमुदाय को वितरित की हैं। श्रद्धा एवं धैर्य के साथ विधिपूर्वक इस विद्या का प्रयोग करने से नेत्र के अनेकविध रोग सर्वांश में दूर हो सकते हैं।

पूज्य श्री अवधूतजी द्वारा बतायी गयी चक्षुष्मती विद्या का पाठ एवं इसके प्रयोग की विधि नीचे दी जा रही है।

प्रयोग विधि—प्रातः शौच आदि से निवृत्त होकर स्नान-सन्ध्या-वन्दन के बाद पूजा स्थान पर बैठिये और आचमन, प्राणायाम करने के बाद नेत्र रोग की निवृत्ति के लिए चक्षुष्मती-विद्या के जप का संकल्प कीजिए। फिर गन्ध-पुष्पादि से सूर्यदेव का पूजन कीजिए। पूजा-द्रव्य के अभाव में मानसोपचार से पूजन कीजिए। इस प्रकार भगवान् सूर्य की पूजा करने के बाद

एक कांस्यधातु की थाली या अन्य किसी चौड़े मुख वाले कांस्य पात्र में शुद्ध जल भरकर उसे ऐसी जगह पर रखिये, जिससे उस पात्र के जल में सूर्य देवता का प्रतिबिम्ब दीखता रहे। नेत्र रोगी साधक को उस पात्र के सामने पूर्वाभिमुख बैठकर पात्र के जल के भीतर सूर्य-प्रतिबिम्ब की ओर दृष्टि रखकर भावनायुक्त अर्थानुसन्धान के साथ दस, अट्ठाईस या एक सौ आठ पाठ करना चाहिए। यदि नित्य इतने पाठ के लिए समय न मिले तो प्रतिदिन भले ही दस बार पाठ किया जाय, परंतु रविवार के दिन अट्ठाईस या एक सौ आठ पाठ करने का प्रयत्न अवश्य किया जाय। यदि प्रारम्भ में नेत्र सूर्य-प्रतिविम्व की ओर देखना सहन न कर सकें तो घृत-दीप की ज्योति की ओर देखते हुए पाठ कर सकते हैं। (नेत्रों के सक्षम होने पर जल में प्रतिबिम्बित सूर्य-बिम्व की ओर देखते हुए ही पाठ करना चाहिए)। पाठ पूर्ण होने पर जप श्री सूर्यनारायण को अर्पित करके नमस्कार कीजिए। फिर उस कांस्यपात्र स्थित शुद्ध जल से अधखुले नेत्र में धीरे-धीरे छिड़काव कीजिए। जल छिड़कने के बाद दोनों आँखें पाँच मिनट तक बंद रखिए। तत्पश्चात् सभी विधियां पूर्ण कर अपने दैनिक कर्म कीजिए।

पाठ के उपरान्त नित्य— '**ॐ वर्चोदा असि वर्चो मे देहि स्वाहा**'—इस मंत्र को बोलते हुए गोघृत की दस आहुतियां अग्नि में देनी चाहिए। रविवार के दिन बीस आहुतियां आवश्यक हैं। यदि आहुति न दे सकें तो कोई आपत्ति नहीं, परंतु यदि पाठ के साथ नित्य यज्ञाहुति भी दी जा सके तो उत्तम है।

चक्षुष्मतीविद्या का पाठ—

अस्याश्चक्षुष्मतीविद्याया ब्रह्मा ऋषिः। गायत्रीच्छन्दः। श्रीसूर्यनारायणो देवता। ॐ बीजम्। नमः शक्तिः। स्वाहा

कीकलम्। चक्षूरोगनिवृत्तये जपे विनियोगः।

ॐचक्षुश्चक्षुश्चक्षुः तेजः स्थिरो भव। माँ पाहि पाहि। त्वरितं चक्षूरोगान् प्रशमय प्रशमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय, यथाहमन्धो न स्यां तथा कल्पय कल्पय, कृपया कल्याणं कुरु कुरु। मम यानि यानि पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुःप्रतिरोधक-दुष्कृतानि तानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय। ॐ नमश्चक्षुस्ते-जोदात्रे दिव्यभास्कराय। ॐ नमः करुणाकरायामृताय। ॐ नमो भगवते श्रीसूर्यायाक्षितेजसे नमः। ॐ खेचराय नमः। ॐमहासेनाय नमः। ॐ तमसे नमः। ॐ रजसे नमः। ॐ सत्वाय नमः। ॐ असतो मा सद्गमय। ॐ तमसो मा ज्योतिर्गमय। ॐ मृत्योर्माअमृतं गमय। उष्णो भगवाञ्छुचिरूपः। हंसो भगवाञ्छुचिरप्रतिरूपः।

ॐ विश्वरूपं घृणिनं जातवेदसं
हिरण्मयं ज्योतीरूपंतपन्तम्।
सहस्ररश्मि शतधा वर्तमानः
पुरः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः॥

ॐ नमो भगवते श्रीसूर्यायादित्यायाऽक्षितेजसेऽहो वाहिनि वाहिनि स्वाहा॥

ॐ वयः सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं
प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः।
अप ध्वान्तमूर्णु हि पूर्धि-
चक्षुर्मु मुग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान्॥

ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः। ॐ पुष्करेक्षणाय नमः।
ॐ कमलेक्षणाय नमः। ॐ विश्वरूपाय नम।
ॐ श्री महाविष्णवे नमः। ॐ सूर्यनारायणाय नमः॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

जैसा कि हम ऊपर बता चुके हैं कि इस पाठ के अर्थ को

अच्छी तरह समझकर और उस अर्थ का मनन करते हुए पाठ करने से ही पूर्ण लाभ मिलता है अतः हम यहाँ पर साधकों की सुविधा के लिए इस संस्कृत पाठ का अर्थ भी लिख रहे हैं।

अर्थ—हे चक्षुके अभिमानी सूर्यदेव ! आप चक्षु में चक्षु के तेज रूप से स्थिर हो जायं। मेरी रक्षा करें, रक्षा करें। मेरी आँख के रोगों का शीघ्र शमन करें, शमन करें। मुझे अपना सुवर्ण-जैसा तेज दिखला दें, दिखला दें। जिससे मैं अंधा न होऊं, कृपया वैसे ही उपाय करें, उपाय करें। मेरा कल्याण करें, कल्याण करें। दर्शन शक्ति का अवरोध करने वाले मेरे पूर्वजन्मार्जित जितने भी पाप हैं, सबको जड़ से उखाड़ दें, जड़ से उखाड़ दें। ॐ (सच्चिदानन्द स्वरूप) नेत्रों को तेज प्रदान करने वाले दिव्य स्वरूप भगवान् भास्कर को नमस्कार है। ॐ करुणाकर अमृत स्वरूप को नमस्कार है। ॐ भगवान् सूर्य को नमस्कार है। ॐ नेत्रों के प्रकाश भगवान् सूर्यदेव को नमस्कार है। ॐ आकाश बिहारी को नमस्कार है। परम श्रेष्ठस्वरूप को नमस्कार है। ॐ (सबमें क्रिया-शक्ति उत्पन्न करने वाले) रजोगुण रूप भगवान् सूर्य को नमस्कार है। (अंधकार को सर्वथा अपने भीतर लीन करने वाले) तमोगुण के आश्रयभूत भगवान् सूर्य को नमस्कार है। हे भगवान् ! आप मुझको असत् से सत् की ओर ले चलिए। अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलिए। मृत्यु से अमृत की ओर ले चलिए। उष्ण-स्वरूप भगवान् सूर्य शुचिरूप हैं। हंसस्वरूप भगवान् सूर्य शुचि तथा अप्रति रूप हैं—उनके तेजोमय स्वरूप की समता करने वाला कोई भी नहीं है।

जो सच्चिदानंद स्वरूप हैं, सम्पूर्ण विश्व जिनका रूप है, जो किरणों में सुशोभित एवं जातवेदा (भूत आदि तीनों कालों की बात जानने वाले) हैं, जो ज्योति-स्वरूप, हिरण्मय (सुवर्ण के

समान कान्तिमान्) पुरुष के रूप में तप रहे हैं, इस सम्पूर्ण विश्व के जो एकमात्र उत्पत्ति स्थान हैं, उन प्रचण्ड प्रताप वाले भगवान् सूर्य को हम नमस्कार करते हैं। वे सूर्यदेव समस्त प्रजाओं (प्राणियों) के समक्ष (उनके कल्याणार्थ) उदित हो रहे हैं।

षड्विध ऐश्वर्य सम्पन्न भगवान् आदित्य को नमस्कार है। उनकी प्रभा दिन का भार वहन करने वाली है, हम उन भगवान् के लिए उत्तम आहुति देते हैं। जिन्हें मेधा अत्यन्त प्रिय है, वे ऋषिगण उत्तम पंखों वाले पक्षी के रूप में भगवान् सूर्य के पास गये और इस प्रकार प्रार्थना करने लगे—'भगवन्! इस अंधकार को छिपा दीजिये, हमारे नेत्रों को प्रकाश से पूर्ण कीजिए तथा तमोमय बंधन में बंधे हुए से हम सब प्राणियों को अपना दिव्य प्रकाश देकर मुक्त कीजिए। पुण्डरीकाक्ष को नमस्कार है। पुष्करेक्षण को नमस्कार है। निर्मल नेत्रों वाले—अमलेक्षण को नमस्कार है। कमलेक्षण को नमस्कार है। विश्वरूप को नमस्कार है। महाविष्णु को नमस्कार है।'

इस (ऊपर वर्णित) चक्षुष्मती विद्या के द्वारा आराधना किये जाने पर प्रसन्न होकर भगवान् श्री सूर्यनारायण संसार के सभी नेत्र-पीड़ितों के कष्ट को दूर करके उन्हें पूर्ण दृष्टि प्रदान करें—यही प्रार्थना है।

विद्या गोपाल मन्त्र

कृष्ण कृष्ण महाकृष्ण सर्वज्ञ त्वं प्रसीद मे।
रमा रमण विश्वेश विद्यामाशु प्रयच्छ मे॥

न्यास, ध्यानादि करके तुलसी की माला से उपरोक्त मंत्र का एक लाख की संख्या में जप करने से विद्या की प्राप्ति होती है। श्री कृष्ण की मूर्ति अथवा चित्र की जप से पूर्व पूजा करने का विधान है।

महालक्ष्मी उपासना

देवी महालक्ष्मी की उपासना सभी धर्मावलम्वी समान रूप से करते हैं। महालक्ष्मी की उपासना मात्र अर्थ प्राप्ती के लिए ही करने का विधान नहीं है बल्कि अन्य देवी-देवताओं की भान्ति इनकी उपासना से भी चारों कर्मों का फल मिलता है। भारत में विभिन्न प्रदेशों में महालक्ष्मी की उपासना विभिन्न नामों से होती है।

लक्ष्मी देवी को कमल के आसन पर आसीन दिखाया जाता है, उनके एक हाथ में कमल रहता है और दूसरे हाथ से रुपये बखेरती रहती हैं। कमल दलदल में कीचड़ में पैदा होता है फिर भी वह देवताओं के आसन एवं शोभा बढ़ाने के काम में आता है। लक्ष्मी उपासना से भी हमें यही प्रेरणा मिलती है। आलसी और निकम्मे लोगों को लक्ष्मी नहीं मिला करती। लक्ष्मी का प्राकट्य समुद्र से हुआ है, समुद्र का भगवान् विष्णु ने मंथन किया था। समुद्र मंथन का अर्थ है परिश्रम, उद्योग। लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए हमें निश्चित रूप से कर्मयोग का सहारा लेना पड़ेगा।

धन की वृद्धि-दरिद्रता के नाश, ऋण मोचन आदि समस्याओं के लिए नीचे चार मंत्र दिये जा रहे हैं। साधक इनमें से किसी भी एक मन्त्र को उपयोग में लाकर लाभान्वित हो सकते हैं।

१. ॐ श्रां ह्रीं क्रौं श्रीं श्रियै नमः ममालक्ष्मीं नाशय नाशय मामृणोत्तीर्ण कुरु कुरु सम्पदं वर्धय वर्धय स्वाहा

किसी चन्दन की चौकी, पट्टे पर उपरोक्त मंत्र को कुशा की जड़, सिन्दूर और विल्व वृक्ष के पंचाग (लकड़ी, जड़, फल, पत्ते, बीज) की स्याही बनाकर अनार अथवा चमेली की कलम से लिखना चाहिए। इसकी पंचोपचार से पूजा करके मंत्र जप

करना चाहिए। मन्त्र जपने का क्रम इस प्रकार रहेगा कि २२८ मंत्र नित्य ४३ दिन तक, ४४वें दिन १९६ मंत्र का जप करना चाहिए। यह संख्या १०००० हो जायेगी, अष्टांग हवन सामग्री से एक हजार आहुतियों का हवन करने से सफलता मिलती है।

२. ऊं ह्रीं श्रीं ठं ठं ठं नमो भगवते मम सर्व कार्याणि साधय साधय मां रक्ष रक्ष शीघ्रं मां धनिनं कुरु कुरु हुं फट् श्रियं देहि प्रज्ञां देहि ममापत्ति निवारय निवारय स्वाहा

श्रावण के महीने में उपरोक्त मंत्र से शिव लिंग पर सात विल्व पत्र चढ़ाने का विधान है। शिवलिंग मंदिर में स्थापित हो अथवा पार्थिव घर में भी यह क्रिया सम्पन्न की जा सकती है। इसके पश्चात् मंत्र का कम से कम एक माला जप अवश्य करना चाहिए। कार्य सिद्धि तक इसका जप करने का विधान है। शास्त्रकारों ने इस मंत्र को सर्व कार्यसाधक, विपत्ति नाशक एवं धन की प्राप्ति कराने वाला बतलाया है।

३. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सं सिद्धिदां साधय साधय स्वाहा

जब ग्रहण काल हो तब इस मत्र को सिद्ध किया जाता है। सूर्य अथवा चन्द्र ग्रहण के समय इस मंत्र का शुभारम्भ करना चाहिए। ग्रहण काल में ही घी, दूर्वा, काली मिर्च, जटा मांसी से एक माला का हवन करने से मंत्र जाग्रित हो जाता है, इसके पश्चात् नित्य इक्कीस माला का जप करना चाहिए। यही क्रिया एक महीने करने से लक्ष्मी कृपा प्राप्त होती है।

४. ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रियं नमो भगवति मम समृद्धौ ज्वल माँ सर्व सम्पदं देहि देहि ममालक्ष्मीं नाशय नाशय हुं फट् स्वाहा

इस मंत्र के अनुष्ठान का आरम्भ भी ग्रहण काल में एक

माला के यज्ञ आहुति के साथ करना चाहिए। इसमें पलाश की समाधी एवं घी की ही आहूतियां दी जाती हैं। यज्ञ के पश्चात नित्य एक माला का जप तब तक करना चाहिये जब तक संख्या सवा लाख न हो जाये।

किसी भी मंत्र का जप करते समय अपने इष्ट देवता का ध्यान करके यह भावना करना कि हमें धन प्राप्ति हो रही है, विपत्तियां हमारा पीछा छोड़ रही हैं। हम समृद्धशाली हो रहे हैं, हमारी सभी समस्याओं का समाधान हो रहा है, शीघ्र सिद्धि दिलाने में सहायक होता है।

□□

महा शक्तिशाली मन्त्र-यन्त्र

आठवीं शताब्दी में भारत में आदि गुरु शंकराचार्य एक महान तांत्रिक हुए हैं जिन्होंने एक ग्रन्थ की रचना की थी। यह दुर्लभ ग्रन्थ आजकल भी तांत्रिक ग्रन्थों में उच्च स्थान रखता है। इस ग्रन्थ में एक सौ श्लोक हैं जिनका जप करने से साधक की कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है जिससे उसके समस्त लौकिक तथा पारलौकिक कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

इस अद्भुत ग्रन्थ में से हम यहां कुछ श्लोक और उनसे सम्बन्धित यन्त्र दे रहे हैं। यन्त्र वास्तव में मन्त्र का चित्रमय प्रतीक है और इस आकृति में उस देवता का वास होता है जिसकी साधक पूजा करता है। मन्त्र के जप के साथ ही यन्त्र पर ध्यान जमाए रखने से साधना में मन केन्द्रित हो जाता है जिससे आराध्य देवता प्रसन्न होकर साधक के कार्य को शीघ्र ही सिद्ध कर देते हैं।

अपने वाँछित कार्य के लिए चुने हुए मन्त्र (श्लोक) का कुछ दिनों तक श्रद्धा के साथ जप करते रहना चाहिए तथा यन्त्र को अपने सामने रखना चाहिए तो साधक की मनोकामना अवश्य पूरी होगी इसमें कोई सन्देह नहीं है।

यन्त्र बनाने के लिए सोना, चांदी और तांवा केवल यही तीन धातुएं प्रयोग की जाती हैं। अन्य कोई धातु ग्राह्य नहीं है। साधक अपनी आर्थिक सामर्थ्य के अनुसार इनमें से किसी एक धातु के पत्तर पर सुनार से यन्त्र खुदवा सकता है। परन्तु जहां ऐसी सुविधा न हो वहां भोजपत्र पर काली स्याही से साधक स्वयं यह यन्त्र लिख ले। इसका भी प्रभाव वैसा ही होता है जैसा धातु पत्र पर अंकित कराए हुए यन्त्र का।

सर्व मनोकामनाएं पूर्ति हेतु

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं ।
न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि ।।
अतस्त्वामाराध्यां हरिहरविरञ्च्यादिभिरपि ।
प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति ।।

इस मंत्र का प्रतिदिन १००० की संख्या में जप करें। जप बारह दिन तक चलना चाहिए। नीचे लिखे यंत्र को तांबे या चांदी के पत्तर पर सुनार से खुदवा लें। मंत्र का जप करते समय यंत्र दृष्टि के सामने रहना चाहिए। इस मंत्र से साधक की समस्त इच्छाएं और आवश्यकताएं पूरी हो जाती हैं।
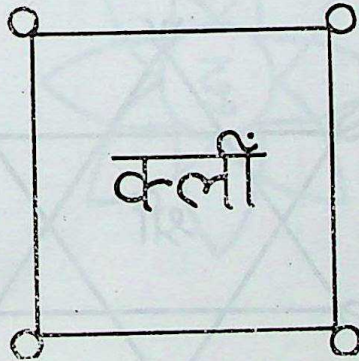
विद्या एवं धन प्राप्ति के लिए

अविद्यानामन्तस्तिमिर-मिहिर-द्वीप-नगरी ।
जडानां चैतन्यस्तवकमकरन्दस्रुतिझरी ॥
दरिद्राणां चिन्तामणिगुणनिका जन्मजलधौ ।
निमग्नानां दंष्ट्रा मुररिपुवराहस्य भवती ॥

इस मंत्र का प्रतिदिन १००० की संख्या में जप करें। जप ५१ दिन तक चलना चाहिए। नीचे लिखे यंत्र को चांदी के पत्तर पर खुदवा लें। मंत्र का जप करते समय यंत्र दृष्टि के सामने रहना चाहिए। इस मंत्र के प्रभाव से साधक को अनेक प्रकार की विद्याओं की प्राप्ति होती है तथा यश और कीर्ति में वृद्धि होती है।
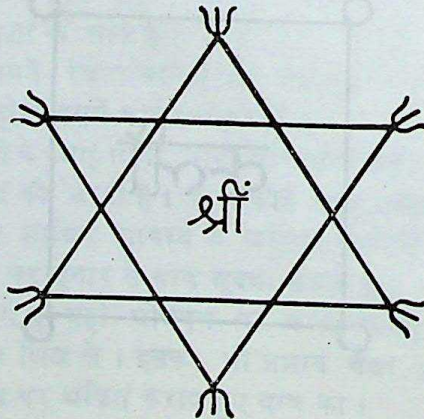
निर्धनता से मुक्ति के लिए

त्वदन्यः पाणिभ्यामभयवरदो दैवतगण—
स्त्वमेका नैवासि प्रकटितवराभीत्यभिनया ।
भयात्त्रातुं दातुं फलमपि च वान्छासमधिकं,
शरण्ये लोकानां तव हि चरणावेव निपुणौ ॥

इस मंत्र की प्रतिदिन १० मालाएं ३६ दिन तक जपो। निम्न-लिखित यंत्र को तांबे के पत्तर पर खुदवा कर जप करते समय दृष्टि के सामने रखें। इस मंत्र से साधक को धन की प्राप्ति होती है।
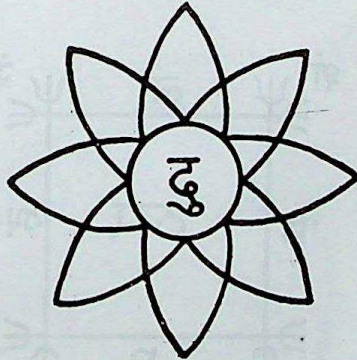
सर्वजन वशीकरण मंत्र

हरिस्त्वामाराध्य प्रणतजनसौभाग्यजननीं
पुरा नारी भूत्वा पुररिपुमपि क्षोभमनयत् ।
स्मरोऽपि त्वां नत्वा रतिनयनलेह्येन वपुषा
मुनीनामप्यन्तः प्रभवति हि मोहाय महताम् ॥

इस मंत्र का प्रतिदिन १००० की संख्या में १७ दिन तक जप करें। नीचे लिखे यंत्र को तांबे के पत्तर पर खुदवा कर जप करते समय दृष्टि के सामने रखें। इस मंत्र का साधक जिस स्थान या सभा में जाता है वहां उपस्थित सभी लोग उसकी इच्छानुसार कार्य करने लगते हैं।
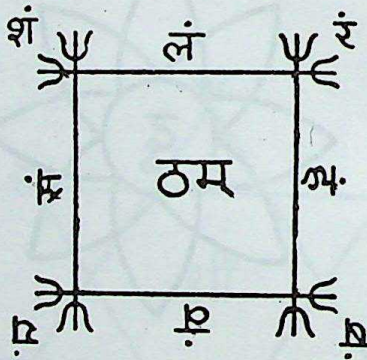
विद्या दाता मंत्र

शरज्ज्योत्स्नाशुभ्रां शशियुतजटाजूटमुकुटां ।
वर-त्रासत्राण-स्फटिकघटिका-पुस्तककराम् ॥
सकृन्नत्वा न त्वां कथमिव सतां सन्निदधते ।
मधु-क्षीर-द्राक्षा-मधुरि-मधुरीणा भणितयः ॥

इस मंत्र का प्रतिदिन १००० की संख्या में ४१ दिन तक जप करें। निम्नलिखित यंत्र को पानी में हल्दी घोलकर उसकी स्याही से भोजपत्र पर लिख लें। मंत्र का जप करते समय यंत्र को दृष्टि के सामने रखें। इस साधना से साधक की स्मरण शक्ति बढ़ती है, पढ़ा हुआ याद होता है तथा वो अनेक प्रकार की विद्याओं तथा भाषाओं का ज्ञान अर्जित करता चला जाता है।
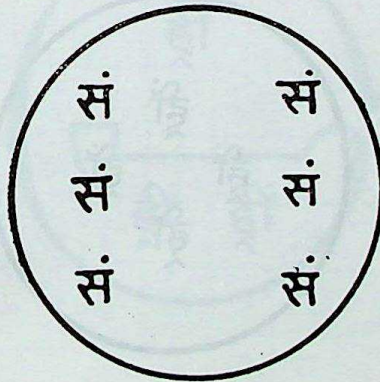
हाकिम को वश में करने का मंत्र

मुखं बिन्दुं कृत्वा कुचयुगमधस्तस्य तदधो ।
हरार्धं ध्यायेद्यो हरमहिषि ते मन्मथकलां ॥
स सद्यः संक्षोभं नयति वनिता इत्यतिलघु ।
त्रिलोकीमप्याशु भ्रमयति रवीन्दुस्तनयुगां ॥

इस मंत्र का प्रतिदिन १००० की संख्या में २५ दिन तक जप करें। निम्नलिखित यंत्र को चांदी के पत्तर पर खुदवा कर मंत्र का जप करते समय दृष्टि के सामने रखें। यह एक महाशक्तिशाली वशीकरण मंत्र है जिसके द्वारा राजा, हाकिम, स्त्री, पुरुष यहां तक कि किसी को भी वश में किया जा सकता है।
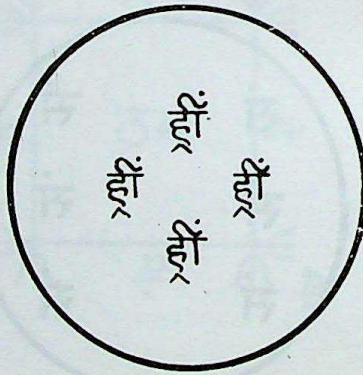
शत्रुओं को पराजित करने का मंत्र

तडिल्लेखातन्वीं तपनशशिवैश्वानरमयीं ।
निषण्णां षण्णामप्युपरि कमलानां तव कलां ॥
महापद्माटव्यां मृदितमलमायेन मनसा ।
महान्तः पश्यन्तो दधति परमाह्लादलहरीम् ॥

इस मंत्र का प्रतिदिन १००० की संख्या में ११ दिन तक जप करें। निम्नलिखित यंत्र को चांदी या तांबे के पत्तर पर खुदवा लें। मंत्र का जप करते समय दृष्टि इस यंत्र पर रहनी चाहिए। इस साधना के प्रभाव से मनुष्य अपने विरोधियों और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है और सबका हृदय जीत लेता है।
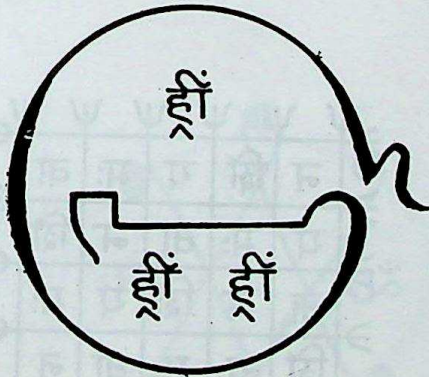
बुरे ग्रहों का प्रभाव नष्ट करने के लिए

जगत्सूते धाता हरिरवति रुद्रः क्षपयते ।
तिरस्कुर्वन्नेतत्स्वमपि वपुरीशस्तिरयति ॥
सदापूर्वः सर्वं तदिदमनुगृह्णाति च शिव—
स्तवाज्ञामालम्व्य क्षणचलितयोर्भ्रूलतिकयोः ॥

इस मंत्र का १००० की संख्या में प्रतिदिन २१ दिन तक जप **करना** चाहिए । निम्न यंत्र को अपनी सामर्थ्य के अनुसार चांदी **या तांबे** के पत्तर पर खुदवा लें । मंत्र का जप करते समय यह **यंत्र** दृष्टि के सामने रखें । इस मंत्र के जप से क्रुद्ध देवताओं तथा ग्रहों के प्रकोप की शांति होती है तथा सर्व विपत्तियों का नाश होता है ।

न	शि	य	मः	वा
य	मः	वा	न	शि
वा	न	शि	य	मः
शि	य	मः	वा	न
मः	वा	न	शि	य
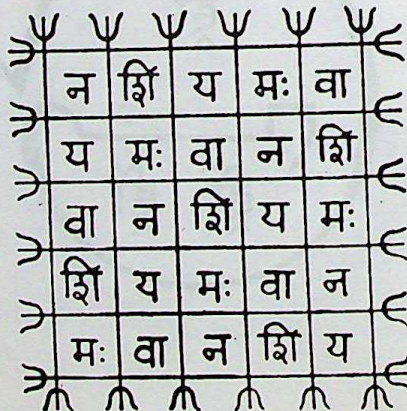
व्यापार में उन्नति के लिए मंत्र

शिवः शक्तिः कामः क्षितिरथ रविः शीतकिरणः
स्मरो हंसः शक्रस्तदनु च परामारहरयः ।
अमी हृल्लेखाभिस्तिसृभिरवसानेषु घटिता
भजन्ते वर्णास्ते तव जननि नामावयवताम् ।।

इस मंत्र का प्रतिदिन १००० की संख्या में ४५ दिन तक जप करें। निम्न यंत्र को सोने अथवा चांदी के पत्तर पर सुनार से खुदवा लें। मंत्र का जप करते समय दृष्टि यंत्र पर रहनी चाहिए। इसकी साधना से व्यापार, दुकान आदि में अच्छी आमदनी होने लगती है, नौकरी में मालिक तनख्वाह बढ़ा देता है।
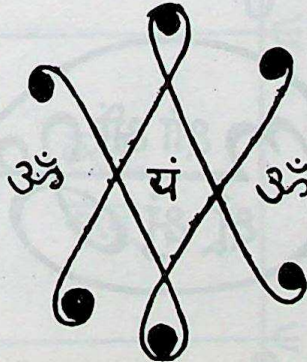
भयंकर बीमारियों से मुक्ति हेतु

मनस्त्वं व्योम त्वं मरुदसि मरुत्सारथिरसि
त्वमापस्त्वं भूमिस्त्वयि परिणतायां न हि परम् ।
त्वमेव स्वात्मानं परिणमयितुं विश्ववपुषा
चिदानन्दाकारं शिवयुवति भावेन बिभृषे ॥

इस मंत्र का १००० की संख्या में प्रतिदिन ४५ दिन तक जप करना चाहिए । निम्न यंत्र को तांबे अथवा पीतल के पत्तर पर खुदवा लें । मंत्र का जप करते समय दृष्टि इस यंत्र पर रहनी चाहिए । इस मंत्र के प्रभाव से साधक सभी प्रकार की बीमारियों से बचा रहता है और अगर कोई बीमारी होती है तो वह शीघ्र ही ठीक हो जाती है ।

शत्रुओं के विनाश के लिए मंत्र

निमेषोन्मेषाभ्यां प्रलयमुदयं यादि जगती ।
तवेत्याहुः सन्तो धरणिधरराजन्यतनये ॥
त्वदुन्मेषाज्जातं जगदिदमशेषं प्रलयतः ।
परित्रातुं शङ्के परिहृतनिमेषास्तव दृशः ॥

इस मंत्र का ११०० की संख्या में प्रतिदिन ५१ दिन तक जप करना चाहिए। निम्न यंत्र को पीतल के पत्तर पर खुदवा कर रख लें। मंत्र का जप करते समय यह यंत्र दृष्टि के सामने रहना चाहिए। इसके प्रभाव से साधक का बुरा चाहने वाले उसके शत्रु खुद ही अनेक प्रकार के कष्ट झेलते हैं और मुसीबतों में फंसकर परास्त हो जाते हैं।
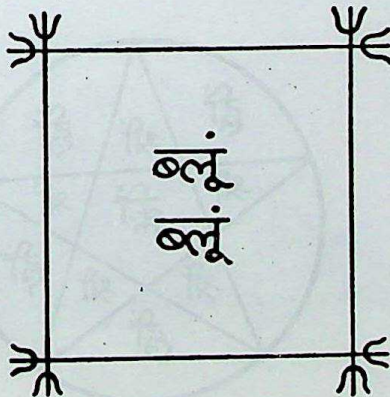
हर कार्य में सफलता के लिए मंत्र

विपंच्या गायन्ती विविधमपदानं पुररिपो—
स्त्वयाऽऽरब्धे वक्तुं चलितशिरसा साधुवचने ।।
तदीयैर्माधुर्यैरपलपितन्त्रीकलरवां ।
निजां वीणां वाणी निचुलयति चोलेन निभृतम् ।।

इस मंत्र का जाप १००० की संख्या में प्रतिदिन करना चाहिए। यह जप ४५ दिन तक करें। निम्न यंत्र को तांबे के पत्तर पर खुदवा लें। मंत्र का जप करते समय साधक की दृष्टि इस यंत्र पर रहनी चाहिए। इस मंत्र के प्रभाव से साधक जीवन के हर क्षेत्र में सफलताएं प्राप्त करता चला जाता है। साधक जिस कार्य में भी हाथ डाल देता है उसमें सफल ही होता है, असफलता उससे दूर रहती है।

मित्रों में लोकप्रिय होने का मंत्र

मृणालीमृद्वीनां तव भुजलतानां चतसृणां ।
चतुर्भिः सौन्दर्यं सरसिजभवः स्तौति वदनैः ॥
नखेभ्यः सन्त्रस्यन्प्रथममथनादन्धकरिपोः ।
चतुर्णां शीर्षाणां सममभयहस्तार्पणधिया ॥

इस मंत्र का १००० की संख्या में प्रतिदिन ४५ दिन तक जप करना चाहिए। निम्न यंत्र को तांबे के पत्तर पर खुदवा लें। मंत्र का जप करते समय साधक की दृष्टि यंत्र पर रहे। इसके प्रभाव से साधक अपने मित्रों आदि के बीच में अपना सिक्का जमा लेता है। समाज में वह सम्माननीय व्यक्ति के रूप में देखा जाने लगता है।
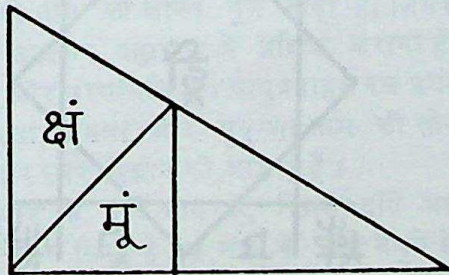
दैवी शक्तियां प्राप्त करने का मंत्र

कुचौ सद्यः स्विद्यत्तटघटितकूर्पासभिदुरौ ।
कषन्तौ दोर्मूले कनककलशाभौ कलयता ॥
तव त्रातुं भङ्गादलमिति विलग्नं तनुभुवा ।
त्रिधा नद्धं देवि त्रिवलि लवलीवल्लिभिरिव ॥

इस मंत्र का प्रतिदिन १००० की संख्या में ४५ दिन तक जप करना चाहिए। निम्नलिखित यंत्र को चांदी या तांबे के पत्तर पर खुदवा लें। मंत्र का जप करते समय साधक की दृष्टि इस यंत्र पर रहनी चाहिए। इसके प्रभाव से साधक को ऐसी-ऐसी चमत्कारी शक्तियां प्राप्त हो जाती हैं कि सभी आश्चर्य चकित रह जाते हैं। इसकी साधना करने वाला मनुष्य लोगों के दिल की बात जान लेता है। इसका साधक लोगों को उनके भूत, वर्तमान तथा भविष्य काल के बारे में बता देता है।

□□
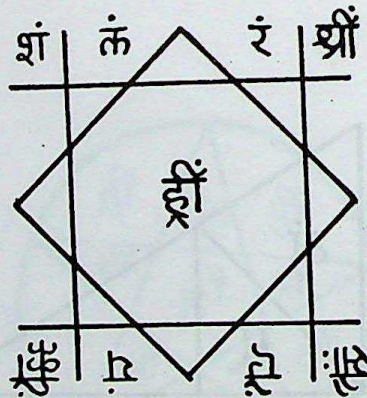
चमत्कारी स्वर विद्या

स्वर विद्या या स्वर विज्ञान भारत की एक अत्यंत प्राचीन और गोपनीय विद्या है जिसको सीख कर योगीगण अनेकों प्रकार के चमत्कार लोगों को दिखाया करते हैं। इस विद्या में वास्तव में यह अध्ययन किया जाता है कि हम जो श्वास छोड़ते हैं वह नाक के दाहिने या बाएं किस नथुने से निकलने पर हमारे शरीर पर उसका कैसा प्रभाव पड़ता है। इस अध्ययन में इस अलौकिक विद्या के संबंध में कुछ जानकारी हम यहां दे रहे हैं।

सम्पूर्ण शरीर में फैली हुई ७२००० नाड़ियों में से जिनका केन्द्र स्थल नाभि है, चौबीस नाड़ियों को प्रमुख माना गया है तथा उनमें से भी दस वायु प्रवाहक प्रधान नाड़ियां हैं। इन सब नाड़ियों के मध्य तल प्रदेश में सर्पिणी के समान सुप्तावस्था में कुण्डलिनी नाम की शक्ति मूल नाड़ी है, जिसको जगाना और ऊपर उठाकर ब्रह्मरन्ध्र में प्रविष्ट कराना ही योग की पराकाष्ठा और परमसिद्धि है। वायुप्रवाहक दस प्रधान नाड़ियों में से भी इड़ा, पिंगला और सुषुम्णा नाम की तीन नाड़ियां सर्वश्रेष्ठ और स्वर विज्ञान की आधार हैं।

इड़ा शरीर के बाँयें भाग में, पिंगला दाँयें भाग में तथा सुषुम्णा मध्य में स्थित है एवं नाक के बाँये नथुने से जो श्वास आता-जाता है, वह इड़ा नाड़ी में प्रविष्ट होता है। दाँये नथुने

से जिसका आवागमन होता है, वह पिंगला नामक नाड़ी में प्रवेश करता है तथा जब नाक के दोनों नथुने समान रूप से श्वास खींचते तथा छोड़ते हैं, तब वह वायु सुषुम्णा नाड़ी में प्रवेश करता है। इन तीनों नाड़ियों को क्रम से 'चन्द्र', 'सूर्य' और 'ब्रह्म' तथा यमुना, गंगा और सरस्वती नाम से भी जाना जाता है।

भिन्न-भिन्न कार्यों की सफलता-असफलता इन्हीं तीनों प्रमुख नाड़ियों की गति पर निर्भर है। कुछ कार्य इड़ा अर्थात् चन्द्र स्वर में सफल होते हैं, कुछ पिंगला अर्थात् सूर्य स्वर में सफल होते हैं और सुषुम्णा में कोई भी सांसारिक कार्य सफल नहीं होता—सिवा उपासना और ध्यान के। प्रायः सभी स्थिर और शुभ कार्यों में चन्द्र स्वर और अस्थिर तथा क्रूर कर्मों में सूर्य स्वर शुभ फलदायक होता है।

इन तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाता है कि हमें दैनिक जीवन में जो षटकर्म करने होते हैं यदि उनको स्वर विज्ञान के अनुसार संचालित किया जाय तो हम अधिक स्वस्थ तथा सुखी रह सकते हैं। उदाहरणार्थ भोजन के विषय में सर्वमान्य सिद्धांत है—'भूख लगे, तब खाओ' पर इतनी सी बात का पालन बिरले साधक ही कर पाते हैं। दूसरी बात है जब दाहिना स्वर चलता हो तभी भोजन करना चाहिए। 'ज्ञान-स्वरोदय' में श्री चरण दास जी महाराज का कथन है—

बायीं करवट सोइये, जल बायें स्वर पीव।
दहिने स्वर भोजन करै तौ सुख पावत है जीव॥

तथा इसके विपरीत यदि—

बायें स्वर भोजन करै, दहिने पीवै नीर।
दस दिन भूल्यौ यौं फिरै, आवै रोग सरीर॥

यह बात आजमायी हुई है। मैंने निज जीवन में देखा है कि

लगातार यदि कई दिन बायें स्वर में भोजन कर लिया जाय तो निश्चित ही शरीर में रोग उत्पन्न होंगे। पिंगला नाड़ी के बहते अर्थात् दाहिने स्वर के चलते भोजन करना शरीर की प्रकृति की माँग है। उदाहरण आप स्वयं हैं। कभी बहुत जोर की भूख लगे तो आप देखेंगे कि आपका दाहिना स्वर ही चल रहा है। इसी प्रकार बहुत प्यास लगी होगी तो स्वाभाविक बायाँ स्वर चलेगा ही। कई रोगी विद्यार्थियों को बायीं करवट सोने एवं दाहिने स्वर में भोजन करने का सुझाव देकर तथा इसका पालन करवाकर मैंने चंगा कर दिया है।

भोजन के बाद या यों कहिये कि इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात है जल पीने की। जल जीवन है एवं जल से सभी पेय निर्मित होते हैं। आजकल सामान्य जीवन में पेय का चलन बहुत है एवं सभ्यता का तकाजा यह है कि घर आये मेहमान से यह पूछा जाय कि 'ठंडा पीयेंगे या गरम'—न तो हमें यह पता कि हमारे शरीर की प्राकृतिक माँग क्या है तथा न हम यह जानते हैं कि यह माँग कब की जा रही है? चाय का चलन तो सामान्य चाल-चलन की बात है। ऐसे समय में हम केवल बायें स्वर में ही पेय पदार्थों को ग्रहण करने की शपथ लेकर चलें तो काया निरोगी रहेगी। यह तो निर्विवाद सत्य है कि औषधालयों में स्वास्थ्य उपलब्ध नहीं होता और न बढ़ते हुए औषधालय राष्ट्र के शुभ स्वास्थ्य के ही लक्षण हैं। परन्तु जो सज्जन टेरामाइसिन एवं पेनिसिलिन का सेवन करके ही निरोग रहना अधिक सुविधाजनक समझते हैं, वे इस मार्ग को नहीं पसंद करेंगे। मैं तो यह चाहता हूँ कि इस सर्वसिद्धि कारक स्वर-ज्ञान को, जो जीवन-प्रयोगशाला में अनुभूत विज्ञान है, हमारे सामान्य विद्यार्थी तक जान लें, जिससे उनका जीवन उन्नति की ओर अग्रसर हो, यद्यपि वैसा 'होना' प्रभु-अधीन है।

दाहिने स्वर में भोजन एवं बायें स्वर में पेय पदार्थों के ग्रहण के साथ-साथ भोजन के साथ पानी पीना, दही पीना, छाछ या सब्जी का रसा पीना चल सकता है। आयुर्वेद वाले बहुधा भोजन के साथ पानी पीने का निषेध शायद इसीलिए करते हैं कि दाहिने स्वर में पानी पीना अनुचित है। एक घड़ी के बाद स्वर-परिवर्तन होता ही है; अतः जल भोजनोत्तर लगभग सवा घंटे के बाद ही पीना श्रेयकर है।

यह कितनी वैज्ञानिक बात है कि जब भोजन दाहिने स्वर में किया तो मल-त्याग भी उसी स्वर में करना चाहिए। दाहिने स्वर में भोजन करने से जठराग्नि की प्रबलता उस समय रहती है एवं इससे भोजन सहज में पचता है। करोड़पति हो या अरबपति, गरीब हो या मध्यमवर्गीय, जितनी भूख हो, उतना ही खा सकता है, जितनी जठर-शक्ति होगी उतना ही पचा सकता है; अतः बीस रोटी खाकर भी यदि अपच रहा तो दो रोटियां खाकर पचाना अधिक उत्तम है। मल-त्याग इसलिए दाहिने-स्वर यानी सूर्य-स्वर में करना चाहिए कि इस स्वर की सहज शक्ति से शौच के समय मल-त्याग सहज हो जायगा। न तो शोचालय में अधिक देर बैठकर वहां की दूषित वायु का सेवन करना होगा और न जोर लगाकर शक्ति का अपव्यय ही होगा। परन्तु जैसा पूर्व में भी निवेदन किया गया है, दस्तावर एवं कब्जहर गोलियाँ खा-खाकर जो महानुभाव अपना स्वास्थ्य ठीक रखे हों, वे जैसा उचित समझें करें, मार्ग सबके लिए सहज सुलभ है।

शौच के साथ तो मूत्र-त्याग होता ही है, जैसे कि भोजन के साथ जल-ग्रहण हो जाता है; अन्यथा मूत्रत्याग सदा बाँये स्वर की उपस्थिति अर्थात् चन्द्र स्वर के बहने पर ही करना श्रेयस्कर है। इसमें बचत की बात निवेदन कर दूं कि किसी कारण-

विशेष से यदि आपको अचानक मल या मूत्र का वेग प्रतीत हो तो हाजत की सफाई के लिए स्वर को न देखें। मैं तो सामान्य जीवन की प्रक्रिया का निवेदन कर रहा हूँ और मेरी यह मान्यता है कि बाद में जाकर आपके जीवन पर आपका इतना नियन्त्रण हो जायगा कि इस अचानक तत्व का भी ह्रास हो जायगा।

अब बायीं करवट सोने के वैज्ञानिक तथ्य का विवेचन करें। इसमें कुछ स्पष्टवादिता का सहारा भी लेना होगा; परन्तु जीवन की बात है। अतः कहने की आज्ञा चाहता हूँ। मैंने तीन दर्जन से अधिक व्यक्तियों का इस संदर्भ में अध्ययन किया। उनमें से कुछ के केवल लड़के-ही-लड़के थे, कुछ के लड़कियां-ही-लड़कियां। अनजाने में वे बायीं एवं दाहिनी करवट शयन करने की आदत में हैं। परिवार-आयोजन और नियोजन तो सरकारी रूप से अब चले हैं। भारत के इस पुरातन एवं सनातन विज्ञान द्वारा जो जैसी सतान आप चाहें प्राप्त हो सकती है। सामान्य मानवों में भ्रम रहता है कि बायीं ओर 'हृदय' होता है, अतः उसे दबाकर सोने से हानि होगी। यह भ्रामक बात है। बायीं करवट सोने से सूर्य-स्वर (दाहिने) की उपस्थिति रहेगी एवं आपकी धर्मपत्नी के दाहिनी करवट शयन करने से वाम स्वर चलेगा। ऐसी परिस्थिति में सम्भोग होने से केवल लड़का ही पैदा होगा यह निश्चित है। हमारे यहां विवाह में स्त्री को बायां अंग बताया जाकर बायीं ओर उसे सदा रखने की शिक्षा दी जाती है जो कि इसी तथ्य की मूक-शिक्षा है कि आप आगे दुःख न पायें। मैंने देखा है कि पांच लड़कियों के बाद भी इसलिए लोग दुखी रहते हैं कि लड़का नहीं हुआ। इसके अतिरिक्त सामान्यतया भी बायीं करवट सोने से रात भर दाहिना-स्वर चलेगा तथा चन्द्रमा की उपस्थिति

में चन्द्रमा का निषेध योगी के लिए प्रामाणिक है।

दिन को तौ चंदा चलै, चलै रात में सूर।
यह निश्चै करि जानिये, प्रानगमन बहु दूर॥
रात चलै स्वर चंद में, दिन को सूरज बाल।
एक महीना यों चलै, तो छठे महीना काल॥

रात्रि को इसलिए भी बायीं करवट सोना चाहिए कि यह अधिक प्राकृतिक एवं सुविधाजनक है। करना यह है कि आप तो जब शयन के बाद यह अवसर देखें कि निद्रा देवी ने अब शरण दे ही दी है, तभी बायीं करवट लेकर सो जायें। सोने के बाद सुषुप्ति-अवस्था में जो अनायास करवटों की अदला-बदली होती है, वह आपके करने का विषय ही नहीं रहती। अतः आप उसका विचार ही न करें। रात्रि को दाहिना स्वर चलने से (बायीं करवट सोने से) भोजन पचने में आवश्यक सहायता मिलती है; क्योंकि रात्रि-भोजन के पश्चात् सामान्यतः कोई शारीरिक श्रम न तो किया जाता, न ऐसा सम्भव ही है। अतः करबद्ध निवेदन है कि आज से ही स्वामी चरणदास जी महाराज के आज्ञानुसार—

बायीं करवट सोइये, जल बायें स्वर पीव।
दहिने स्वर भोजन करें, सुख पावत है जीव॥

□□

तुरंत फलदायक साबर मन्त्र

साबर का अर्थ होता है अपरिष्कृत या ग्राम्य। साबर तंत्र, तंत्र की ग्राम्य शाखा है। इसके प्रवर्तक भगवान् शंकर प्रत्यक्षतया नहीं हैं किन्तु जिन सिद्धों ने इसका आविष्कार किया वे परम शैव अवश्य थे। देहातों में रहने वाले लोग स्थानीय पेड़-पौधों का औषधि रूप में प्रयोग करना जानते हैं। भले ही इन प्रयोगों को शास्त्रीय मान्यता नहीं मिली है इतने पर भी ये अशास्त्रीय प्रयोग लाभकारिता और उपयोगिता की दृष्टि से कम नहीं हैं।

धरण डिग जाने या चणक चले जाने को आज का चिकित्सा विज्ञान नहीं मानता। इनके हो जाने पर व्यक्ति कितना कष्ट पाता है इसे वे लोग भली भान्ति जानते हैं जिन्हें इस पीड़ा से दो चार होना पड़ा है। मोच आ जाने, हड्डी टूट जाने या हट जाने से अत्याधिक कष्ट होता है। इस कष्ट के निवारणार्थ यदि डाक्टरों के पास जायें तो काफी समय और पैसा लगता है जबकि देहाती तरीके से इलाज कराने पर यह पीड़ा शीघ्र ठीक हो जाती है।

पीलिया एक रोग है, इसमें पित्त खून में उतर आता है। डाक्टरों से चिकित्सा कराने पर महीनों का समय और पैसा खर्च होता है किन्तु ग्रामीण ओझे इसे तीन दिन में झाड़-फूंक कर सही कर देते हैं। उपरोक्त कथन से मेरा यह आशय नहीं है कि हमें डाक्टरों से चिकित्सा करानी ही नहीं चाहिए या

मैं किसी की निन्दा करना चाहता हूं। मेरा मतलब तो मात्र भारत के प्राचीन ज्ञान से जन साधारण को परिचित कराना है।

शास्त्र के समानान्तर शास्त्रोतर विधि चला करती है। यूं ऐसा हर युग और हर क्षेत्र में रहा है तथा इसे शास्त्रीय मान्यता और सम्मान भी नहीं मिला करता। बिल्कुल ऐसी ही बात इस साबर तंत्र के बारे में है। यह विद्या तंत्र के परिष्कृत रूप की महत्ता को प्राप्त नहीं कर सकी, तब भी यह तंत्र की परिभाषा और उपयोगिता की दृष्टि से सही रही इसी कारण इस विद्या का प्रचार सिद्ध सम्प्रदाय के साधकों द्वारा किया गया।

आज भी देश के अलावा संसार के अधिकांश क्षेत्रों में इस साबरी तन्त्र का प्रचार प्रभाव विद्यमान है। वे अशिक्षित कबीले और जातियां जिन्हें हम असभ्य कहते हैं, जिनका आधुनिक शिक्षा से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है, जो शास्त्रीय विधियों से परिचित नहीं हैं, उनके पास साबर तंत्र का अद्‌भुत रहस्य मिल जायेगा।

साबर मन्त्रों का स्वरूप विविधता लिए हुए तो है ही विचित्र भी है। विविध इसलिए कि एक मन्त्र में अनेक शैलियों का समावेश मिल सकता है तथा विचित्र इस कारण कि शुद्ध बीज मन्त्रों के साथ ठेठ ग्रामीण भाषा की शब्दावली वाक्यगत रूप में मिल जायेगी। कुछ मन्त्रों की रचना बड़ी अटपटी सी लगती है, उनकी शब्दावली को बोलते मालूम पड़ता है कि बच्चों को प्रसन्न करने के लिए कुछ कहा जा रहा है। लेकिन इसका प्रभाव असाधारण रूप से पड़ता है। सिर दर्द के लिए एक मन्त्र आता है, "हजार घर घाले एक घर खाय, आगे चले तो पीछे जाय, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा"। इस मन्त्र को पढ़कर साधक रोगी के सिर पर हाथ रखकर सात बार फूंक मार देता है तथा दर्द-ठीक हो जाता है।

एस्प्रीन से छुटकारे के लिए यह विधि काफी कारगर रह सकती है। कुछ एक ऐसे कारगर मन्त्र हैं जो रोग से छुटकारा दिलाते ही हैं। इससे पैसा और समय बचता है। किन्तु दुःख तब होता है जब कुछ स्वार्थी तत्व अपनी उदर पूर्ति के लिए इस विद्या का दुरुपयोग करते हैं। वे हर बीमारी को झाड़ फूंक का विषय बना लेते हैं। ऐसा करके वे अपना हित तो साध लेते हैं किन्तु दूसरे का कितना बड़ा अहित कर देते हैं।

साबर मन्त्रों की रचना संस्कृत प्राकृत और क्षेत्रीय भाषाओं में मिलती है, किन्हीं मन्त्रों में कई एक भाषाओं का मिश्रित रूप मिलेगा, तो कईयों में शुद्ध क्षेत्रीय भाषा और ग्रामीण लहजा, शैली तथा कल्पना भी। हिन्दी एक बड़े भू-भाग की बोली जाने वाली भाषा होने के कारण अधिकांश मन्त्र हिन्दी में मिलते हैं। साबर मन्त्रों में मन्त्र के षडांग बीज ऋषि: कीलक छन्द: देवता एवं शक्ति की आवश्यकता अलग से नहीं रहा करती, बल्कि इन सबका वर्णन मन्त्र में ही रहता है। इसलिए मन्त्र ही अपने आप में पूर्ण हैं।

साबर मन्त्रों में श्रद्धा और विश्वास प्राण फूंकते हैं, तथा इसी दृढ़ता तथा विस्तार से साबर मन्त्र अपना चमत्कारी प्रभाव और फल देते हैं। इन मन्त्रों में आस्था और विश्वास का दूसरा प्रभाव सौगन्ध के रूप में आता है। यह सौगन्ध आन के रूप में दिलाई जाती है, इसमें गाली, शाप जैसी स्थिति का उल्लेख रहा करता है। जैसे अमुक देव मेरा कार्य न करे तो अपनी माता की शय्या पर पग धरे, मेरा कहा न करे चमार के कुण्डे में गिरे, धोबी की नांद में कांकर बनके पड़े इत्यादि।

शास्त्रीय प्रयोगों में ऐसी बात नहीं रहा करती। एक साधक अपने आराध्य देव के साथ ऐसा व्यवहार करे यह शोभनीय नहीं है। लेकिन साबर मन्त्रों में ऐसा उसी प्रकार होता है जैसे

एक अबोध बच्चा अपने माता-पिता से चाहे सो कह देता है, जिद कर बैठता है। अबोध बच्चा छल छिन्द नहीं जानता वह तो मात्र इतना जानता है कि मेरे माता पिता मात्र मेरे हैं वे सब कुछ कर सकते हैं और जो कुछ मैं कहूँगा उसे पूरा करेंगे ही। इसी प्रकार का विश्वास साबर मन्त्रों का साधक मन्त्र के देवता के प्रति रखता है। जिस प्रकार अबोध बच्चे की अभद्रता पर उसके माता-पिता कोई ध्यान अपने वात्सल्य प्रेम के कारण नहीं देते वैसे ही बाल सुलभ सरलता और विश्वास के आधार पर इन मन्त्रों की साधना करने वाला सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

साबर मन्त्रों में सबसे बड़ी खूबी यह है कि ये सरलता से सिद्ध हो जाते हैं। इन मन्त्रों की साधना में गुरु की इतनी आवश्यकता नहीं रहती क्योंकि इनके प्रवर्तक स्वयं सिद्ध साधक रहे हैं। इतने पर भी कोई निष्ठावान साधकगुरु बन जाये तो कोई हर्ज नहीं है क्योंकि किसी होने वाले विक्षेप से वह बचा सकता है।

इनको साधते समय ब्रह्मचर्य और शाकाहार का पालन किया जाए तो अति उत्तम, अन्यथा मन्त्र जप के समय पाक साफ होकर तो बैठना ही चाहिए। जहाँ पर पीडन पाप माना गया है वहीं परोपकार करना पुण्य माना गया है यदि हम इस दृष्टिकोण को लेकर मानसिक दैहिक रोगों के निवारण करने वाले मन्त्र सिद्ध कर लें तो कितना अच्छा रहे। इससे दो लाभ मिलेंगे कि परोपकार के साथ ही साथ हम अपने पूर्वजों की इस धरोहर को सहेजेंगे भी, जो कि हमारा नैतिक दायित्व है।

बहुत से साधकों ने इन मन्त्रों की साधना करके अभिष्ट लाभ प्राप्त किया है। यह व्यवहारिक विषय है इसको धैर्य और विश्वास से अपना लेने पर ही सिद्धि मिलेगी। असफलताएं

और विघ्न हर कार्य में आते हैं किन्तु इनसे घबराने से काम नहीं चलेगा। साधना करते समय गुठली को प्रतिपल उखाड कर देखने की (कि उगी है या नहीं) बालसुलभ चंचलता मत रखिए, आतुर मत होईये। एक निष्ठ होकर करते रहिए।

साबर मन्त्रों को कैसे सिद्ध करें

कोई भी मन्त्र सिद्ध करने से पहिले गणेश जी का निम्नलिखित ध्यान व जप कर लेना चाहिए।

गणेश जी का ध्यान

वक्रतुण्ड महाकाय कोटि सूर्यसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा ॥

विनायक मन्त्र

"ॐ वक्रतुण्डाय हुँ।"

इसकी कम से कम एक माला जपें।

इसके बाद निम्नलिखित मंत्र की एक माला जप कर भैरवजी से मन्त्र सिद्धि के लिए प्रार्थना करने के बाद मन्त्र का जाप प्रारंभ करें।

मन्त्र सिद्धि के लिए प्रार्थना मन्त्र

भो भैरव नमस्तुभ्यं भगवन् करुणाकर।
अस्मञ्जयस्य सिद्धयर्थ अनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

निम्नलिखित मन्त्र से दिग्बन्धन कर लें।

दिग्बंधन मन्त्र

वज्रक्रोधाय महादन्ताय दशदिशो बन्ध बन्ध हूँ फट् स्वाहा।

इस मन्त्र को जपने से दशों दिशायें बंध जाती हैं और किसी प्रकार का विघ्न साधक की साधना में नहीं पड़ता।

नाभि में दृष्टि जमाने से ध्यान बहुत शीघ्र लगता है और शीघ्र मन्त्र सिद्ध होते हैं।

इसके पश्चात् मन्त्र को सिद्ध करने के लिए उसका जप करना चाहिए। जप किस समय, किस स्थान पर और कितनी संख्या में करना चाहिए यह मन्त्रों के साथ लिख दिया गया है, परन्तु इस कार्य के लिए दशहरा, दीपावली, होली तथा ग्रहण काल अच्छे माने जाते हैं। जप मन्दिर में या किसी साफ सुथरे एकान्त स्थान पर करना चाहिए।

देह रक्षा के मन्त्र

मन्त्र विद्या का प्रयोग करने वाले को देहाती भाषा में मन्त्री कहा जाता है। देहाती ओझा या मन्त्री जब भी किसी व्यक्ति के घर झाड़ फूंक के लिए जाता है तो घर से चलते समय या उस स्थान पर पहुंच कर सबसे पहले अपने शरीर की रक्षा के प्रबंध के उपाय के रूप में देह रक्षा का मन्त्र पढ़ लेता है ताकि यदि उस स्थान पर भूत प्रेतादि का उपद्रव हो तो वे उसको हानि न पहुंचा सकें। कई बार मन्त्रियों में आपस में ही वैमनस्य हो जाता है। पीड़ित व्यक्ति यदि एक मन्त्री से ठीक नहीं हुआ है और किसी दूसरे मन्त्री को बुला लिया गया है तो कभी-कभी ईर्ष्या वश पहला मन्त्री इस दूसरे मन्त्री को क्षति पहुंचाने के लिए मूठ या अन्य तान्त्रिक प्रयोग कर बैठता है। यदि देह रक्षा का मन्त्र पढ़कर पहले से ही अपने शरीर को सुरक्षित कर लिया जाय तो उसके मन्त्र-तन्त्र का कोई प्रभाव शरीर पर नहीं होगा। अतः कहीं पर जाते समय अपनी रक्षा का प्रबन्ध कर लेना चाहिए। नीचे देह रक्षा के कुछ साबर मन्त्र दिए जा रहे हैं।

१. उत्तर बांधों, दक्खिन बांधों, बांधों मरी मसानी
डायन, भूत के गुण बाँधों, बाँधों कुल परिवार
नाटक बांधों, चाटक बाँधों, बांधों भुइयां वैताल,
नजर गुजर देह बांधों, रामदुहाई फेरों।

किसी पर्व काल में मन्त्र को अधिक से अधिक संख्या में जप लेने से यह सिद्ध हो जाता है। सिद्ध करने के पश्चात् जब देह रक्षा की आवश्यकता पड़े तो इस मन्त्र का नौ बार उच्चारण करके अपनी शिखा में गांठ लगा लेनी चाहिए अथवा हाथ की हथेली पर मन्त्रोच्चारण के साथ नौ बार फूंक मारकर उस हथेली को पूरे शरीर पर फिरा देना चाहिए तो देह बंध जायेगी।

२. जल बाँधों, थल बांधों, बाँधों अपनी काया, सातसौ
योगिनी बांधों, बांधों जगत की माया, दुहाई कामरू
कमक्षा नैना योगिनी की, दुहाई गौरा पार्वती की
दुहाई वीर मसान की।

इस मन्त्र की विधि भी पहले मन्त्र की विधि अनुसार ही होगी।

३. ॐ काली महाकाली, इन्द्र की बेटी ब्रह्मा की साली,
उड़ बैठी पीपल की डाली, दोनों हाथ बजावै ताली,
जहां जाय वज्र की ताली, वहां ना आवे दुश्मन हाली,
दुहाई कामरू कमक्षा नैना योगिनी की, ईश्वर महादेव
गौरा पार्वती की, दुहाई वीर मसान की।

इन मन्त्रों को आश्विन के दशहरे के दिन दस हजार जप करके सिद्ध करलें। जप करते समय अग्नि में गुग्गुल की धूप देते रहें। जिस दिन मन्त्र सिद्ध करना हो उस दिन व्रत रखना चाहिए। साधक को आसन के सम्मुख (आसन पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख होना चाहिए) एक चौकोर यन्त्र आटे से बना लेना चाहिए। उसके बीच में एक लाईन सिन्दूर की खीच लें। इसके

बीच में कलश स्थापित करके उसके ढक्कन को जौ से भर दें तथा उस पर दीपक की स्थापना करें। फिर मन्त्र जपते रहें तथा घी गुग्गल और कपूर की धूनी देते जायें इस प्रकार मन्त्र चैतन्य होकर कार्य करने लगता है।

४. ॐ नमो परमात्मने पर ब्रह्म मम शरीरे
पाहि-पाहि कुरू कुरू स्वाहा।

होली, दिवाली, शिवरात्रि, ग्रहण, सायन संक्रान्ति के पुण्य काल या क्रान्ति साम्य के समय ग्यारह माला (एक माला = एक सौ आठ दाने) का जप करके सिद्ध कर लें। फिर नित्य एक माला जपने से शरीर रक्षा होती है।

५. ॐ नमः वज्र का कोटा जिसमें पिण्ड हमारा बैठा, ईश्वर कुन्जी, ब्रह्मा का ताला, मेरे आठों याम का यति हनुमन्त रखवाला।

इसे सिद्ध करने के लिए किसी भी मंगलवार से इसका जप प्रारम्भ करके दस हजार जप द्वारा पुरश्चरण कर लें। पवन तनय श्री मारूति नन्दन को सवाया रोट का चूर्मा (गुड़, घी, मिश्रित) अर्पित करें, कार्य के समय मन्त्र का तीन बार उच्चारण करके शरीर पर हाथ फिरायें तो शरीर रक्षित हो जाता है।

६. छोटी मोटी थमंत वार को वार बांधे, पार को पार बांधे, मरघट मसान बांधे, टौना टंवर बांधे, जादू वीर बांधे, वीठ मूठ बांधे, चोरी छीना बांधे, भेड़िया बाघ बांधे, लखूरी स्यार बांधे, बिच्छू और सांप बांधे, लाइल्लाह का कोट, इल्लल्लाह की खाई, मोहम्मद रसूलिल्लाह की चौकी हजरत अली की दुहाई।

सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण या पर्व काल में इसको जपकर सिद्ध कर ले। इसके लिए संख्या की पाबन्दी नहीं है। जब तक ग्रहण या

पर्व काल रहे इसे जपता ही जाये तो यह सिद्ध हो जाता है। मन्त्र को सात दफा बोल कर दाहिने हाथ से घुटने पर (वायें या दाहिने कोई सा भी) ताल दें अर्थात् हाथ मारें। जहां खतरनाक जगह में वास करना हो वहां मन्त्र वोल कर अपने चारों ओर एक रेखा खींच लें फिर इस रेखा के मध्य शरीर रक्षित रहेगा।

यह मन्त्र शुद्ध क्षेत्रीय भाषा (विहारी) में है।

७. नोह बांधूं, नोह सुर बांधूं, बांधूं भौं लिलारी,
अस्सी अस्सी दोष बांधूं; तब करौ पैसारी,
तखा बांधूं, ताडिका कलेज बाधू, कालिका लिलार बांधूं, योगिनी सम्हार बांधूं, कौलेसरी माई, जय, जय, जय, हनुमान वज्र के कोठा जिसमें हमारे पिण्ड प्राण की करो रक्षा श्री सतगुरु के वन्दों पाओं, कामरू कामाक्षा की विद्या नैना योगिनी के मन्त्र।

गाय के गोबर से चौका देकर स्थान को पवित्र कर लें, सर्वतो भद्र चक्र का पूजन करें, कलश स्थापन करें आम की टहनी पत्तों समेत रखें, कलश को जौ भरे ढक्कन से ढकें, उसके ऊपर दीपक जलायें, पूर्वाभिमुख लाल कम्बल का आसन बिछा कर दशहरा को लाल चन्दन की माला से जप की गिनती करें। हर माला के बाद अग्नि में गूग्गल की आहुति देते रहें। पूरे पर्व काल जप करना चाहिये। आवश्यकता के समय मन्त्र का उच्चारण करके देह पर हाथ फिरा कर शरीर को रक्षित कर लें।

पीलिया का मन्त्र

ॐ नमः आदेश गुरु को श्रीराम सर साधा लक्ष्मण साधा बाण, काला पीला रीता नीला थोथा पीला पीला पीला चारों झड़ें तो श्री रामचन्द्र जी रहै नाम मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग करते समय पीतल के पात्र में शुद्ध कूप जल लेकर सूई से सात बार झाड़ना चाहिए। ऐसा केवल शनिवार को करना चाहिये तथा सात शनिवार तक करना चाहिये तो पीलिया रोग मिट जायेगा।

बवासीर का मन्त्र

ईशा ईशा ईशा कांच कपूर चोर के शीशा अलफ अक्षर जाने ना कोई, खूनी-बादी बवासीर दोनों न होई, दुहाई तख्त सुलेमान बादशाह की।

पर्व काल या ग्रहण में मन्त्र को सिद्ध करके जल को तीन बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करे और गुदा को धोएं तो अर्श रोग मिट जायेगा।

आधाशीशीका यन्त्र

५३	४२
३११	७०
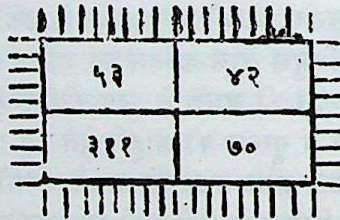
सफेद कागज पर इस प्रकार यन्त्र बनाकर चारों ओर ५३ रेखा खींचकर कागज (यन्त्र) मोड़कर उसे सफेद और काले धागे से बांधकर, धूप देकर जिस तरफ दर्द हो, उसी ओर के भाग के कान में या सिर के बालों में सूर्य उदय से पहिले महावीर बजरंगबली का नाम लेकर बांध दें। पहिले दिन कुछ दर्द रहेगा, पर दूसरे दिन एकदम चला जायेगा।

ताप-तिजारी चौथिया, आधा शीशी में

ॐ कामरू देश कमक्षा देवी, तहां बसै इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी के तीन पुत्री। एक रोलै, एक पछौले। एक ताप तिजारी इकतारा मथवा आधा शीशी टोरै। उतरै तौ उतारौ, चढ़ै तौ मारौ। न उतरै तौ गारूड़ मोर हुंकारौं तौ। सबद साचा, पिंड काचा। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

उपरोक्त परेशानियों में मोर पंख से पांच बार फूंक मारें।

पान वशीकरण

सात समुन्दर सात द्वीप, तहां बसे इस्माइल पीर, उलटे घोड़ा उलटे पीठ, तिस पर चढ़े मोहमदा पीर, पान पढ़े मोहमदा पीर, गोरी आवे हमारे भीर, दुहाई गुरू नरसिंह की।

जिसका वशीकरण करना हो उसे एक पान का बीडा लेकर इस मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके खिलाना चाहिये। खिलाते समय जिसको वश में करना हो उसका तथा उसकी माता का नाम लेना चाहिये तथा जो वश में कर रहा है उसका तथा उसकी माता का नाम लेना चाहिये यथा—

रामलाल पुत्र कलावती, श्यामलाल पुत्र गौरी के वश में हो जाये।

नमक वशीकरण

एक निमक रमता माता, दूसर निमक विरह से माता, तीसर निमक औरी बौरी, चौथा निमक रहै कर जोरी, यह निमक अमुक खाय, हमको छोड़ दूसर नहिं जाय,

दुहाई पीर औलिया की, जो कहे सो सुने जो मांगे सो दे, दुहाई गौरा पार्वती की, दुहाई कमक्षा देवी की, दुहाई गुरु गोरखनाथ की ।

इस मन्त्र में अमुक की जगह उसका नाम लिया जाये जिसे वशीभूत करना हो। नमक की डली को मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके सब्जी इत्यादि में डालकर खिला देने से व्यक्ति वशीभूत हो जाता है।

मोहिनी मन्त्र

मोहन मोहन क्या करे, मोहन मेरा नाम, भीत पर तो देवी खड़ी मोहों सारा ग्राम, राजा मोहों, प्रजा मोहों, मोहों गणपत राय, तेतीस कोटि देवता मोहों नर लोग कहां जाय, दुहाई ईश्वर महादेव गौरा पार्वती नैना योगिनी कामरू कमक्षा की ।

इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए आश्विन के दशहरे के दिन से प्रारम्भ करना चाहिये नित्य एक माला का जप करके दस दिन तक जपना चाहिये। जप काल में घी में गुग्गुल और कपूर मिला कर धूनी देते रहना पड़ता है तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है। यह मन्त्र हर किसी को मोह सकता है।

गोरोचन (रोचना) को मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके तिलक लगा कर साध्य व्यक्ति के पास जाया जाये तो वह मोहित होता है। फूल को अभिमन्त्रित करके जिसे सुंघाया जायेगा वह मोहित होगा। सभा को मोहित करना हो तो मन्त्र को पढ़कर चारों ओर फूंक मारने से मोहन होता है।

जादू झाड़ने का मन्त्र

ओम श्री अस्थापन तामें करहु जामें राम भलाई,
गुनिया के जो गुन काटों इसमें कोई नहीं मनाही।
दुहाई कामरू कमक्षा नैना योगिनी की।

पूर्वोक्त विधि से सिद्ध करने के पश्चात् इस मन्त्र को काम में लेना चाहिये। जिस किसी को किसी ने जादू-टोना कर दिया हो उसे सम्मुख बिठा कर मोर पंख से मन्त्र का उच्चारण करता हुआ झाड़ता जाये तो टोना दूर हो जाता है। यदि कोई ओझा किसी को बिना मतलब के सताना चाहे तो इस मन्त्र से उसके गुन काटे जा सकते हैं।

भूत भगाने का मन्त्र

हाड के दिया चाम की बाती, धरी पछाड़ों भूत की छाती, चम्पा फूले फूले कचनार, तेहि पर भूत करे सिंगार, तर के उखरी उसरी बान, मेरे गुन उठावे बान, हमसे सरवर के करे सेयान, मियां पोखर तीन अस्थान, दुहाई बाबा मसान की, गुन बान चक्कर बान, मेरा धरती उठे बान, मेरा बान लेके मेरा गुरु के बान छांड़ो, छांड़ो दोनों जन, लोहे का सिक्कड़ बज्जर के किवाड़, तहां राखौं पिण्ड प्राण, दुहाई कामरू कमक्षा की।

जिसको भूत बाधा हो उसे इस मन्त्र से झाड़ दिया जाये तो आराम हो जाता है।

दूसरा मंत्र

बिस्मिल्लाहर्रहमानर्रहीम, लाइल्लाह की कोठरी, इलिल्लाह की खाई, हजरत अली की चौकी, मोहम्मद रसूलिल्लाह की दुहाई।

मन्त्र को सिद्ध करके जब प्रयोग में लाना हो तो मन्त्री को चाहिये कि एक हाथ से कूंए में लोटा-डोर से जल खींचकर लावे तथा एक ही हाथ से रस्सी को लोटे से खोलकर तथा लोटे के जल को मन्त्र से नौ बार अभिमन्त्रित करके रोगी को पिलावे तथा उसके ऊपर छिड़के तो भूत-बाधा दूर हो जाती है।
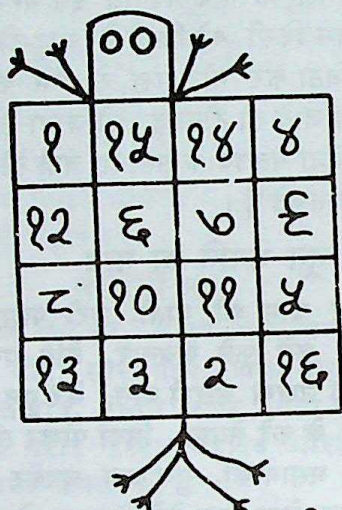
प्रेतादि को जलाने का यन्त्र

विधि—इस यन्त्र को सर्वप्रथम सिद्ध करलें फिर प्रयोग करें। सिद्ध करने की विधि यह है कि दीपावली या होली की रात्रि या सूर्यग्रहण के समय जितनी अधिक संख्या में हो सके इस यंत्र को सादा कागजों पर हल्दी की स्याही से लिखें और फिर इन कागज़ों को किसी नदी में बहा दें। बस मंत्र सिद्ध हो जायगा। जब इस यंत्र को प्रयोग करना हो तो किसी कागज पर काली स्याही से यन्त्र बना कर नीचे फलां की जगह रोगी एवं उसकी मां का नाम लिखना चाहिये। फिर यन्त्र की

बत्ती बना कर दीपक में सरसों का तेल डाल कर जलावें। रोगी को दीपक की लौ की ओर नजर करने को कहें या दीपक को रोगी के निकट इस प्रकार रखें कि उसका धूंआ श्वास के द्वारा रोगी की नाक में जाता रहे। इस प्रकार करने से उसके ऊपर जो बला होगी दूर हो जायेगी।
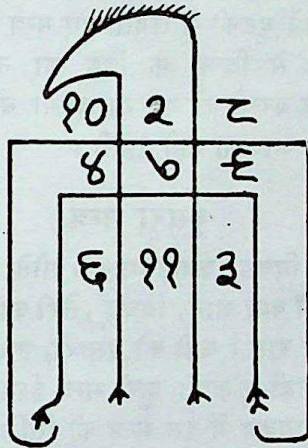
प्रेतादि को जलाने का दूसरा यंत्र

इस यन्त्र को भी काम में लाने के लिए उपरोक्त विधि से कागज पर स्याही से लिख कर बत्ती बना कर सरसों के तेल के दीपक में जलावें। रोगी को दीपक की लौ पर नजर रखने को कहें। रोगी के ऊपर जो कुछ बला होगी वह उसे दिखाई देगी तथा सब सत्य बतला कर भाग जायेगी।

बिच्छू काटे का मन्त्र

"ओम् हरि मरकटे मरकटाय स्वाहा"

यह हनुमान जी का मन्त्र है। किसी मंगलवार से इसका अनुष्ठान प्रारम्भ करके एक लाख मन्त्र जप करके इसे सिद्ध करना चाहिये। मन्त्र जप का दशांश हवन करना अनिवार्य है। हवन की भस्म को चुटकी से लगाते हुए मन्त्र का इक्कीस बार उच्चारण करने से बिच्छु के विष का नाश हो जाता है। आरोग्य होने पर बच्चों को गुड़ या चूरमा बाँट देने से आगे ऐसी दुर्घटना की आशंका नहीं रहती।

दूसरा मन्त्र

ॐ काला बिच्छू कंकड़ वाला। सोने का डंक रूपे का प्याला। मैं क्या जानूं, बिच्छू, तेरी जात। जन्म्या चौदस-मावस की रात। चढ़ी को उतारो, उतरती को मारो। साहब मंकड़ी फुंकारो, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

सूर्य या चन्द्रग्रहण में इस मन्त्र की सिद्धि का विधान है। अनुष्ठान के पश्चात प्रशाद के रूप में बच्चों को मिठाई वितरित करनी चाहिये। जब मन्त्र का प्रयोग करना हो तो जहां बिच्छु ने काटा है वहाँ मौली (कलावे) से बन्ध बांध दे, यदि समय पर कलावा न मिले तो चूल्हे की राख से ही मन्त्रोच्चारण से बन्ध लगा दे। इस मन्त्र को हर अमावस्या पर जगाते रहने से ज्यादा लाभ होता है।

अदीठ मन्त्र

ॐ नमो सिर कटा, नख फटा, विष कटा, अस्थि-मेदमज्जगत फोडा, फुन्सी, अदीठ, हुंबल रैल्याव रोग

रोंघन बाय जाय। चौंसठ जोगनी बावन वीर छप्पन भैरव रक्षा कीजे आया शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

अदीठ का अर्थ होता है न दिखाई देने वाला। कमर पर जो फोड़ा हो जाता है ग्रामीण उसे अदीठ कहते हैं। यह भयंकर व्याधि जान लेवा होती है। प्रायः यह फोड़ा मधुमेह के रोगियों के निकला करता है। अतः रोग की औषधि के साथ मन्त्र का प्रयोग अमोघ रहता है। ग्रहण काल में सिद्ध करके जब प्रयोग करें। अदीठ के रोगी को सामने बिठा कर मोर पँख से जमीन को साफ करलें तथा मन्त्र पढ़ते हुए सात बार झाड़ें, पृथ्वी की धूल सात बार लेकर फोड़े के चहुं ओर लगावें। यह क्रिया सात दिन तक चलती रहनी चाहिये।

कण्ठ बेल का मन्त्र

ओम् नमो कण्ठ बेल तुद्रु मद्रु माली, सिर पर जकड़ी वज्र की ताली। गोरखनाथ जागता आया। बढ़ती बेल को तुरन्त घटाया, जो कुछ बची ताहि मुरझाया, घट गई बेल बढ़त नही, बैठी तहाँ उठत रही। पकै, फूटे पीडा करे तो गुरू गोरखनाथ की दुहाई। ओम नमो आदेस गुरू को, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

पूर्ववत मन्त्र को सिद्ध कर लें। कण्ठ बेल के रोगी को चाकू की नोक से झाड़ते हुए जमीन पर लकीर खींचें। इक्कीस बार मन्त्र को बोलते हुए झाड़ें, चाकू से पृथ्वी पर इक्कीस लकीर खींचें। यह क्रिया सात दिन तक करें।

रोंधण बाय का मन्त्र

ओम नमो आदेस गुरू को, ओम नमो कामरूपदेस कामाक्षादेवी जहाँ बसें इस्माइल जोगी। इस्माइल जोगी के तीन पुत्री। एक तोड़े, एक बिछोड़े, एक रोंधन बाय तोडे। शब्द साँचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

पूर्वोक्त तरीके से सिद्ध करलें। इसमें मणिहार (चूड़ी पहनाने वाला) की मोगरी का उपयोग होता है। मंगलवार या शनिवार को मोगरी से मन्त्रोच्चारण सहित इक्कीस बार झाड़ दें।

धरण डिग जाने पर मन्त्र

ओम नमो नाडी नाडी नौ सौ नाड़ी, बहत्तर सौ कोठा चले अगाडी, डिगैना कोठा चलै ना नाडी। रक्षा करे जती हनुमन्त की आन, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

यह एक ऐसा रोग है जिसे मेडिकल साइंस नहीं मानती, इसके रोगी को भयंकर उदर पीड़ा होती है। पेट में मीठा-मीठा दर्द, भूख का न लगना, बार-बार टट्टी जाने जैसा शुबहा होना रोगी महसूस करता है। इसके लिए सूत का धागा लेकर नौ बार मन्त्र का उच्चारण करके गाँठ लगालें तथा उसे छल्ला जैसा बनाकर रोगी की नाभि पर रखदें। नौ बार उस पर मन्त्र का उच्चारण करके नौ बार फूंक मारें तो डिगी धरण ठिकाने आ जाती है।

दूसरा मन्त्र

ॐ ऊंची नीची धरनी श्री महादेव सरनी। टली धरण आंनू ठौर सत सत भाखै श्री गोरखरावा"।

पूर्वोक्त रीति से मन्त्र सिद्ध करलें। रोगी को सवा तीस माशे की अष्ट धातु की अँगूठी मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित करके धारण करा देने से धरण ठिकाने आ जाती है।

हूक निवारण मन्त्र

ॐ नमो सार की छुरी धार का बान, हूक न चले रे महमदा पीर की आन शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

मन्त्र को सिद्ध करलें। जिस रोगी को हूक चलती हो उस को सामने लिटाकर रोगी से हूक के स्थान पर हाथ रखवा लें तथा मन्त्र का इक्कीस बार उच्चारण करके चाकू से जमीन पर इक्कीस लकीरें खींचें तो हूक चलनी बन्द हो जाती है।

काँख में होने वाले फोडे (कखलाई) के लिए

ॐ नमो कखलाई भरी तलाई जहाँ बैठा हनुमन्ता आई पके ना फूटे चले ना पीडा, रक्षा करे हनुमन्तवीरा, दुहाई गोरखनाथ की। शब्द साँचा, पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। सत्यनाम आदेस गुरू को।

काँख में उठने वाली गाँठ कालान्तर में फोडे का रूप धारण कर लेती है। इसके निवारणार्थ उपरोक्त मन्त्र को पर्व काल में सिद्ध कर लेना चाहिये। रोगी के रोग स्थान को नीम की डाली लेकर मन्त्र से इक्कीस बार झाड़ना चाहिये। तत्पश्चात पृथ्वी की मिट्टी फोडे पर लगादे। यह क्रिया तीन दिन करने से आरोग्य लाभ होता है।

बच्चों के डिब्बा-पसली के दर्द का मन्त्र

ओम सत्यनाम आदेस गुरू को, डंख खारी खंखारा कहाँ गया, सवा लाख पर्वतो गया, सवा लाख पर्वतो जाय कहा करेगा, सवा भार कोयला करेगा, सवा भार कोयला कर कहा करेगा, हनुमन्तवीर नव चन्द्रहास खड्ग गढ़ेगा, नव चन्द्रहास खड्ग गढ़ कहा करेगा, गातवाडोंख पसली बाय काट कूट खारी समुद्र नाखेगा। जगद् गुरू की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

पूर्वोक्त विधि से मन्त्र को सिद्ध कर लें। तिल के तेल में सिंदूर मिला कर उसे मन्त्र से इक्कीस वार अभिमन्त्रित करके लगा दें।

स्त्रियों की स्तन पीडा (थनैला) का मन्त्र

वन में जाई अंजनी, जिन जाया हनुमन्त। सज्जा खब्बा ढाँकिया सब हो गया भस-मन्त ।।

औरतों के स्तन में बच्चे के सिर मारने से या अन्य कारण से चोट लगने से स्तन में पीड़ा होती है यदि इलाज ना किया जाय तो पककर आप्रेशन कराने तक की नौबत आ जाती है। जब ऐसी अवस्था बने तो इस मन्त्र से उपचार करना लाभप्रद रहता है। इस मन्त्र को स्त्रियां सिद्ध कर लें तो अधिक अच्छा रहे। साधक मन्त्र का उच्चारण करता रहे और रोगी स्त्री को कण्डे की राख को स्तन पर लगाने को कहे। सात बार यह क्रिया करनी चाहिये।

बालक की नजर झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो सत्य नाम आदेश गुरु को। ॐ नमो
नजर जहां पर पीर न जानी, बोले छल सो अमृत बानी।
कहो नजर कहां ते आई, यहां की ठौर तोहि कौन बताई।
कौन जात तेरो कहां ठाम, किसकी बेटी कहा तेरो नाम।
कहां से उड़ी कहां को जाय, अब ही बस करले तेरी माया।
मेरी जात सुनो चित लाए, जैसी होय सुनाऊं आय।
तेलिन तमोलिन चुहड़ी चमारी कायथनी खतरानी कुम्हारी।
महतरानी राजा की रानी, जाको दोष ताहि के सिर पड़े।
जाहर पीर नजर से रक्षा करे, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति,
फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।

विधि—एक बार मन्त्र पढ़ते हुए मोर के पंख से बालक के सिर से पृथ्वी तक झाड़ा दे तो नज़र दूर हो जाती है।

प्रेत बाधा निवारण मन्त्र

ओम नमो दीप मोहे, दीप जागे, पवन चले, पानी चले, शाकिनी चले, डाकिनी चले, भूत चले, प्रेत चले, नौ सौ निन्यानवें नदी चले, हनुमान वीर की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

किसी हनुमान मन्दिर में तेल का दीपक जलाकर सवा लाख जप करके मन्त्र सिद्ध कर लें, बाधित व्यक्ति को मोर पंख से एक सौ आठ बार झाड़ दें।

प्रेत बाधा (बच्चों की) का मन्त्र

काला भैरव पीली जटा, रात-दिन खेले चोपटा।
काला भसम मुसाण, जेहि मांगु तेहि पकड़ी आन।

डाकिनी, शाकिनी, पट्ट सिहारी,
जरख चढ़न्ती गोरख मारी।
छोड़ि छोड़ि री पापिनी बालक पराया,
गुरु गोरखनाथ का परवाना आया।

पर्व काल में मन्त्र को सिद्ध कर लें। किसी बालक के पीड़ित होने पर तीर से (नुकीले पदार्थ से) इक्कीस बार झाड़ दें तथा इक्कीस बार जल को अभिमन्त्रित कर बच्चे को पिला दें।

सर्व रोग निवारक हनुमत् मन्त्र

वन में बैठी बानरी जिन जाया हनुमन्त, बाला, डमरू, ब्याहि, बिलाई, आंख की पीड़ा, मस्तक पीड़ा, चौरासी-बाय, बली बली भस्म हो जाय, पके न फूटे, पीड़ा करे तो गोरखजती रक्षा करे। गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा सत्य नाम आदेश गुरु को।

इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए हनुमान मन्दिर में मूर्ति के समक्ष तेल का दीपक जला कर सवा लाख मन्त्र का जप करना चाहिए। यह अनुष्ठान इकतालीस दिन में पूर्ण कर लेने का विधान है। गुड़ का चूरमा भोग में रखना चाहिए। प्रयोग करने पर मोर पंख से एक सौ आठ मन्त्रों का उच्चारण कर झाड़ना चाहिये।

चूहे दूर करने का मन्त्र

पीत पीनानपर मूसे गान्धी, ले जहिंधो हनुमन्त तु बान्धि ए हनुमन्त लङ्का के राव, ऐहि कोने पैसे हो ऐहि कोने जाव।

चूहे अत्याधिक हानि कर जाते हैं इनसे बचने के लिए उपरोक्त मन्त्र काम करेगा। पर्व काल में मन्त्र सिद्ध कर लें तथा हल्दी

की पांच गांठ तथा कुछ चावल लेकर मन्त्र से एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करके जहां चूहे हानि करते हों डाल दें तो चूहे भाग जायेंगे हानि नहीं करेंगे।

चोरी के लिए कटोरी चलाने का मन्त्र

जम चले जम जाल चले, सात समुंद्र चले, सरंग राजा इन्द्र चले, पाताल राजा वासुकी नाग चले, अठत्तर सौ जोगिन चले, तैंतीस कोटि देवता चले, चला चल रे कंसा सुर हहरत घहरत, मठ मण्डप ठहरत, पकर चोर सिर काढुं तोरा, दुहाई सूरज देवता की, दुहाई तैंतीस कोटि देवता की दुहाई, ईश्वर महादेव गौरा पार्वती, नैना योगिनी, कामरू कामक्षा की।

कटोरी चलाने के लिए किसी भी कटोरी को काम में लिया जा सकता है मात्र उसका कांसे का और हल्के वजन का होना अनिवार्य है । यह कटोरी चार अंगुल चौड़ी होनी चाहिए तथा होली या दीपावली की रात्रि में अथवा सूर्य ग्रहण के समय कांसा धातु की बनवा लेनी चाहिए। इसके पश्चात् उपरोक्त मन्त्र का १००८बार जप करें और जप के समय काले उड़द कटोरी पर चढ़ाते रहें तो मन्त्र और कटोरी दोनों सिद्ध हो जाते हैं। जब कभी इस कटोरी से काम लेना हो तो पहले उसे निमन्त्रण देना चाहिए। शनिवार को निमन्त्रण देते समय पीले चावल व सुपारी कटोरी के सम्मुख रखकर कहें कि मैं तुम्हें न्यौता देने आया हूँ अमुक व्यक्ति के यहां चोरी हो गई है, कल रविवार को तुम्हें आना है । जहां से चोरी हुई है उसी जगह से कटोरी चलाई जाती है । वहां गाय के गोबर से चौका लगाकर स्थान को शुद्ध कर लें, लोबान की धूनी दें, इतर छिड़क दें । कटोरी को उस स्थान पर रख दें, फिर मन्त्र को उच्चारते हुए कटोरी

पर अक्षत फैंकें तो कटोरी चलने लगेगी। जिस रास्ते से चोर चोरी करके गया है वहां से ही चलकर जहां चोरी की वस्तु रखी है वहां जाकर ठहर जायेगी। जब तक कटोरी का चलना बन्द न हो तब तक उस पर मन्त्र पढ़-पढ़कर चावल फेंकते रहना चाहिए।

कटोरी चलाने का दूसरा मन्त्र

ओम का मन्त्र चलता चलै, सेत भयंकर चलै, पणनायक चलै, पिदर मादर चलै, कौन की शक्ति चलै, जती हनुमान की शक्ति चलै, वद्या चले, अरडती चलै, मरडती चलै, द्यौरती चलै, की लाऊ कीलती चलै, गाडरय उखलती चलै, चलि चलि हो भद्रनाम ऋषिवर तोस्यों मस्तक टूटे, धरनी चुवै, महादेव की आज्ञा फुरो, फणिद्र स्वाहा।

पूर्वोक्त रीति से सिद्ध करके जब प्रयोग करना हो तो अपने बाँये पैर का लहु निकाल कर छींटे दीजिए तथा काले उडद मन्त्र से मारते चलिए कटोरी चलकर चोरी रखे माल के पास जाकर रुक जाएगी।

दुकान की बिक्री अधिक हो

श्री शुक्लेमहा शुक्ले कमल दल निवासे श्री महालक्ष्मी नमो नमः, लक्ष्मी माई सत्त की सवाई, आओ चेतो करो भलाई, ना करो तो सात समुंद्रों की दुहाई, ऋद्धि सिद्धि खावोगी तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई।

महादेव के थडे (जहां दुकानदार बैठता है उस स्थान को कहते हैं) पर बैठ कर प्रथम मन्त्र की एक माला का जप करना चाहिए। इसके पश्चात् दुकान का लेन देन प्रारम्भ करना चाहिए। कई व्यक्तियों को यह प्रयोग कराया था आशातीत लाभ मिला।

स्वप्न सिद्धि के प्रयोग

तन्त्र शास्त्रों में स्वप्न सिद्धि के प्रयोगों का वर्णन मिलता है। इन मन्त्रों या यन्त्रों को सिद्ध कर लेने पर व्यक्ति को स्वप्न में उसके प्रश्न का उत्तर मिल जाता है। जिस समय स्वप्न हो उस समय उठकर लिख लिया जाये तो अति उत्तम रहे, अन्यथा बाद में उस उत्तर को भूल जाने की आशंका रहती है। मेरे एक निकटस्थ सज्जन ने (जिन्होंने इस प्रयोग को कर रखा है) मुझे अपना अनुभव बतलाते हुए कहा था कि प्रायः मैं बाद में उत्तर को या तो भूल जाता हूं या आंशिक तौर पर ही याद रख पाता हूँ।

स्वप्न सिद्धि के दो प्रयोग नीचे दिए जा रहे हैं। नीचे लिखे मन्त्र का इक्कीस हजार जप कर लेने पर स्वप्न में उत्तर मिलने प्रारम्भ हो जाते हैं सवालक्ष जप करने पर मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र को सिद्ध करने के बाद जब भी प्रश्न का उत्तर प्राप्त करना हो तो एक माला जप कर सो जाने पर उत्तर मिल जाता है।

स्वप्न चक्रेश्वरि स्वप्ने अवतर अवतर गतम् वर्तमानम् कथय कथय स्वाहा।

इसको सिद्ध करने के लिए जप स्थान को गाय के गोबर से लीप कर स्वच्छ कर लिया जाता है। गाय के घी का दीपक जला कर बताशे का भोग लगाया जाता है। मन में स्वप्न चक्रेश्वरी का ध्यान करके उसका आवाहन, प्रणाम आदि से सत्कार करके जप प्रारम्भ कर दिया जाता है। अनुष्ठान करते समय ब्रह्मचर्य पूर्वक उत्तर की ओर पैर करके सोना चाहिये तथा देवी को अर्पित किया भोग प्रातः कन्याओं को बांट देना चाहिये।

जिन लोगों ने मारूति नन्दन हनुमान जी को इष्ट मान रखा है वे नीचे लिखे मन्त्र की साधना करें।

नमो हनुमन्ताय आवेशय आवेशय स्वाहा ।

इस मन्त्र की सिद्धि किसी निर्जन हनुमान मन्दिर में करनी चाहिये। ऐसी सुविधा न मिले तो लाल चन्दन की अंगुष्ठ प्रमाण प्रतिमा बनवा कर प्राण प्रतिष्ठा करके घर के ही एकान्त कोने में साधना करें। साधना करने वाला पवित्र होकर लाल वस्त्र धारण करे, आसन एवं पूजन सामग्री सभी लाल हों।

जब तक जप करें गाय के घी का दीपक जलते रहना चाहिये, नैवेद्य गुड़ के चूरमे का हो। यह नैवेद्य मूर्ति के सम्मुख चौबीस घण्टे रखा रहे। अगले दिन फिर ताजा बना लें तथा पहले को किसी पवित्र पात्र में रख लें। नित्य ग्यारह माला का जप करें। ग्यारह दिन का यह अनुष्ठान है। जिस स्थान पर साधना करें वहीं भूमि शयन करना अनिवार्य है। अनुष्ठान के बाद नैवेद्य को किसी गरीब ब्राह्मण को दे दें या भूमि में दबा दें। मंगलवार से यह प्रयोग करना शुभ रहता है।

गण्डा देने का मन्त्र

बन्ध तो बन्ध मौला मुर्त्तजा अली का बन्ध, कीड़े और मकोड़े का बन्ध, ताप और तिजारी का बन्ध, जूडी और बुखार का बन्ध, नजर और गुजर का बन्ध, दीठ और मूठ का बन्ध, कीये और कराये का बन्ध, भेजे और भिजाये का बन्ध, पैरों और हाथन का बन्ध, बन्ध तो बन्ध मौला मुर्त्तजा का बन्ध, राह और बाट का बन्ध, जमीन और आसमान का बन्ध, घर और बाहर का बन्ध, पवन और पानी का बन्ध, कुंआ और पनिहारी का बन्ध, लोहा और कलम का बन्ध, बन्ध तो बन्ध मौला मुर्त्तजा अली का बन्ध ।

नौचन्दी की जुमेरात या ग्रहण काल में इस मन्त्र को सिद्ध कर लें, फिर जिसे गण्डा देना हो उसकी चोटी से एडी तक नीला डोरा नाप कर सात गांठ मन्त्र से लगावें तथा सवा पाव मिठाई मंगाकर मौला मुर्त्तजा अली के नाम से बच्चों का बांट दें। गण्डे को लोबान की धूप से धूपित करके रोगी के कण्ठ में बांध दें। यह प्रयोग प्रायः हर कार्य के लिए किया जाता है।

हाजरात

हाजरात के प्रायः मुसलमानी प्रयोग ही अधिक मिलते हैं। हाजरात का अर्थ होता है प्रत्यक्ष करना। इसके लिए किसी निष्पाप बच्चे के नख पर स्याही लगा कर उसमें देखने को कहा जाता है बच्चे को। इस प्रयोग के लिए साधक को चाहिये कि वह अर्ध-रात्रि को या प्रातः काल पश्चिम की ओर मुख करके बैठ जाये और मुसलमानों की भान्ति माला को उलटे तरीके से फेरे। हम माला के मनके को पीछे की तरफ करते हैं और मुसलमानों में आगे की ओर मनका सरकाया जाता है।

ख्वाजा खिज्र जिन्द पीरा, पिदर मादर दस्तगीर, मदद मेरी पीरान पीर करो, घोड़े पर भीड़ चढ़ो, हजरत पीर हाजिर सो हाजिर।

इस मन्त्र को नित्य एक माला जपने से इक्कीस रोज में यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। किसी भी जुमेरात से इसे प्रारम्भ किया जा सकता है। जप करते समय लोबान की धूप जलती रहनी चाहिये तथा शीरनी बांटनी चाहिये। जब मन्त्र का प्रयोग करना हो तो प्रातः आठ बजे से पहले बच्चे के अंगूठे के नख पर चमेली के तेल में काली स्याही मिलाकर लगा दें।

लड़के को उसमें देखने को कहें, जब लड़का कहे कि मुख दिखने लगा है तो साधक कहे कि मुख दिखना बन्द हो जाये,

चौगान नजर आये। चौगान आने पर कहे कि दो आदमी बुलाओ, उन के आने पर फिर दो आदमी बुलाओ कहे इस प्रकार आठ आदमी बुलवा लेने चाहियें। फिर झाड़ू वाले को बुलाकर झाड़ू लगवायें, भिश्ती को बुलवा कर छिड़काव करायें, दो कुर्सी और तख्त मंगवायें उन पर चादर और गद्दी बिछवावें।

जब यह सब हो जाये तो साधक पीरान पीर साहिब को मय मुन्शी के हाज़िर होने की प्रार्थना करे (मैं फलां आपका साधक आपको याद करता हूं, कृपा करके मुन्शी जी के साथ पधारें) उनके आने पर मुंशी जी से अर्ज करे कि पीरान पीर साहिब से मेरा यह सवाल अर्ज कर दो तथा उत्तर लड़के को दिखला दो।

उत्तर मिल जाने पर पीर साहिब को जाने की गुजारिश करे तथा तकलीफ के लिए मुआफी मांगे। लड़के के नख से स्याही पूंछ कर प्रयोग समाप्त कर दें।

हनुमान जी का जंजीरा

ओम हनुमान पहलवान, बरस बारह का जवान, हाथ में लड्डू मुख में पान, खेल खेल गढ़ लङ्का में चौगान, अंजनी का पूत राम का दूत, छिन में कीलौ नौ खण्ड का भूत, जाग जाग हनुमान हुंकाला, ताती लोहा लङ्काला शीश जटा डग डेरूं उमर गाजे, बज्र की कोठडी वज्र का ताला, आगे अर्जुन, पीछे भीम, चोर, नाहर, चम्पे ने सींव, अजरा झरै, भरया भरै, इस घट पिण्ड की रक्षा राजा रामचन्द्र जी, लक्ष्मण कुंवर, हनुमान करै।

विधि—इस मन्त्र की साधना किसी हनुमान मन्दिर में की जानी चाहिये। इक्कीस दिन तक नित्य एक माला का जप करना होता है। जप के समय हनुमान जी की पंचोपचार या

षोडशोपचार से पूजन करे, जप करते समय किसी प्रकार से डरना नहीं चाहिये। जप के पूर्ण होने पर एक नारियल और लाल कपड़े का तिकोना झण्डा मन्दिर पर चढ़ावे, थोड़ा हवन भी कर ले तो अति उत्तम, यह मन्त्र, भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी, नजर, टोने से शरीर की रक्षा करता है।

श्री भैरव मन्त्र

ॐ गुरु जी काला भैंरू कपिला केश, काना मदरा, भगवां भेस मार मार काली पुत्र बारह कोस की मार, भूतां हात, कलेजी खूंहा गेडिया जहां जाऊं भैंरू साथ, बारह कोस की रिद्धि ल्यावो, चौबीस कोस की सिद्धि ल्यावो, सूती होय तो जगाय ल्यावो, बैठा होय तो उठाय ल्यावो, अनन्त केसर की भारी ल्यावो, गौरां पार्वती की बिछिया ल्यावो, गेल्यां की रस्तान मोह, कुवे को पणिहारी मोह, बैठा बाणिया मोह, घर बैठी बणियानी मोह, राजा की रजवाड़ मोह, महिला बैठी रानी मोह डाकिनी को, शाकिनी को, भूतनी को, पलीतनी को, श्रोपरी को, पराई को, लाग कूं, लपट कूं, धूम कूं धक्का कूं, पलीया कूं, चौड़ कूं, चौगट कूं, काचा कूं, कलवा कूं, भूत कूं, पलीत कूं, जिन कूं, राक्षस कूं, बैरियों से बरी कर दे, नजरां जड़ दे ताला, इत्ता भैरव नहीं करे तो पिता महादेव की जटा तोड़ तागड़ी करे, माता पार्वती का चीर फाड़ लंगोट करे, चल डाकिनी, शांकिनी, चौड़ूं मैला बाकरा, देस्यूं मद की धार, भरी सभा में द्यूं आने में कहां लगाई बार, खप्पर में खाय मसान में लौटे, ऐसे काला भैंरूं की कुण पूजा मेटे, राजा मेटे राज से जाय,

प्रजा मेटे दूध पूत से जाय, जोगी मेटे ध्यान से जाय, शब्द सांचा ब्रह्म वाचा चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

विधि—इस मन्त्र का अनुष्ठान शनिवार या रविवार से प्रारम्भ करना चाहिये। एक पत्थर का तीन कोने वाला टुकड़ा लेकर उसको अपने सामने स्थापित करें उसके ऊपर तेल व सिन्दूर का लेपन करें पान और नारियल भेंट में चढ़ाना चाहिए। वहां नित्य सरसों के तेल का दीपक जलाना चाहिये, अधिक अच्छा रहे कि दीपक अखण्ड हो। नित्य इस मन्त्र को इक्कीस बार जपना तथा इक्कीस या इक्तालीस दिन जपना होता है इस प्रकार यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। नित्य जप के पश्चात् छार, छरीला, कपूर, केसर और लौंग की आहूति देनी होती है भोग में बाकला, बाटी बाकला रखना होता है। जब श्री भैरव देव दर्शन दें तो डरे नहीं भक्तिपूर्वक प्रणाम करना चाहिये तथा मांस मदिरा की बलि देनी चाहिये। वैष्णवजनों को जो मांस मदिरा प्रयोग नहीं करते उन्हें उड़द के बने पकौड़े, बेसन के लड्डू तथा गुड़ मिला दूध बलि में अर्पण करना चाहिये। मन्त्र में वर्णित सब कार्यों में यह मन्त्र काम करता है।

गुरु गोरखनाथ का सरभंगा (जंजीरा) मन्त्र

ॐ गुरु जी मैं सरभंगी सब का संगी, दूध मांस का इक रंगी, अमर में एक तमर दरसे, तमर में एक झांई, झांई में परछाई दरसे वहां दरसे मेरा सांई मूल चक्र सरभंग का आसन, कुण सरभंग से न्यारा है, वांहि मेरा श्याम विराजे ब्रह्म तंत से न्यारा है, औघड का चेला फिरूं अकेला, कभी न शीश नवाऊंगा, पत्र पूर परत्रंतरपूरूं, ना कोई भ्रांत ल्यावूंगा, अजर बजर का गोला गेरूं परबत पहाड़ उठाऊंगा, नाभी डंका करो सनेवा, राखो

पूर्ण बरसता मेवा, जोगी जुग से न्यारा है, जुग से कुदरत है न्यारी, सिद्धां की मुंछ्याँ पकड़ो गाड़ देम्रो धरणी मांही, बावन भैरूं, चौंसठ जोगन, उलटा चक्र चलावे वाणी, पेडू में अटके नाडा, ना कोई मांगे हजरत भाडा, मैं भटियारी आग लगा दियूं, चोरी चकारी बीज बारी, सात रांड दासी म्हारी, वाना धारी कर उपकारी, कर उपकार चल्यावूंगा, सीनो दावो ताप तिजारी, तोडूं तीजी ताली, खट चक्र का जड़ दूं ताला कदेई ना निकले गोरख बाला, डाकिनी शाकिनी भूतां जा का करस्यूं जूता, राजा पकडूं, हाकिम का मुंह कर दूं काला, नौ गज पाछे ठेलूंगा, कुंवे पर चादर घालूं, आसन घालूं गहरा, मंड मसाणा, धुनो धुकाऊं नगर बुलाऊं डेरा, यह सरभंग का देह, आप ही कर्ता आप ही देह, सरभंग का जाप सम्पूर्णसही, सन्त की गद्दी बैठ के गुरु गोरखनाथ जी कही ।

विधि—किसी एकान्त स्थान में धूनी जलाकर उसमें एक चिमटा गाढ़ देना चाहिये, उसी धूनी में एक रोटी पकाकर पहले उसे चिमटे पर रखें तत्पश्चात् किसी काले कुत्ते को खिला दें। धूनी के पास ही पूर्वाभिमुख आसन बिछा कर मन्त्र का इक्कीस बार जप करें। यह क्रिया इक्कीस दिन तक करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मात्र सिद्ध होने पर तीन काली मिर्चों पर मन्त्र को सात बार पढ़कर किसी ज्वर ग्रस्त रोगी को दिया जाये तो आरोग्य लाभ होता है। भूत प्रेत, डाकिनी, शाकिनी, नजर, झपटा होने पर सात बार मन्त्र से झाड़ने से लाभ मिलता है, कोर्ट कचेहरी में जाने पर मन्त्र का तीन बार जप करके जाने से कार्य सिद्धि होती है।

वशीकरण के मन्त्र

१. ॐ नमः कट विकट घोर रूपिणी अमुकं मे वशमानय स्वाहा।

भोजन शुरू करने से पहले उसे सात बार उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति को वश में करना हो सात दिन तक उसका नाम लेकर पहला ग्रास खाने से वह वश में हो जाता है।

२. ॐ वश्यामुखि राज मुखि स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित जल से सुबह-सुबह सात बार मुँह पर छींटे मारकर मुंह धोने से साथ ही साथ साध्य व्यक्ति का नाम लेने से वह वश में होता है।

३. ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय स्त्रीणं मोहय-मिति मिलि ठः ठः स्वाहा।

इस मन्त्र की नित्य एक माला जपने से 'साध्या' का वशीकरण होता है।

४. ॐ नमो आदि पुरुषाय अमुकं स्याकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा।

इस मन्त्र की नित्य एक माला जपने से 'साध्य पुरुष' वश में होता है।

५. ॐ नमो भगवते बगलामुखी कुमारी भगं मे प्रयच्छ ऐं ह्लीं स्वाहा।

इस मन्त्र की एक माला जपने से 'साध्या' की प्राप्ति होती है।

६. ॐ नमो भगवते बगलामुखी अमुकं सघन परिवारं मे वशमानय ऐं ह्लीं स्वाहा।

इस मन्त्र की नित्य एक माला जपने से साध्य' व्यक्ति वश में होता है।

प्रयोग में लाने से पूर्व इन मन्त्रों को किसी शुभ पव होली, दीवाली अथवा ग्रहण में १०८ बार जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए। हर वर्ष कम से कम एक दफा मन्त्र जप कर ताजा करते रहना चाहिए।

स्त्री वशीकरण मन्त्र

ओम नमो भगवते बगलामुखी अमुकं मे आकर्षय मे बशमानय, एकान्ते मम सन्निधि आगच्छ आगच्छ प्रसन्न-चित्तं मे समर्पणाय एवं मया सह रति क्रीडेत् ऐं ह्रीं स्वाहा।

इस मन्त्र को नवरात्रों में एकाग्रचित होकर नित्य १०८ बार नौ दिन जपने से सिद्ध हो जाता है फिर नित्य इस मन्त्र का मन ही मन जाप करने से इच्छित स्त्री मन्त्र जाप करने वाले की शय्या पर स्वयं आकर अपने आपको प्रसन्नचित्त होकर समर्पण कर देती है।

अन्य मन्त्र

क्लीं श्री मोहिनी अमुकं मम अनुकूलं मोहय मोहय कुरु कुरु स्वाहा।

नवरात्रों में नौ दिन तक नित्य एक माला जपने से यह सिद्ध हो जाता है। मन्त्र में अमुकं की जगह साध्य व्यक्ति का नाम उच्चारण करना चाहिए। अवश्य वश्य होगा।

दूसरे से अपनी इच्छा पूरी कराने का मंत्र

जिस व्यक्ति से अपनी इच्छा पूरी करानी है उसके पास जाते समय मन ही मन "क्रीं, क्रीं, क्रीं" इस मन्त्र का जाप करते रहने से वह आपकी इच्छानुसार कार्य करेगा।

पान खिला कर वशीभूत करने का मंत्र

ॐ कामरू कामक्षा की देवी, तहां बैठे इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी ने दिया चार पान, एकहि पान राजी भाजी, दूसर पान बिरह संजोती, तीसर पान व्याकुल करे, चारों पान जो मेरे खाय, मेरे पास से कहीं न जाय, फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा ॐ ठं ठं ठं ठं ठं।

इस मन्त्र को दीपावली अथवा ग्रहण के पर्व पर एक हजार की संख्या में जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए। इसके बाद इस मन्त्र से पान को सात बार अभिमन्त्रित करके इच्छित स्त्री को खिलाने से वह वश में हो जाती है।

अन्य मंत्र

ॐ चामुण्डे हुलु हुलु चुलु वशमानय अमुकीं स्वाहा।

इस मन्त्र को भी उपरोक्त विधि से सिद्ध कर लें। इस मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित किया हुआ पान इच्छित स्त्री को खिलाने से उसका वशीकरण होता है। मन्त्र में जहां "अमुकीं" लिखा है वहां इच्छित स्त्री का नाम बोलना चाहिए।

इसलामी वशीकरण मंत्र

(१) काला कलुआ काली रात, मैं जगावां आधी रात, सुत्ती को जगाके बैठी को उठा के, मेरे पास ले आणा, चले मंत्र फुरें बासा देखां कलुआ तेरे मंत्र का तमाशा।

इस मन्त्र का १०१ बार नित्य प्रति २१ दिन तक रात्रि के समय शुद्ध वस्त्र पहन कर जाप करने से यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

जप के दौरान रोज सुबह बच्चों को किशमिश या मीठे बताशे बांटा करें। जहां बैठ कर जप करें उसको शुद्ध जल से साफ कर लिया करें। क्योंकि यह मन्त्र इसलामी है अतः पश्चिम की ओर मुंह करके जाप करना चाहिए।

(२) **बिस्मिल्लाह रहमानउररहीम, रहीमा रहम कर करीमा करम कर, आली को नर्म कर, दुश्मनों को जेर कर, मुश्किल मेरी आसान कर, दिल हमारा कबूतर हो रहा है, घेरा पड़ा यासीन का, हमरा मतलब हमको मिले सदका मय्यूदीन का।**

इसको सिद्ध करने की विधि भी ऊपर के मन्त्र की तरह ही होती है।

पति वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो महायक्षिण्ये मम पतिं मे वशं कुरु-कुरु स्वाहा।

यह मन्त्र एक लक्ष जपने से सिद्ध होता है। प्रयोग के समय इसका १०८ बार जप कर लेना चाहिए।

गोरोचन, अपनी योनि का रक्त (रजःस्वला होने के समय निकलने वाला रक्त) और केले का रस इन तीनों को एकत्र कर उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिलक लगाने से पति वश में हो जाता है।

आकर्षण मन्त्र

ॐ कं हां हूं

इस मन्त्र को दीवाली या ग्रहण काल में ग्यारह सौ बार जप करके सिद्ध कर लें। किसी प्रयोजन के लिए जब किसी व्यक्ति के पास जाते समय मन ही मन इस मन्त्र का जप करते रहने से वह व्यक्ति जप कर्ता पर आकृष्ट होकर उसकी इच्छानुसार कार्य करता है।

पुतली वशीकरण

तांबे की एक मूर्ति ऊपर की आकृति के अनुसार शुभ योग में तांबे के पत्तर पर सुनार से खुदवा लें। मूर्ति के हृदय स्थान में जहां 'अमुकी' लिखा है वहां उस स्त्री का नाम लिखा जाए जिसे वश में करना है। नित्य मूर्ति का पूजन कुछ फूलों तथा रोली से करना चाहिए तथा अर्ध रात्रि में इक्कीस दिन तक प्रतिदिन नीचे लिखे मन्त्र की दस मालाएं मूर्ति के सामने बैठकर जपी जाएं। पूजा के फूलों में से एक फूल साध्या को देने या उसके ऊपर फेंकने से वह तत्काल वशीभूत होती है।

मन्त्रः—ॐ नमः ह्रीं कामनी अमुकीं मे वश मानय स्वाहा।

सर्वरोग-शोक-हर महामन्त्र

आज मैं अपने हृदय के भण्डार में से अपने स्वानुभूत सफल फलप्रद महामन्त्र को जनकल्याणार्थ 'कल्याण' के पाठकों के समक्ष उपस्थित कर रहा हूं। मैं पूर्ण आशा करता हूं कि कोई भी मानव यदि पूर्ण विश्वास युक्त हृदय से इसका प्रतिदिन जप करेगा तो वह हर प्रकार के दुःखों से छूटकर परम शान्ति को प्राप्त करेगा तथा धूर्त मिथ्या तान्त्रिकों से भी बचा रहेगा।

मैंने इस मन्त्र के द्वारा बड़े-बड़े तान्त्रिकों के मारण, उच्चाटन, वशीकरण के तन्त्रों से प्राण रक्षा पायी है। एक बार मुझे एक भयंकर रोग से भी इसी मन्त्र के द्वारा छुटकारा मिला है। मैं स्वयं एक चिकित्सक हूं एवं मेरा अन्य कई चिकित्सकों से भी घनिष्ट सम्बन्ध है। लेकिन मेरे रोग पर सभी दवाएं असफल रहीं और एक दिन भयंकर ज्वर एवं जाड़े के साथ गुप्तेन्द्रिय में जलन होने पर केवल दस मिनट इस मन्त्र का जप अगरबत्ती लगाकर किया। उसी समय से आज एक वर्ष बाद भी मैं पूर्ण स्वस्थ हूं।

मैंने अपने अतिरिक्त भी अनेक रोगियों पर तथा दुःखी व्यक्तियों पर इस मन्त्र के ताबीज का सफल प्रयोग किया है। जो भी भाई अपना या दूसरों का (परोपकार) दुःख दूर करना चाहें वे निम्न विधि से मन्त्र को सिद्ध करके लाभ उठावें।

महामन्त्र—'हरिॐ तत्सत्।' 'हरिॐ शान्तिः।'

सिद्ध करने की विधि

'हरि ॐ तत्संत्' मन्त्र का प्रातः काल स्नान आदि से निवृत्त होकर धूप आदि से स्थान को पवित्र कर १०८ बार पूर्ण विश्वास एवं एकचित्त से जप करें तथा संध्या को स्नान कर या केवल हाथ-पैर धोकर **'हरि ॐ शान्तिः'** मन्त्र का जप इसी विधि से

१०८ बार करें। इस प्रकार दोनों समय का जप लगातार २१ दिनों तक करें। २१वें दिन शुद्ध घृत, जौ, तिल, शक्कर तथा मधु से १०८ आहुतियाँ देकर शान्त स्थान में हवन करें। बस, मन्त्र की सिद्धि हो गई।

अब यदि इसको ताबीज में भरना हो तो प्रातः काल वाले **'हरि ॐ तत्सत्'** 'मन्त्र' को ऊपर तथा संध्या वाले **'हरि ॐ शान्तिः'** 'मन्त्र' को नीचे तथा बीच में केवल 'ॐ' शब्द सफेद कागज पर कुंकुम से लिखकर, उक्त मन्त्र को ७ बार बोलते हुए एवं भगवान् श्रीकृष्ण प्रभु का ध्यान तथा दुःख निवारण के लिए शक्ति देने की प्रार्थना करते हुए धूप देकर तांबे या चांदी के ताबीज में भर दें। तदनन्तर शरीर पर पुरुष दाहिने हाथ में, स्त्री बांयें हाथ में अथवा दोनों गले में धारण करें।

लाभ

इसके सिद्ध कर लेने के बाद आपको किसी भी धर्मसंगत उचित कार्य में—मुकदमा, रोग, लड़ाई, विवाह, गृहस्थी-संचालन, नौकरी, व्यापार आदि सम्बन्धी हर संकट-निवारण में पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। किन्तु पूर्ण विश्वास रखना आवश्यक है। फल-प्राप्ति के बाद एक नारियल प्रभु को अवश्य कहीं भी चढ़ाकर प्रसाद बांट दें।

चेतावनी

इस मन्त्र का वशीकरण, उच्चाटन, मारण, दूसरे के हित का नाश या अन्य किसी भी अनुचित कार्य में कदापि प्रयोग न करें। उसमें सफलता नहीं मिलेगी। वरन उल्टी हानि हो सकती है।

प्रेषक—स्वामी श्री सत्यानन्द 'हरि'

'कल्याण' से साभार

विषधर सर्प के क़ाटे का अचूक इलाज

प्रसिद्ध धार्मिक पत्रिका 'कल्याण' के फरवरी सन् १९६० ई० के अंक में इस विषय पर एक लेख छपा था जो हम पाठकों के लाभार्थ यहां ज्यों-का-त्यों दे रहे हैं।

"सन् १९४१ ई० की बात है, पूज्य बापू के आदेशानुसार स्वतन्त्रता के संग्राम में मैं लखनऊ डिस्ट्रिक्ट जेल में था। एक दिन हमारी बैरिक में रहने वाले हरदोई जिला के वयोवृद्ध सत्याग्रही ने (दुर्भाग्य से मैं उनका नाम भूल गया हूं, उन्हें अक्सर वैद्य जी कहा करते थे) बैरिक में रहने वाले करीब ८०-९० सत्याग्रही सज्जनों को एक जगह बैठाकर कहा—'आओ आज अपने साथियों को अपने अनुभवपूर्ण पीपल वृक्ष के चमत्कार की बात बतावें।" उन्होंने बताया कि संसार में आज तक काले नाग के काटे को अच्छा करने की कोई भी औषधि इतनी अच्छी नहीं ईजाद हुई जितना अच्छा पीपल है। उन्होंने यह भी कहा कि यह बात मैं सुनी हुई नहीं कहता, बल्कि लगभग सौ आदमियों को मैं स्वयं अच्छा कर चुका हूं, तब बताता हूं। उन्होंने बताया कि जब किसी को सर्प काट ले, तब फौरन काफी तन्दुरुस्त पांच बलवान् आदमियों को वहां ले जाओ। काटे हुए व्यक्ति को बैठा दो। एक-एक आदमी एक-एक पैर दबा लें, एक-एक आदमी दोनों हाथ पकड़ लें ताकि वह व्यक्ति, जिसे सर्प ने काटा है, बिल्कुल हिल-डुल न सके। पांचवां आदमी, उसी व्यक्ति के पीछे बैठकर मजबूती से उसका सिर पकड़ ले

ताकि सिर भी नहीं हिले, अब आप फौरन ही पीपल की एक ऐसी डाल तोड़कर मंगावें जिसमें बीस-पच्चीस हरे चमकदार पत्ते लगे हों। उनमें से ऐसे दो पत्ते मय डंठल के (नकुनों सहित) तोड़िए जिससे कि टूटा हुआ हिस्सा, जहां से दूध निकलता है, वह पत्ते का डंठल कानों में जा सके। आप पहले एक कान में देख कर काफी सावधानी से, जैसे कनखुदा मैल निकालता है, उसी तरह धीरे से डंठल कान में डालें। यदि सर्प ने काटा है तो ज्यों ही लगभग एक इंच डंठल कान के अन्दर जाएगा त्यों ही वह व्यक्ति जिसे सर्प ने काटा है, इतनी तेजी से चीखने-चिल्लाने लगेगा जैसे कोई उसे मारे डाल रहा हो। वह उठकर भागने, पत्ता पकड़ने या मूंड़ हिलाकर पत्ता बाहर निकालने के सैकड़ों प्रयत्न करेगा। इसी बीच दूसरे कान में भी उतना ही पत्ता डालकर अब शान्त बैठ जाइये। मरीज को रोने-चीखने-चिल्लाने दीजिये। अधिक-से-अधिक पांच मिनट में वह चिल्लाना बन्द कर देगा। और वह चिल्लाना तभी बन्द करेगा जब पत्ते सब विष खींच लेंगे। यदि चिल्लाना न बन्द करे तो पत्ते बदल दीजिये और पांच मिनट तक फिर दूसरे पत्ते लगा दीजिये। चाहे जैसे जहरीले सर्प का विष हो, ठीक दस मिनट में वह ठीक हो जाएगा। श्रीमान् जी ! हरदोई के वैद्य जी के इस प्रयोग को मैंने आकर किया और सन् ४१ से लेकर १७-१८ वर्षों में अब तक करीब ७० आदमियों को मैं अच्छा कर चुका हूं। अचूक प्रयोग है। यदि सर्प ने नहीं काटा है तो कान में पत्ता डालने पर वह चुपचाप बैठा रहेगा। यही परीक्षा है कि सर्प का विष नहीं है। सर्प के विष के अतिरिक्त अन्य विषों में यह पत्ता काम नहीं करेगा। पत्ता डालने वाले को खूब सावधान रहना चाहिये। रोगी की चिल्लाहट से घबराकर पत्ता हाथ से छोड़ नहीं देना चाहिये। अन्यथा, पत्ता अपने-आप कान में खिचकर चला

जाएगा और पर्दा फाड़ देगा। जहां से रोगी चिल्लाने लगे बस, वहीं से पत्ता न आगे जाने दें, न पीछे आने दें। दूसरे, कान से निकाले पत्तों को या तो जला दें या जमीन में खोदकर गाड़ दें; क्योंकि यदि कोई जानवर उन पत्तों को खा लेगा तो वह मर जाएगा। जिन सज्जनों को कोई भ्रम हो या जो विशेष जानकारी करना चाहें तो मुझे पत्र डालकर पूछकर भ्रम निवारण कर सकते हैं, किन्तु पूछने वालों को चाहिए कि वे जवाबी कार्ड भेजें और लिफाफे में उत्तर चाहें तो टिकट भेजें।"

—मेवालाल तार्किक, मु० पो० मूसानगर, जिला कानपुर

उक्त पत्र प्रकाशित होने पर कल्याण के लाखों पाठकों में से बहुतों ने इस पर प्रयोग किए और इसको सफल पाया। इस लेख में कुछ ऐसी बातें भी थीं जिनका स्पष्टीकरण आवश्यक था अतः लेखक को सैकड़ों पत्र इस सम्बन्ध में मिले। इन पत्रों में उठाई गई शंकाओं का निवारण करने हेतु उक्त लेखक ने एक पत्र सम्पादक 'कल्याण' को लिखा था जो 'कल्याण' के अगस्त सन् १९६० ई० के अंक में प्रकाशित हुआ। यह पत्र भी हम ज्यों-का-त्यों उद्धृत कर रहे हैं। पाठक इसे भी ध्यानपूर्वक पढ़ लें।

पीपल द्वारा भयंकर-से-भयंकर विषधर सर्प का अचूक इलाज—

"उपर्युक्त शीर्षक से मेरा एक लेख 'कल्याण' वर्ष ३४, अंक २ (फरवरी) सन् १९६० के पृष्ठ ७६६ पर पीपल-पत्र के द्वारा सर्प-विष नाश के प्रयोग के सम्बन्ध में प्रकाशित हुआ था। उसके बावत मेरे पास सैकड़ों पत्र पूछ-ताछ के लिए आये हैं। कुछ ऐसे पत्र भी आये हैं, जिनमें प्रयोग से पूर्ण लाभ होने की घटनाओं का उल्लेख है। इस सम्बन्ध में कई सज्जनों ने प्रश्न किए हैं, उनका उत्तर मैं यहां लिख रहा हूं। वे सज्जन अपने-अपने प्रश्नों का उत्तर समझ लें। स्थानाभाव से प्रश्न नहीं लिखे जा रहे हैं, उत्तर से ही प्रश्न का पता लग जाएगा।

(१) सर्प काटने के चाहे जितनी देर बाद भी यह प्रयोग किया जा सकता है। यदि रोगी जीवित है तो इस प्रयोग से उसका विषमुक्त होना निश्चित है।

(२) बेहोशी हो जाने तथा नाकी बैठ जाने के बाद भी यह प्रयोग काम करेगा, बशर्ते कि खून की चाल बन्द न हो गई हो। मैंने मूसानगर के श्री बद्रीप्रसाद जी की पुत्री पर सांप काटने के ६ घण्टे बाद प्रयोग किया था, उसकी नाकी बैठ गई थी, पर वह अच्छी हो गई और आज मौजूद है।

(३) रोगी को पांच ही आदमी पकड़ें—कम-ज्यादा नहीं, ऐसा कोई नियम नहीं है। अभिप्रायः इतना ही है कि रोगी किसी प्रकार भी हिल-डुल न सके, फिर चाहे कितने ही आदमी पकड़ें। पांच आदमियों के पकड़ने से प्रायः हरेक अंग पकड़ा जाता है, इसलिए पांच की संख्या लिखी गई थी।

(४) रोगी को लिटा कर या बैठा कर चाहे जैसे प्रयोग किया जा सकता है। पर मेरी समझ में **बैठा कर पत्ते डालने में अधिक सुविधा होगी।**

(५) मैंने अब तक काले सर्पों के काटे रोगियों पर ही यह प्रयोग किया है; क्योंकि इधर दूसरी तरह के सांप हैं ही नहीं। अतः मैं निश्चित नहीं बता सकता। आप प्रयोग करके देख सकते हैं।

(६) मैंने मनुष्यों पर ही इसका प्रयोग किया है। जानवरों पर कभी प्रयोग नहीं किया। इससे मेरा अनुभव नहीं है। किसी पशु को सांप काटने की घटना सामने आए तो आप प्रयोग करके देख सकते हैं।

(७) सर्प का विष उतारने का जैसा यह सिद्ध प्रयोग मैं जानता हूं, वैसा बिच्छू आदि अन्य जहरीले जन्तुओं के विषनाश

का मैं नहीं जानता। थोड़ा-थोड़ा जैसे और लोग जानते हैं, वैसा ही मैं भी जानता हूं।

(८) पीपल से कुछ पत्तों की एक डाली तोड़ लीजिए। डाली में जो पत्ते होते हैं उनमें प्रत्येक पत्ते के पीछे एक सींक के समान डंडी होती है। जब पत्ते डाली से तोड़ें तो उस सींक या डंडी के समेत ही तोड़ें। उसी डंडी या सींक की नोक को रोगी के कान में डालिये।

(६) आप रोगी के सामने बैठ जाइये। अपने दोनों हाथों में एक-एक पत्ता ले लीजिए और दाहिने हाथ के पत्ते की सींक रोगी के बाएं कान में और बायें हाथ के पत्ते की सींक रोगी के दाहिने कान में डालिए।

(१०) अनुमान से एक इंच डालने की बात लिखी थी। असल में कान के पर्दे तक नोक पहुंच जानी चाहिए। यदि नोक दूर होगी और जगह होगी तो रोगी चिल्लायेगा नहीं। वह न चिल्लाये, तब तक सींक को कान में डालते रहें। जब चिल्लाना शुरू करे, तब रोक दें।

(११) जब तक जहर कमर और सीने से ऊपर नहीं पहुंचेगा, तब तक पत्ता काम नहीं करेगा। अतः बंध बंधा होने पर यदि जहर रुका होता है तो पत्ता काम नहीं करता। किन्तु चाहे जितना ही बंध हो, धीरे-धीरे जहर बंध को पार करके कुछ देर में ऊपर जरूर आयेगा। जब पत्ता लगाने पर रोगी चिल्लाने लग जाए, तब उसी समय बंध खोल देना चाहिए। अन्यथा पत्ता बंध के ऊपर का ही जहर खींच सकेगा, बंध के नीचे का जहर ज्यों-का-त्यों रह जाएगा।

(१२) मैंने हरे पत्ते का ही प्रयोग किया है और मैं समझता हूं सूखा पत्ता काम नहीं करेगा।

(१३) जहर कमर और सीने के ऊपर चढ़ा या नहीं, इसको

परीक्षा के लिए नीम की पत्ती रोगी को चबवाइए। नीम की पत्ती कड़वी लगे और रोगी थूक दे तो समझिए जहर नहीं है। चबाता जाए तो जहर है। नीम में भी विषनाशक गुण है। रोगी को नीम की पत्ती चबवाने से जहर मरता है जहर मरते ही पत्ती कड़वी लगने लगती है। फिर रोगी उसे चबाता नहीं।

(१४) अपने स्थान में पीपल का पेड़ न हो तो जहां पेड़ हो, वहीं से डाली तोड़कर मंगवा सकते हैं।

(१५) पीपल के वृक्ष के नीचे रोगी को ले जाने की आवश्यकता नहीं है। जहां रोगी हो, वहीं डाली मंगवाकर पत्तों का प्रयोग कर सकते हैं।

(१६) सर्प काटने पर घाव नहीं होता। उसे यदि चीर दिया गया हो तो फिर उस जगह कुएं में डालने वाली लाल दवा (पोटाश परमेंगनेट) भर देनी चाहिए। दस-पांच दिनों में घाव आप ही ठीक हो जाएगा।

(१७) रोगी के ठीक हो जाने पर उसे एक से डेढ़ छटांक तक गाय के शुद्ध घृत में १०-१२ काली मिर्च पीसकर मिलाकर पिला दें और **कम-से-कम ८ घण्टे सोने नहीं देना चाहिए।**

(१८) मुझे विश्वास है कि इस प्रयोग से अवश्य लाभ होगा। बहुतों को लाभ पहुंचा है, यह मेरा अनुभव है। मैंने न तो कोई उनकी सूची बनाकर रखी है और न किस-किस को आराम हुआ, उनके नाम बताने की आवश्यकता ही है। आपको विश्वास हो तो प्रयोग करके देखिए। 'कल्याण' में प्रकाशित होने के बाद इस प्रयोग से लाभ होने के मुझे कई पत्र मिले हैं।

(१९) जिनको फिर भी कोई शंका हो वे मुझसे नीचे लिखे पते पर जवाबी कार्ड लिखकर पूछ सकते हैं। पर मुझको पत्र हिन्दी या अंग्रेजी में ही लिखना चाहिए।

—मेवालाल तार्किक, पो० मूसानगर (कानपुर) उ० प्र०

इस पत्र के साथ ही कल्याण के सम्पादक की निम्नलिखित टिप्पणी भी प्रकाशित हुई थी।

हमारे पास भी इस प्रयोग से लाभ होने के कई पत्र आये हैं। एक पत्र अभी हाल में श्री वीरसिंह जी चौहान, नया गांव, पो० खोड़ (शिवपुरी) का आया है, जिसमें लिखा है कि "यहां सेठ रामसेवक जी गुप्त की धर्मपत्नी को संध्या ६ बजे एक भयंकर काले सर्प ने डंस लिया। स्थानीय तथा बाहरी बहुत-से जानकार महानुभावों के सभी तरह के उपचार किये, पर कोई भी लाभ नहीं हुआ। उनको मृतक मान लिया गया। सब निराश हो गए। तब ईश्वरीय प्रेरणा से मुझे 'कल्याण' में प्रकाशित प्रयोग की बात याद आई। प्रयोग आरम्भ किया गया और करीब १४ पत्ते बदलने पर वह पूर्ण स्वस्थ हो गईं। समस्त विष उतर गया। जब रोगिणी ने स्वयं बतलाया, तब सुनकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ।

—सम्पादक

वर प्राप्ति में सहायक उपाय

कन्या को देखने के लिए वर पक्ष के जो लोग आते हैं कन्या पक्ष की ओर से उनके आतिथ्य का प्रबन्ध किया जाता है और चाय शर्बत जैसा कोई पेय पदार्थ और खाद्य पदार्थ पेश किया जाता है। यदि उन खाद्य या पेय पदार्थों में कोई अभिमन्त्रित वस्तु मिला दी जाये तो वर पक्ष के लोगों पर अनुकूल मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है। कुछ चीनी इलायची मिसरी आदि लेकर उस पर मन्त्र पढ़कर उसे चाय, शर्बत या मसाले में मिला देने से वर पक्ष की ओर से अनुकूल निर्णय ही होता है ऐसा देखा गया है (इलायचियों को यदि कन्या कुछ क्षण मुख में रख ले तो तन्त्र और भी प्रभावी हो जाता है) ऐसी खाने-पीने की चीजों को कन्या पक्ष के लोग भी साथ में बैठकर ले सकते हैं

इसमें कोई रुकावट नहीं होती। इसमें कोई बाहरी अखाद्य वस्तु नहीं मिलाई जाती जो किसी के स्वास्थ्य को हानिकारक हो। वर पक्ष में सभी प्रकार की मनोवृत्ति के लोग होते है। उनमें दुष्ट प्रकृति के अकारण मीन मेष निकालने वाले बाधा बिघ्न पैदा करने वाले भी हो सकते हैं। अभिमन्त्रित पदार्थ उन पर अनुकूल मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालने में सफल होता है और बाधा विघ्न नहीं पड़ने देता।

इसकी विधि यह है कि कोई शुद्ध हृदय वाला व्यक्ति (स्त्री या पुरुष) जो धार्मिक हो पूजा-पाठ करता हो कुछ चीनी, छोटी या बड़ी इलायची या मिसरी जो भी पढ़नी हो हाथ में लेकर उस पर मन्त्र पढ़े। स्नान किया हुआ हो, साफ कपड़े पहने हों जूता न पहना हो तथा दुर्गा माँ के चित्र के सामने बैठकर या खड़े होकर निम्न मन्त्र कम-से-कम सात बार या ज्यादा-से-ज्यादा इक्कीस बार पढ़े। हर बार मन्त्र पढ़कर पदार्थ पर फूंक मारता जाए। इस प्रकार वह पदार्थ अभिमन्त्रित हो जाता है। कोई भी अधिकारी व्यक्ति दुर्गा देवी का उपासक इस मन्त्र को कुछ हजार की संख्या में जप करके सिद्ध कर सकता है। सिद्ध मन्त्र का प्रभाव अधिक होता है।

मन्त्र इस प्रकार है—**ॐ क्लीं क्लीं (वर पक्ष) (कन्या का नाम) वश्यं कुरु कुरु स्वाहा**। यदि निर्णय वर के हाथ में है तो वर पक्ष के स्थान पर उसका नाम नहीं तो उसके पिता का या माता का, जिसके हाथ में निर्णय है, उसका नाम लो और कन्या का नाम लेकर मन्त्र पूरा कर लो। मान लो वर का नाम रामलाल है और कन्या का नाम शान्ती है तो मन्त्र इस प्रकार बनेगा। **ॐ क्लीं क्लीं रामलाल शान्ती वश्यं कुरु कुरु स्वाहा**।

ग्रामीण टोटके

नीचे कुछ ऐसे प्रयोग दिये जा रहे हैं जिन को तन्त्र शास्त्र मान्यता नहीं देता किन्तु उपयोगिता की दृष्टि से ये बहुत लाभकारी हैं।

१. जिन को पारी का बुखार आता हो वे किसी शनि या रविवार को घर से सात चावल के दाने लेकर अटोक (बिना बोले) चलें जहां आक वृक्ष का झाड खड़ा हो वहाँ पूर्वाभिमुख खड़े होकर एक चावल का दाना आक की जड़ में रखकर कहें कि ज्वरदेव आपको (शनि को प्रयोग करें तो रवि से प्रारम्भ करें, यदि रवि को करें तो सोम से शुरू करें) रविवार का निमन्त्रण है बिना बुलाये मत आना, दूसरा चावल रख कर कहें कि ज्वर देव आपको सोमवार का निमन्त्रण है किन्तु बिना बुलाये मत आना। यही क्रम पूरे सप्ताह के दिनों का नाम लेकर कह दें। फिर बिना बोले घर चले आवें। उस दिन के पश्चात बुखार नहीं आयेगा।

२. जिन्हें आधा शीशी का दर्द रहता है उन्हें चाहिए कि सूर्य निकलने से पूर्व घर से गुड़ की एक डली लेकर निकलें चौराहे पर आकर पश्चिम की ओर मुख करके खड़े हों तथा गुड़ की डली को मुंह से कई टुकड़े कर के वहीं फेंक दें और घर आ जायें। आप आश्चर्य करेंगे कि आपके सिर का दर्द समाप्त हो गया है।

३. अठारा रोग जिन औरतों को हो जाता है उनके बच्चे उत्पन्न होकर अथवा गर्भ में ही ऐंठ कर मर जाते हैं उन्हें चाहिए कि बेरी के पत्ते, आक के पत्ते, बबूल के पत्ते, नीम के पत्ते, पीपल के पत्ते और अरण्ड के पत्ते सात कुओं का जल, सात चौराहे की मिट्टी लेकर किसी भी रविवार को एक कोरे बर्तन में डालकर किसी बेरी के पेड़ के नीचे जाकर स्नान करे। अधिक अच्छा रहे यह प्रयोग शुक्ल पक्ष के रविवार को किया जाये। इससे अठारा रोग दूर हो जाता है और दीर्घायु बच्चे पैदा होते हैं।

४. गाय के गोबर से चौमुखा दीपक बनाकर उसे तिल के तेल से पूरित करके जला दें उसमें एक डली गुड़ भी डाल दें। इस दीपक को घर के मुख्य द्वार पर रख दें तथा जिस को नजर लगी है उसे देखने को कहें तो दृष्टि दोष समाप्त हो जायेगा।

५. कई बार बच्चा रोता ही रोता है, वास्तव में उसे कोई रोग नहीं होता मेडिकल साइंस के दृष्टिकोण से। किन्तु वह दूध पीना छोड़ देता है अर्थात माता के स्तन को मुंह तक नहीं लगाता। उस बच्चे की मां को चाहिये कि तीन, पांच या सात सुहागिन औरतों से अपने स्तन को थुकथुका ले तो बच्चा स्वस्थ होकर दूध पीने लगेगा।

६. क्वारी कन्या के हाथ का कता सूत (दशतार) लेकर एक हाथ लम्बा धागा बना लें तथा रविवार के दिन अठारा रोगी की दाहिणी पिण्डली में बांध दे तो रोग चला जाता है।

७. जिस औरत को लड़कियां ही लड़कियां पैदा होती हों उसे चाहिये कि किसी रविपुष्य योग में शेर और बिल्ली का नख लेकर एक ताबीज में मंढ़ा कर दाहिने बाजू में बांधे। ऐसा करने से नाल परिवर्तन होकर लड़का पैदा होता है।

मोहिनी विद्या के रहस्य

मोहनी विद्या या मेस्मेरिज्म के तत्त्वज्ञान से हमारे भारतीय ऋषि-महर्षि अपरिचित नहीं थे। पातंजल योगदर्शन के प्रथम सूत्र में ही यह बतलाया गया है—'योगश्चित्त वृत्तिनिरोधः'। चित्तवृत्तियों के निरोध का नाम ही योग है। मन का स्थिर करना ही इस शक्ति का मूल है। मेस्मेरिज्म जिससे बिल्कुल मिलती-जुलती दूसरी विद्या हिप्नाटिज्म है ये दोनों मन की एकाग्रता ही के खेल हैं और एकाग्रता से ही सब सिद्धियां प्राप्त होती हैं। मेस्मेरिज्म विद्या को दो भागों में विभक्त किया गया है—एक Curative Mesmerism अर्थात् रोग निवारण और दूसरा Phenomenal Mesmerism अर्थात् दिव्य ज्ञान। दोनों का एक दूसरे से घनिष्ट सम्बन्ध है। हमारे यहां मान्त्रिक चिकित्सक विभूति, चरणामृत, आशीर्वाद देकर और झाड़-फूंक कर मेस्मेरिक शक्ति का उपयोग करते आये हैं और अब भी करते हैं। अथर्ववेद मानसोपचार के मन्त्रों से भरा पड़ा है।

मनुष्य की जिस शक्ति से मेस्मेरिक क्रिया उत्पन्न की जाती है उसे अंग्रेजी में Will-power अर्थात् 'इच्छाशक्ति' कहते हैं। वेद में मन की अपूर्व शक्ति का वर्णन है। मनः संयम करने का अभ्यास करना, या एकाग्रता का अभ्यास करना ही मनोयोग है।

आधुनिक मेस्मेरिज्म और हिपनॉटिज्म

आधुनिक मेस्मेरिज्म का प्रचार हुए करीब १५० वर्ष हुए हैं। सन् १७३४ में मेस्मर नाम का व्यक्ति ऑस्ट्रिया के वीएना (Vienna) नगर में पैदा हुआ था। डाक्टरी विद्या पढ़कर वह चिकित्सा शास्त्र में बड़ा निपुण हो गया था। उसका व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली और आकर्षक था। एक बार एक पादरी को लोह चुम्बक को स्पर्श करके रोग दूर करते हुए देखने का अवसर मेस्मर को प्राप्त हुआ। बहुत-से रोगियों पर चुम्बक का आश्चर्य-जनक प्रभाव देखकर वह भी रोगों को चुम्बक से दूर करने लगा। एक दिन अकस्मात् एक रोगी के अंग से खून बहने लगा। उसके पास उस समय चुम्बक न था। उसने हाथ फेरकर खून बन्द कर दिया। उसी दिन से उसे विश्वास हुआ कि रोग-निवारक सामर्थ्य हाथों में है। उसने यह सिद्धान्त ढूंढ़ निकाला कि मनुष्य के हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग से विद्युत्-प्रवाह—अदृश्य शक्ति निकलती है जो रोगी के शरीर में प्रविष्ट होकर रोग निवारण करती है। इसका नाम उसने Animal Magnetism (विद्युत्प्रवाह) रक्खा। यूरोप में प्रथम ही मेस्मर ने इस विद्या का प्रचार किया था, अतएव उसके नाम पर ही इस विद्या का नाम मेस्मेरिज्म प्रचलित हुआ।

सन् १७८० में मेस्मर फ्रांस के पेरिस नगर में चला आया और यहां बड़े धूमधाम से उसकी चिकित्सा का प्रचार हुआ। बड़े-बड़े लोग मेस्मर के शिष्य हो गये। अन्धे, लंगड़े, लूले, पक्षाघात (लकवे) के असाध्य रोगी मेस्मर की चिकित्सा से निरोगी हो गये। राजघरानों में उसकी चिकित्सा की धाक जम गयी और सर्वत्र यूरोप में उसकी प्रसिद्धि हो गयी। मेस्मर के उत्कर्ष को वहां के नामी डॉक्टर सहन न कर सके और

उन्होंने ईर्ष्या से उसके विरुद्ध आन्दोलन किया कि मेस्मर ढोंगी है। फ्रेंच सरकार ने सन् १७८४ में इसका निर्णय करने के लिए कमीशन नियुक्त कियां। कमीशन में अधिकांश लोग जड़वादी थे। इस कारण उस कमीशन ने इस विद्या को मिथ्या बताया ई० सन् १८२६ में पुनः कमीशन नियुक्त हुआ, उसमें कुछ सत्यशोधक मेम्बर थे। इस कमीशन ने मेस्मर के सिद्धान्त की पुष्टि की और अदृश्य शक्ति को स्वीकार किया। परन्तु मेस्मर के अन्तिम दिन बड़ी दुर्दशा में व्यतीत हुए, यहां तक कि उसे देश निकाला दिया गया।

मेस्मर की मृत्यु के बाद जर्मनी और फ्रांस में इस विद्या का खूब प्रचार होता रहा और अमेरिका में तो प्रजासत्तात्मक राज्य होने से इसका और भी अधिक प्रचार हुआ।

ई० सन् १८३८ में लन्दन यूनिवर्सिटी कॉलेज के डॉक्टर इलियटसन (Dr. Elliotson) ने लन्दन में मेस्मेरिज्म का बहुत प्रचार किया। इलियटसन उस समय के नामांकित और बुद्धिमान् डॉक्टर माने जाते थे। इन्होंने ही विलायत में सर्व-प्रथम स्टेथोस्कोप (Stethoscope) का प्रचार किया था। डॉक्टर इलियटसन ने मेस्मेरिज्म से रोगियों को निद्रित अवस्था में लाकर बड़े-बड़े आपरेशन किये। इनके प्रयोगों से रोगी इतनी प्रगाढ़ निद्रा में चले जाते थे कि रोगियों को किंचितमात्र भी वेदना या दर्द का भान ही नहीं होता था।

उसी समय इनके प्रयोगों का हाल पढ़कर कलकत्ते में प्रेजीडेन्सी सर्जन डॉक्टर एसडेल ने भी मेस्मेरिज्म चिकित्सा आरम्भ की और रोगियों को मूर्छित करके वेदनाशून्य बड़े २६१ आपरेशन किये। सन् १७८० से १८५० तक मेस्मेरिज्म शास्त्र के उत्कर्ष का समय था। डॉक्टर लोग इस विद्या का मज़ाक उड़ाते थे, फिर भी इस शास्त्र की प्रगति होती रही।

इस समय तक क्लोरोफार्म का आविष्कार नहीं हुआ था। क्लोरोफार्म के आविष्कार होने से मेस्मेरिज्म का प्रचार कम हो गया। क्लोरोफार्म के सुंघाने से थोड़े ही समय में मनुष्य बेहोश हो जाता है और कुछ श्रम नहीं करना पड़ता, किन्तु मेस्मेरिज्म से किसी-किसी रोगी को गहरी निद्रा में लाने के लिए कभी-कभी दो घण्टे तक वेधक दृष्टि से रोगी पर प्रयोग करना पड़ता था और मार्जन करने पड़ते थे।

ई० सन् १८४१ में मैनचेस्टर के प्रसिद्ध डॉक्टर ब्रेड ने मेस्मेरिज्म के सिद्धान्तों का अध्ययन किया और सिद्ध किया कि मेस्मर का अदृश्य शक्ति के प्रवाह (Animal magnetism) का सिद्धान्त निरी कल्पना है। डॉक्टर ब्रेड का अनुभव यह हुआ कि दूसरों को प्रभावित करना या कृत्रिम निद्रा में लाना Suggestion या सूचना शक्ति पर निर्भर है। किसी मनुष्य की कोई चमकीली वस्तु पर निगाह जमवाकर नेत्रों के मज्जतान्तुओं को थकान ला देने की क्रिया से स्वाभाविक निद्रा के समान तन्द्रा उत्पन्न होती है। इस कृत्रिम निद्रा का नाम हिपनॉसिस (Hypnosis) है। इसी नाम के आधार पर हिपनॉटिज्म शब्द प्रचलित हुआ। हिपनॉटिज्म का प्रयोग करने वाले को हिपनॉटिस्ट (Hypnotist) विधायक या प्रयोगकर्ता कहते हैं।

मेस्मेरिज्म और हिपनॉटिज्म में भेद क्या है ?

मेस्मेरिज्म और हिपनॉटिज्म में इतना ही मात्र अन्तर है कि मेस्मेरिज्म में हाथ फेरकर और दृष्टि स्थिर करके निद्रा उत्पन्न की जाती है और हिपनॉटिज्म में सूचना देकर किसी चमकीली वस्तु पर पात्र की दृष्टि सधाकर कृत्रिम निद्रा लायी जाती है।

मेस्मेरिक और हिपनॉटिक अवस्था का विवेचन

कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं कि रात्रि को नींद में ही उठकर विविध कार्य करते हैं— पत्र लिखते हैं—लेख लिखते हैं और प्रातःकाल जागृत होने पर लेखादि तैयार देखकर आश्चर्य करते हैं कि यह कार्य किसने किया। उनको इस बात का ज्ञान नहीं रहता कि यह कार्य उन्हीं का किया हुआ है। इस स्थिति को Somnambulic (स्वाप्निक) अवस्था कहते हैं। मेस्मेरिक और हिपनॉटिक अवस्था में बहिर्मन सो जाता है और अन्तर्मन जागृत रहता है। अन्तर्मन पर कृत सूचना से वह अत्यधिक प्रभावित होता है। अन्तर्मन ही सब कुछ करता है।

हिपनॉटिक अवस्था में पात्र को कहा जाय कि 'तू कुत्ता है' तो वह भोंकने लगता है और कुत्ते जैसी चेष्टाएं करता है। उसे मिट्टी का तेल सुंघाकर कहा जाय कि यह गुलाब का इत्र है तो वह बड़े प्रेम से सूंघता है। कागज के टुकड़े मुंह में देकर कहा जाय कि ये मथुरा के पेड़े हैं तो बड़े स्वाद से उन्हें खाने लगता है। उसे आंखें खोलने की आज्ञा दी जाय और सूचना दी जाय कि देखो, तुम्हारे सम्मुख समुद्र है, तुम इसमें तैर सकते हो, तो वह कपड़े उतार कर तैरने लगता है। हिपनॉटिज्म में आज्ञा या सूचना देकर ज्ञानेन्द्रियों को भ्रम में डाल सकते हैं। मायिक दृश्य पात्र के सम्मुख उत्पन्न किये जा सकते हैं। इस अवस्था में उससे कहा जाय कि तू वक्ता है तो वह व्याख्यान देने लगता है। विरोधी सूचना देकर विविध व्यसन, मानसिक रोग, दुराचार आदि को दूर कर सकते हैं।

मेस्मेरिक सुषुप्ति अवस्था जब किसी सन्धिवात के रोगी में उत्पन्न हो जाती है जो जागृत अवस्था में जरा भी हाथ-पैर नहीं हिला सकता और उसे उस अवस्था में जोरदार सूचना

दी जाय कि तुमको बिल्कुल दर्द नहीं होगा, तुम अपने पैर अच्छी तरह हिला सकते हो, तो जागृत होने पर वह अपने पैर इसी तरह हिला सकेगा। जागृत होने पर उसको कोई पीड़ा नहीं मालूम होगी। इसी प्रकार चित्तभ्रम, उन्मादवायु, मज्जा-विकार, वातविकार, अर्द्धाङ्गवायु, हिस्टीरिया, न्यूरस्थेनिया (Neurosthenia), अनिद्रारोग, मस्तिष्क की निर्बलता, पेट के विकार, सन्धिवात, भिन्न-भिन्न प्रकार के दर्द, सामान्य ज्वर और सिर दर्द आदि रोग मेस्मेरिज्म से दूर किये जाते हैं।

मेस्मेरिज्म की छः अवस्थाएं—१ तन्द्रा, २ निद्रा, ३ प्रगाढ़ सुषुप्ति, ४ अनुवृत्ति, ५ दिव्य दृष्टि और ६ प्रत्यग्दृष्टि (अन्तर्दृष्टि) हैं।

साधारण पात्र तीन अवस्थाओं से अधिक प्रभावित नहीं होते। कोई-कोई उत्तम पात्र चौथी या पांचवीं अवस्था में चले जाते हैं और छठी अवस्था तो किसी विरले में ही उत्पन्न होती है।

मेस्मेरिज्म और समाधि

पांचवीं और छठी अवस्था उत्पन्न होने पर पात्र को दूरदर्शन और दूरश्रवण होने लगता है। वह भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों काल का उत्तर दे सकता है; यह समाधि अवस्था ही है। मेस्मेरिज्म की इस अन्तर्दृष्टि की अवस्था में पहुंचने पर पात्र के मन का शरीर से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। रोग निवारण एवं चमत्कारों के साथ ही यह विद्या योगाभ्यास का भी दिग्दर्शन कराती है। यदि कोई मनुष्य दूसरों पर प्रयोग न करके अपने प्राण पर ही प्रयोग करता रहे तो समाधि तक पहुंचकर आत्मानुभव कर सकता है।

मेस्मेरिज़्म और प्राणतत्त्व

योगशास्त्र में प्रसिद्ध प्राण और मेस्मेरिज्म ये दोनों तत्त्व एक ही हैं, इसलिये मेस्मेरिज्म विद्या को हम प्राण-विनिमय के नाम से कहेंगे। प्राण ही शरीर का जीव भूत आधार है। प्राण में विकृत होने से ही रोगादि दोष शरीर में उत्पन्न होते हैं और प्राण की शुद्धि ही बल, पराक्रम और शरीर के आरोग्य का आधार है।

प्राण-विनिमय (मेस्मेरिज्म) से विकृत प्राण को दूर करके शुद्ध प्राण का संचार किया जाता है। जिस मनुष्य का मन पवित्र हो और शरीर स्वस्थ हो वह दूसरों में शुद्ध प्राण का संचार कर सकता है। किसी मलीन शरीर और अशुद्ध विचार की वृत्ति वाले मनुष्य के स्पर्श से अपने प्राण की शुद्धता नष्ट होती है। इसीलिए उनका स्पर्श होने पर स्नान का विधान है। जड़ और चेतन सब पदार्थों में से प्राण की छाया निरन्तर निकला करती है। अतः दूसरों के पहने हुए वस्त्र, उपयोग में लायी हुई वस्तुएं, उच्छिष्ट अन्न-जल आदि भी नहीं ग्रहण करना चाहिए। छूत-छात और भक्ष्याभक्ष्य का विचार इसी सिद्धान्त पर अवलम्बित है। योगशास्त्र, तन्त्रशास्त्र और स्वरशास्त्र का मेस्मेरिज्म से घनिष्टतम सम्बन्ध है। मानवीय विद्युतप्रवाह के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए बड़े-बड़े डाक्टरों ने अनुभव और परीक्षा करके उसका समर्थन किया है।

गत कुछ दिनों में फ्रांस के बोर्डे (Bordeaux) नामक नगर में वैज्ञानिकों ने जो शोध किये हैं उनसे यह सिद्ध हो गया है कि मनुष्य के शरीर से एक शक्तिशाली प्रवाह निकलता है। प्रत्येक मनुष्य प्राणी की विद्युत्-शक्ति (Human magnetism) दूसरे

मनुष्यों से सर्वथा भिन्न प्रकार की होती है। यह विद्युत्-प्रवाह एक प्रकार का हर समय बहने वाला पदार्थ है और यह शक्ति एक प्राणी से दूसरे प्राणी में प्रवेश कर सकती है। इसी सिद्धान्त पर मेस्मेरिज्म और योगचिकित्सा की जाती है, जिसके उपचार में आंखों और अंगुलियों के द्वारा रोगी के शरीर में विद्युत्-प्रवाह प्रवेश कराया जाता है।

पुराने समय के महापुरुषों तथा देवताओं के चित्र और मूर्तियों के अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि हरेक के मस्तक के चारों ओर एक गोलाकार आलोक बना हुआ है। महात्मा बुद्ध की एक मूर्ति लंका में है जिसमें आलोक की किरणें साफ-साफ दिखलायी देती हैं। अथर्ववेद और महाभारत में इसका वर्णन पाया जाता है। प्राचीन समय से इसको लोग मानते आये हैं। संस्कृत में इसे तेजस् कहते हैं और अंग्रेजी में औरा (Aura)।

लन्दन के सेण्ट टॉमस हास्पिटल (St. Thomas Hospital) के भूतपूर्व विद्युत शास्त्री डॉक्टर डब्लू० जी० किलनर, बी० ए०, एम० बी० ने तेजस् (Aura) का अनुसंधान करके रासायनिक क्रिया द्वारा प्रत्यक्ष कर दिखाया है। डॉक्टर किलनर ने डायसायनीन पदार्थ प्रयुक्त कांच की तख्ती पर एक रासायनिक मिश्रण किया है। अंधेरे स्थान में उस कांच से मनुष्य की ओर देखने से उसके आस-पास चारों ओर छह-छह इंच चौड़ाई में आवरण दिखायी देता है। लौह चुम्बक के भी आस-पास आवरण (घेरा) दिखायी देता है। इसी प्रकार मनुष्य के हाथों से और नेत्रों से भी अदृश्य शक्ति निकलती है और मेस्मेरिज्म के प्रयोग सिद्ध होते हैं।

स्वस्थ तेजस् (Healthy Aura) बिल्कुल बेरंग होता है और यह असंख्य समानान्तर रेखाओं से बना हुआ होता है जो सारे

शरीर से बाहर निकलती रहती हैं। यह प्राण-तेजस् जब शरीर के बाहर निकलता है तो गरम जमीन में से जैसे हवा गरमी के दिनों में निकलती है वैसे ही यह ऊष्माशक्ति निकलकर दूसरों के शरीर में प्रवेश करती है। सूर्य से हमारे शरीर में प्लीहा (तिल्ली) प्राण को खींचती है और फिर सारे शरीर में नस-नाड़ियों में उसका संचार होता है। जब तक प्राण की धारा बराबर बहती रहती है और औरा की लकीरें समानान्तर रहती हैं तब तक मनुष्य हरेक बीमारी से बचा रहता है। जब प्राण में विकृति हो जाती है अथवा फर्क पड़ जाता है या प्राण की कमी हो जाती है तब रोग के कीटाणुओं से बचना मुश्किल हो जाता है। मेस्मेराइजर विकृत प्राण को शरीर से बाहर फेंककर स्वस्थ प्राण-तेजस् उसके शरीर में डालता है, यही प्राण-विनिमय-मेस्मेरिज्म-का तत्त्व है।

जिसके समीप होने से प्रसन्नता और शान्ति का अनुभव हो उसका 'औरा' सात्त्विक समझना चाहिये। जिनके समागम में आलस्य, द्वेष, भय और चिन्ता की वृद्धि हो उनका 'औरा' तामसिक समझना चाहिये।

विद्युतप्रवाह द्वारा जीवन रक्षा

बोर्डे नगर में एक स्त्री ने, जो इस सूक्ष्म शक्ति को अपने शरीर से अधिकता से निकाल सकती है, यह प्रयोग करके देखा कि किसी भी मृत मछली, मेढ़क, खरगोश, सूअर आदि छोटे जीव की लाश पर दो-तीन सप्ताह नित्यप्रति १५-२० मिनट इस शक्ति प्रवाह को डालने से बहुत काल तक वह मृत शरीर न तो सड़ता है और न दुर्गन्धित होता है वरं सूखकर वर्षों तक जीवित प्राणी-जैसा मालूम दिया करता है और उसके आकार में किसी प्रकार का भी विकार नहीं होता। सबसे अधिक

आश्चर्य जनक यह बात है कि वह लाश कभी भी सड़ती नहीं और ऐसा मालूम होता है कि मानो किसी वैज्ञानिक ने अन्य उपायों द्वारा उसे सड़ने से बचा रक्खा है।

बड़े-बड़े डॉक्टरों ने उस स्त्री के प्रयोग की परीक्षा करके उसका समर्थन किया है कि उस स्त्री के शरीर से निकलने-वाला सूक्ष्म प्रवाह लाशों में उत्पन्न होने वाले जीवन-नाशक छोटे-छोटे कीटाणुओं का, जो लाश को सड़ा कर दुर्गन्धित कर देते थे, नाश कर देता था, जिससे मृत शरीर में सड़न क्रिया पैदा नहीं होने पाती थी। सूक्ष्मदर्शक यन्त्र (Microscope) द्वारा इसकी परीक्षा भी की गयी। छः मृत मछलियां उस स्त्री को प्रयोग करने के लिये दी गयीं और छः वैसे ही अलग रख दी गयीं। जिन छः पर उस स्त्री ने प्रयोग किया था वे तो सूख गयीं और किसी प्रकार न सड़ीं, न दुर्गन्धित हुईं, और जिन छः पर प्रयोग नहीं किया गया था उनमें हजारों छोटे-छोटे जन्तु दिखलायी दिये। फिर उस स्त्री को इन सड़े हुए मृत शरीरों पर प्रयोग करने को कहा गया। लगभग पन्द्रह-बीस मिनट बाद प्रयोग के पश्चात् जब उन्हीं मृत जीवों को अणुवीक्षण यन्त्र से देखा तो हजारों जन्तु मर चुके थे। कुछ दिनों के प्रयोग से सब कीड़े मर गये। कितने ही मनुष्य इस प्रयोग द्वारा कुछ दिनों तक फूलों पर शक्ति का प्रवाह डालकर उन्हें ताजा रखते हैं और फूल बहुत दिनों तक नहीं मुरझाते।

इससे यह सिद्ध हो गया कि हमारे शरीर में से विद्युत्-प्रवाह निकलता रहता है और हाथों की अंगुलियों के अग्रभाग और नेत्रों के छोर से विशेष रूप से निकलता है। इसीलिये मेस्मेरिज्म में वेधक दृष्टि और हस्तसंचालन (मार्जन) पर विशेष जोर दिया गया है।

(१) लोह चुम्बक (Magnet), (२) क्रिस्टल (Crystal),

(३) फूल, तथा (४) मनुष्य के हाथ और चेहरे से जो तेजस् निकलता है उसे ऑडिलिक फोर्स (Odylic force) कहते हैं।

मेस्मेरिक और हिपनॉटिक शक्ति का विकास करने के नियम

१ आत्मविश्वास, २ दृढ़ संकल्प बल, ३ परमार्थ-बुद्धि, ४ वेधक दृष्टि, ५ स्वस्थ शरीर, ६ धैर्य और दृढ़ता, ७ शुद्ध आहार-विहार और ८ शान्त चित्त।

मेस्मेरिज्म और हिपनॉटिज्म में सिद्धहस्त होने के लिए उपर्युक्त गुण प्रयोगकर्ता में अवश्य होने चाहये। बिना आत्म-विश्वास और दृढ़ संकल्प बल के किसी भी कार्य में सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती।

आकर्षण शक्ति बढ़ाने का साधन

प्रातःकाल, जितना जल्दी हो सके, दृष्टि साधना का अभ्यास एकान्त कमरे में, अकेले, करना चाहिये। शालग्राम, शिवलिङ्ग अथवा दीपक की ज्योति पर ध्यान और नासिकाग्र अथवा त्रिकुटी देश में त्राटक करने का विधान हमारे योगशास्त्र में बतलाया गया है। दीपक की ज्योति पर या नासिकाग्र पर दृष्टि स्थिर करने से नेत्र विकार वाले व्यक्तियों को हानि पहुंचती है। शालग्राम और शिवलिङ्ग पर त्राटक करने से नेत्र ज्योति बढ़ती है। इस बात का सदा ध्यान रहे कि दूरी दो फुट से अधिक न हो और अभ्यास शनैः-शनैः बढ़ाया जाय, एकदम नहीं।

दर्पण त्राटक का अभ्यास

दीवाल पर दर्पण को टांग दो। उसके मध्य भाग में चवन्नी बराबर सफेद कागज काटकर चिपका दो। दर्पण से डेढ़ फुट दूरी पर पट्टे या कुर्सी पर स्थिरता से बैठ जाओ। आंखों को न अधिक तानो और न दृष्टि को ही नीचे गिराओ। दर्पण के कागज पर दृष्टि को स्थिर करो। पलकों को हिलने न दो। एक दृष्टि से टकटकी बांधकर देखते रहो, वृत्ति को इस तरह स्थिर करो कि तुम्हारा प्रतिबिम्ब कांच में न दीखने पावे। प्रथम दिन एक मिनट, दूसरे दिन दो मिनट, इस प्रकार कम-से-कम दस-पन्द्रह मिनट से आध घण्टे तक का अभ्यास बढ़ा सकते हो। आंखों को त्रास मालूम हो तो एक दिन का विश्राम देकर पुनः अभ्यास कर सकते हो। अभ्यास के बाद नेत्रों को ठण्डे जल से अच्छी तरह धो डालो। इस अभ्यास से निर्बल नेत्र सबल होंगे और आकर्षण बल बढ़ेगा। त्राटक के अभ्यास के समय निम्न मन्त्र का बार-बार चिन्तन करो—

मेरे नेत्रों के ज्ञानतन्तु बलवान् हो रहे हैं। मेरे नेत्र आकर्षक और प्रभावशाली हो रहे हैं। मैं निर्भय हूं। मैं सिर ऊंचा करके सबके सम्मुख देख सकता हूं। मेरी मनःशक्ति प्रबल है।

दीर्घ श्वास-प्रश्वास (Deep Breathing)

प्रातःकाल वायुसेवन के लिये जंगल में चले जाओ। किसी ऊंचे टीले या स्थान पर सरलता से सिर और छाती सीधी करके सुखासन से मेरुदण्ड को सीधा करके बैठ जाओ। मुंह बन्द करके नासिका से गहरा श्वास लेकर कुछ देर फेफड़ों में कुम्भक कर शनैः-शनैः प्रश्वास द्वारा खींची हुई वायु को बाहर निकाल दो। पुनः इसी प्रकार दस-बीस बार करो और यहां

तक अभ्यास बढ़ाओ कि कम-से-कम सौ बार इस श्वासोच्छ्वास क्रिया को आसानी से कर सको। पूरक, कुम्भक और रेचक करते समय निम्न विचारों पर मनन करो—

मैं सूर्य भगवान् से प्राणशक्ति को श्वसन क्रिया द्वारा शरीर में खींच रहा हूं। सूर्य किरणों द्वारा प्राणशक्ति मेरे रोम-रोम में प्रविष्ट होकर मुझे बल, उत्साह, जीवन शक्ति और आरोग्य प्रदान कर रही है। मेरे शरीर से विद्युत्प्रवाह, प्रकाश और किरण निकल रहे हैं। मैं सूर्य के सदृश तेजस्वी बन रहा हूं।

मार्जन करने की रीति (Passes)

मनुष्य के शरीर पर हाथ फेरकर रोग दूर करने की प्रथा प्राचीन काल से चली आती है। अपनी शक्ति को दूसरे में प्रवेश करने की क्रिया को मार्जन क्रिया अथवा पास करना कहते हैं। मार्जन दो प्रकार के होते हैं—विधान मार्जन और विसर्जन मार्जन।

हाथों की दोनों हथेलियों को जोर से रगड़ो, जब तक कि वे गर्म न हो जाएं। फिर हाथों को आगे-पीछे खूब हिलाओ और हाथों की मुट्ठियों को खूब जोर से बन्द करो और खोलो। अब दोनों हाथों की हथेलियों को और अंगुलियों को मिलाकर तथा अंगूठों को दूर रखकर एक तकिया रखकर कल्पना करो कि यह मनुष्य है। धीरे-धीरे कपाल, छाती, पेट पर से उतारते ले जाओ और पैर तक ले जाकर एक तरफ झटक दो (पास स्त्री के वायीं ओर और पुरुष के दाहिनी ओर देना चाहिये)। इस तरह हाथों को झिड़क देना चाहिये कि मानो किसी दूषित द्रव्य को शरीर से निकालकर बाहर फेंक रहे हो। शरीर से हाथ चार इंच दूरी पर रखना चाहिये। सिर से पैर तक एक बार ऐसा करना एक मार्जन कहलाता है। दूसरा मार्जन प्रारम्भ

करते समय हाथों को झटकने के बाद तुरन्त मुट्ठियां बन्द करके रोगी के सिर पर से ले जाना चाहिये और फिर उसी रीति से पास करना चाहिये। इस प्रकार पन्द्रह मिनट से आध घण्टे तक पास देने का अभ्यास कर लेना चाहिये।

कुछ दिनों के अभ्यास से अंगुलियों में सनसनाहट मालूम होने लगेगी और मालूम होने लगेगा कि अंगुलियों से सूक्ष्म प्रवाह निकल रहा है। कभी-कभी अधिक प्रभावित करने के लिये रोगी की अंगुलियों को स्पर्श करते हुए भी पास देना पड़ता है। एक पास में तीन मिनट तक समय लग सकता है और जल्दी-जल्दी भी पास दे सकते हैं। इस अभ्यास में सफलता प्राप्त होने पर मेस्मेरिज्म से रोगी की चिकित्सा की जा सकती है।

मेस्मेरिज्म का प्रयोग

प्रथम विधि

जिस मनुष्य या रोगी पर मेस्मेरिज्म करना हो उसको एक कुर्सी पर बिठा दें। दूसरी कुर्सी उसके सम्मुख एक फुट की दूरी पर रखकर प्रयोगकर्ता बैठ जाय। जिस पात्र पर प्रयोग किया जाय उसके दाहिने हाथ की अंगुलियों को अपने बायें हाथ से पकड़ कर नजर से नजर मिलावे और दृढ़ संकल्प करे कि पात्र को निद्रा आ रही है। उसे कहा जाय कि वह टकटकी बांधकर एक दृष्टि से पलकों को बिना झपकाये प्रयोगकर्ता के नेत्रों की तरफ देखता रहे। थोड़ी देर बाद आंखों को खुला रखना पात्र के लिये असम्भव हो जायगा। तब उसे आंखें बन्द करने की आज्ञा दी जाय। प्रयोगकर्ता पात्र को समझा दे कि जब आंखें भारी होकर बन्द होने लगें तब बन्द कर ले और स्वस्थता से सो जाय। पात्र को यह भी समझा दे कि उस पर मार्जन करके शक्तिपात किया जायगा।

इस प्रकार करने पर थोड़ी देर बाद पात्र की आंखें भारी हो जाएंगी और उसे ऊंघ आने लगेगी। इस समय प्रयोगकर्ता को हाथ धीरे से छोड़कर विधान मार्जन देना आरम्भ करना चाहिये। दस-पन्द्रह मिनट मार्जन देने से पात्र गहरी नींद में चला जायगा। कभी-कभी पांच-सात बार प्रयोग करने पर प्रयोग सफल होता है। किसी-किसी पर एक ही बार में प्रयोग सफल हो जाता है।

मेस्मेरिक अवस्था की परीक्षा

जिस पर मेस्मेरिज्म किया गया हो उस पात्र का हाथ ऊंचा उठा कर तुरन्त छोड़ दें। यदि लकड़ी के समान एकदम गिर पड़े तो जानो कि उस पर मेस्मेरिज्म का प्रयोग हो गया है। उसकी आंखों की पलक खोलकर देखो। यदि नेत्र ऊपर चढ़े हुए हैं, सफेद दीखने लगे हैं और बीच का तारा घूमने लगे तो समझो कि प्रभाव हो गया है।

यदि पात्र रोगी हो तो जिस अङ्ग में रोग हो उस स्थान पर पांच-सात मार्जन करके Suggestion—सूचना देनी चाहिये कि तुम्हारे जागृत होने पर सब दर्द दूर हो जायगा। यदि विश्व दृष्टि उत्पन्न करनी हो तो किसी वस्तु को मुट्ठी में बन्द करके उसके कपाल पर हाथ को रखकर कहो कि तुम सूक्ष्म शरीर से मेरे हाथ की वस्तु देख सकते हो—बतला सकते हो। जब वह बतला दे तो कमरे की अन्य चीजों के सम्बन्ध में उससे पूछो। फिर अन्य स्थानों में भेजकर वहां के समाचार प्राप्त करो। फिर विसर्जन मार्जन अर्थात् उलटे पैर से सिर की ओर से कर दो या जोर से ताली बजाकर जागृत कर दो। मार्जन करने के बाद हाथों को ठण्डे जल से अच्छी तरह से धो डालना चाहिये। मार्जन देते समय हाथ-पैर को न धोना चाहिये।

दूसरी विधि

पात्र को बिस्तरे पर शरीर शिथिल करके लेट जाने दो। सारे अङ्ग-प्रत्यङ्ग ढीले छोड़ने को कह दो। फिर नाक से श्वास-प्रश्वास करने को कहो और सिर से छाती तक मार्जन करते रहो, दस-पन्द्रह मिनट में ही वह मेस्मेरिक निद्रा में चला जायेगा।

हिपनॉटिज्म

पात्र को सीधा खड़े होने को कहो। उसको सारे शरीर को बिल्कुल शिथिल करने को कहो। उसके पीछे खड़े होकर दोनों हाथों को कन्धों पर रख दो और दृष्टि को मस्तक के निचले भाग पर गर्दन के ऊपर स्थिर करो। पात्र को समझा दो कि पीछे गिरना मालूम हो तो वह रोकने का प्रयत्न करे। उसे संभालकर नीचे लिटा दिया जायगा। अब धीरे-धीरे मृदु और प्रभावशाली भाषा में कहो, 'महाशय ! तुम गिर रहे हो—गिर रहे हो—पीछे गिर रहे हो—बड़े जोरों से पीछे की तरफ खिचे चले आ रहे हो, जब मैं अपने हाथों को तुम्हारे कन्धों से अलग कर लूंगा, तुरन्त ही तुम गिर जाओगे। गिर जाओगे—अवश्य गिर जाओ—गिर जाओ—भयभीत मत होओ।'

इस प्रयोग से पात्र पीछे गिर जायगा। उसे सँभालकर नीचे लिटा दो। इसी प्रकार उसके आगे खड़े होकर अपनी एक अंगुली पर उसकी दृष्टि जमवाकर 'तुम आगे झुक रहे हो—आगे झुक रहे हो' यह सूचना बार-बार देकर आगे की ओर गिरा सकते हो। इसी प्रकार सैकड़ों प्रकार के प्रयोग अपनी विल पावर से कर सकते हो।

डाक्टर ब्रेड का तरीका

किसी चमकीली वस्तु को पात्र की आंखों से जरा ऊपर मस्तक के पास ले जाकर उसे उस पर दृष्टि स्थिर करने को कहो और कहो कि 'तुम्हारी आँखें अब भारी हो रही हैं—बहुत भारी हो रही हैं। अब तुम आंखें बन्द कर लोगे, आँखें बन्द कर लो। अब तुम आंखें नहीं खोल सकते, नहीं खोल सकते—चाहे जितना प्रयत्न करो। सो जाओ, सो जाओ—सो जाओ, गहरी नींद में चले जाओ—गहरी निद्रा में चले जाओ—प्रगाढ़ निद्रा आ रही है—शान्त और मीठी नींद आ रही है।' इस प्रकार पात्र के हिपनॉटिक निद्रा-अवस्था में आने पर उसके दुर्गुण, दुर्व्यसन, सिर दर्द या अन्य बीमारी या कुटेव, मानसिक रोग को हिपनॉटिज्म से दूर कर सकते हो।

किसी की इच्छा के विरुद्ध हिपनॉटिज्म या मेस्मेरिज्म का प्रयोग नहीं किया जा सकता। हिपनॉटिज्म या मेस्मेरिज्म के प्रयोग को बार-बार करने से हानि नहीं पहुंचती। इस भ्रान्ति को पाठकों को दूर कर देना चाहिये। बालकों पर निद्रित अवस्था में हिपनॉटिज्म का प्रयोग करके सुसंस्कार उनके कोमल मस्तिष्क पर अंकित किये जा सकते हैं। स्त्री और पुरुष सब में मेगनेटाइज़ करने की गुप्त सामर्थ्य है। मनुष्य स्वार्थ को भूलकर मानव जाति के हितार्थ जितना अधिक इस शक्ति का सदुपयोग करेगा उतनी ही उसकी शक्ति बढ़ेगी। इस शक्ति का तमाशा दिखलाने में कभी उपयोग न किया जाय, न कौतूहल को निवारण करने के लिये उपयोग करें।

यह सदा स्मरण रक्खो कि विश्वशक्ति का मूल वही अनन्त शक्ति है जो सर्वशक्ति और सत्ता का उद्गम है। स्मरण रक्खो कि तुम उस अनन्त शक्ति के अंश हो। अपने मन और शरीर

को शुद्ध करके अपनी अन्तरात्मा का उस परमपिता परमात्मा के साथ, जो तुम्हारे हृदय गुहा के अन्तरतम प्रदेश में विराजमान है, सम्बन्ध स्थापित करो। यही सर्व यथार्थ शक्ति का स्थान है।

नेत्र बन्द कर लो, अपने भीतर गहरे उतरो, बाहर की स्थिति को शनैः-शनैः भूल जाओ। सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, अजर, अमर, नित्यशुद्ध, सत्-चित्त आनन्द स्वरूप नारायण का ध्यान करो। अत्यन्त गहरे में चले जाओ कि जहां आनन्दमय प्रकाश के दर्शन होने लगेंगे। यह प्रकाश सारे विश्व का जीवन है।

इस प्रकाश से तुम्हें जीवन-बल-तेज-आरोग्यदायक शक्ति प्राप्त होगी। नित्यप्रति आध घण्टे अभ्यास करने से कुछ ही दिनों में तुम्हारा शरीर आरोग्यदायक शक्ति से पूर्ण हो जायगा और तुम्हारे शब्द-स्पर्श मात्र से रोगी आरोग्य-सुख-शान्ति लाभ करेंगे। जो दृढ़ निश्चय और परम विश्वास के साथ नारायण को महावैद्य और उपचारकर्ता मानेगा और अपने को केवल निमित्त मात्र मानकर किसी भी रोगी पर उसके नाम पर हाथ फेर देगा तो रोग, शोक, चिन्ता आदि से पीड़ित मनुष्य को तत्काल शान्ति मालूम होगी और वह शीघ्र चंगा हो जायगा। यह हमारे आर्य शास्त्रकारों का मेस्मेरिज्म का सर्वोत्कृष्ट साधन है।

हमारे शास्त्र अन्तरात्मा की ओर अभिमुख होने को ही योग कला कहते हैं।

—·—

हजारों बार आजमाए हुए मन्त्र

सुख-प्रसव मन्त्र

किसी पात्र में थोड़ा-सा जल लेकर उसे निम्नलिखित में से किसी एक मंत्र द्वारा अभिमंत्रित करके उस जल को गर्भवती को पिला देने से शीघ्र ही सुखपूर्वक प्रसव हो जाता है। जल को अभिमंत्रित करने के लिए उसके ऊपर ११ बार मंत्र पढ़ना चाहिए।

१. **ॐ मुक्ताः पाशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्य्याणि रश्मयः।**
२. **ॐ मन्मथ मन्मथ वाहि वाहि लम्बोदर मुञ्च मुञ्च स्वाहा।**

यदि प्रसव वेदना अधिक हो और प्रसव होने में विलम्ब हो तो दशमूल का काढ़ा या अर्क दशमूल थोड़ा-सा लेकर तनिक गर्म करके उसको उपरोक्त में से किसी भी एक मंत्र द्वारा अभिमंत्रित करके गर्भवती को पिला दें। इसके प्रभाव से शीघ्र ही सुखपूर्वक प्रसव हो जायेगा। सूतिकागृह में बैठकर, '**अं उँ हां नमस्त्रिमूर्त्तये**' मंत्र का जप करें। इसके प्रभाव से गर्भवती को बिना क्लेश और तीव्र वेदना के प्रसव हो जायेगा।

बालग्रह-निवारक सिद्ध मंत्र

क्षीरगोपय गोरक्षी रक्षमाक्ष क्षमः क्षरः।

यह मंत्र किसी पर्वकाल या सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहण के समय

११०० बार जप करके फिर ११० बार हवन करके सिद्ध करलें। पाँच वर्ष की आयु तक के बच्चों की नजर भूत-प्रेत बाधा इत्यादि कष्ट दूर करने के लिए यह मंत्र पढ़ते हुए मोर पंख से बच्चे के शरीर पर झाड़ा दे दें।

बाल रक्षक मंत्र

ऐं ह्लीं क्लीं बालग्रहादि भूतानां बालानां शांतिकारकम्।
संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम्। क्लीं ह्लीं ऐं।

यदि कोई बालक अकस्मात मूर्च्छित हो जाये या उसे कोई अज्ञात रोग हो जाये तो उपरोक्त मन्त्र जपते हुए बालक के पूरे शरीर पर हाथ फेरने से अथवा कुश से जल के छींटे देने से बच्चे की मूर्च्छा, ज्वर, खांसी, अतिसार आदि रोग दूर होकर बालक स्वस्थ हो जाता है।

दरिद्रता निवारक मन्त्र

ऊँ नमः कालिके ह्लां ह्लीं ह्लँ स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र दरिद्रता, निर्धनता आदि दूर करने में प्रभावी सिद्ध होता है। प्रारम्भ में २१ दिन तक ११० बार प्रतिदिन इस मंत्र से हवन करें तत्पश्चात् नित्य ११०० की संख्या में मन्त्र का जप करते रहें। ऐसा करने से दरिद्रता दूर होकर निरन्तर सुख सम्पत्ति की वद्धि होती चली जाती है।

शत्रु वशीकरण मन्त्र

ॐ चामुण्डे क्रां ह्लीं ठं ठः ठः फट स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र शत्रु को वश में करने के लिए अमोघ है। इससे शत्रु भय एवं बाधा दूर होती है। प्रारम्भ में इस मन्त्र से तीन दिन तक ११० आहुतियां देनी चाहिए। तत्पश्चात्

११०० की संख्या में जप करके सिन्दूर को शुद्ध घृत में मिलाकर इसकी स्याही मे भोजपत्र पर इस मन्त्र को लिखकर शहद में डाल दें। जब तक भोजपत्र शहद के अन्दर डूबा रहेगा तब तक शत्रु कोई अनिष्ट नहीं कर सकेगा।

भोजन पचाने का मन्त्र

वातापिर्भक्षितो येन महोदधिः यन्मया खादतिम् पीतम तन्मेहगस्त्यो दरिष्यतु।

यह् मन्त्र अजीर्ण, पेट दर्द तथा अन्य उदर संबंधी विकार दूर करने में लाभदायक सिद्ध होता है। इस मन्त्र को पढ़ते हुए सात बार अपने हाथ की उदर पर दाहिनी ओर से नाभि के ऊपर से होते हुए बांई ओर को नीचे तक फेरें। इस उपाय से खाया हुआ भोजन शीघ्र पच जाता है।

चिन्ता निवारक मन्त्र

ॐ वं वं वं नमो रूद्रेभ्यो क्ष्रं क्ष्रां क्ष्रीं स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र संकटापन्न एवं चिन्ताग्रस्त अवस्था को दूर करने के लिए प्रभावी सिद्ध होता है। इस मन्त्र का प्रतिदिन एक माला (१०८ बार) जप करते रहें। ऐसा करने से किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं सतायेगी।

चिन्ता निवारक अन्य मन्त्र

ॐ हं शं शां ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।

उक्त मन्त्र भी चिन्ता निवारण के लिए लाभदायक है। प्रति दिन मन्त्र का जप तब तक करते रहें जब तक मन लगे। ऐसा करने से सभी प्रकार की चिन्ताएं दूर होकर मन प्रसन्नचित्त हो जाता है।

शिशु बाधा निवारक मन्त्र

ॐ भैरवाय वं वं वं ह्रां क्ष्रौं नमः ।

यह शिशुओं की बाधा निवारण के लिए अमोघ मन्त्र है। पांच वर्ष तक की आयु के शिशु यदि किसी रोग, टोना, टोटका आदि से पीड़ित हों तो शिशु की मां के बांए पैर के अंगूठे को एक छोटे ताम्रपात्र में रखकर धो लेना चाहिए। तत्पश्चात् उस जल को उपरोक्त मन्त्र से ११० बार अभिमन्त्रित करके मन्त्र पढ़ते हुए पान के पत्ते या कुश से जल को शिशु पर छींटे दें। साधारणतया एक ही बार के प्रयोग से शिशु स्वस्थ हो जाता है। यदि कठिन बाधा हो तो यह प्रयोग ३ दिन, ७ दिन या ९ दिन तक करें।

सर्वकार्य सिद्धि कारक मन्त्र

ॐ नमो हनुमते सर्वग्रहान् भूत भविष्यद्वर्तमानान् दूरस्थ समीपस्थान् छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि सर्वकाल दुष्टबुद्धानुच्चाटयोच्चाटय परबलान् क्षोभय क्षोभय मम सर्वकार्याणि साधय साधय। ॐ नमो हनुमते ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं फट। देहि ॐ शिव सिद्धि ॐ ह्रां ॐ ह्रीं ॐ ह्रूं ॐ ह्रैं ॐ ह्रः स्वाहा।

उपरोक्त मंत्र सब प्रकार के कार्यों की सिद्धि के लिए प्रयोग किया जाता है। मन्त्र सिद्ध करने के लिए हनुमान जी के मन्दिर में जाकर हनुमान जी की पंचोपचार द्वारा पूजा करें और शुद्ध-घृत का दीपक जलाकर भीगी हुई चने की दाल एवं गुड़ का प्रशाद लगाकर उपरोक्त मन्त्र का जप करें। सात्विक कार्य के लिए एक माला जप प्रतिदिन ११ दिन तक करें और अन्त में दशमांश हवन करें। मारण, उच्चाटन आदि तामसी

कार्यों के लिए अर्द्ध रात्रि में शांत वातावरण में लाल वस्त्र धारण करके संयम के साथ एकाग्रचित्त होकर ११ दिन तक १००० जप नित्य करें और अन्त में दशमांश हवन करें।

दाम्पत्य कलह निवारक मन्त्र

आजकल जहां देखो वहीं पति-पत्नी एक दूसरे से असन्तुष्ट नजर आते हैं, आपस में तनाव, कलह और मन मुटाव बना रहता है। इस मनमुटाव को समाप्त करने और विशुद्ध प्रेम प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित मन्त्र का प्रयोग करें। इस मन्त्र की एक माला प्रतिदिन २१ दिन तक फेरें।

मन्त्र—ॐ कं कं ज्ञं ज्ञः मम······वश्यं कुरू कुरू स्वाहा।

मम·· वश्यं के बीच में पति पत्नी कहे और पत्नी पति कहे। इससे लाभ अवश्य होगा।

बन्ध्या के सन्तानोत्पत्ति के लिए मंत्र

जिस स्त्री के सन्तान नहीं होती उसे बन्ध्या कहते हैं। ऐसी स्त्रियां सन्तान की उत्पत्ति के लिए यह उपाय करें। जिस समय वे रजस्वला हों उन दिनों पलाश वृक्ष का एक पत्ता लेकर किसी गर्भवती स्त्री से कहें कि वह अपने स्तन के दूध की कुछ बूंदें उस पर टपका दें। इसके बाद बन्ध्या स्त्री उस पत्ते को चबा-चबा कर खा जाये। यह क्रिया एक सप्ताह तक करें अर्थात् सात पत्ते सेवन करें। सेवन करते समय पत्ते पर निम्नलिखित मन्त्र १-१० बार पढ़ लें ताकि पत्ते में अलौकिक शक्ति उत्पन्न हो जाये।

ॐ नमः सिद्धि रूपाय अमुकोम् पुत्रवतीम् कुरू कुरू स्वाहा।

यदि स्त्री स्वयं इस मन्त्र का जप कर रही है तो उसे 'अमुकोम्' के स्थान पर 'मम' कहना चाहिए और यदि कोई अन्य व्यक्ति

इस मन्त्र का जप करे तो उसे 'अमुकोम्' की जगह बन्ध्या स्त्री का नाम पढ़ना चाहिए। इस औषधि के सेवनकाल में स्त्री शोक एवं चिन्तादि का परित्याग करके प्रसन्नचित्त रहे तथा जिस दिन वह रजस्वला हुई थी उससे चौदहवें से लेकर अठारहवें दिन के बीच में पतिसंग करे।

काकबन्ध्या दोष निवारक मंत्र

जिस स्त्री के एक बार सन्तान होकर दुबारा गर्भ नहीं ठहरता उसे काकबन्ध्या कहते हैं। रविवार को पुष्य नक्षत्र में अश्वगंधा की जड़ उखाड़ कर पानी से धोकर एक तोला जड़ सिल पर पीसकर थोड़े से दूध में औटाकर काक बन्ध्या स्त्री को प्रतिदिन उपरोक्त मात्रा में एक सप्ताह तक सेवन करायें। प्रतिदिन इस दूध पर नीचे लिखा मन्त्र ११० बार पढ़कर तब यह अभिमन्त्रित दूध पिलाना चाहिए।

ॐ नमो शक्तिरूपाय अस्या गृहे पुत्रम् कुरु कुरु स्वाहा।

इसके बाद ऐसी स्त्री पति संसर्ग करे। इससे उसका काक बन्ध्या दोष नष्ट हो जायेगा और उसके दीर्घजीवी सन्तान उत्पन्न होगी।

ढोरों का दूध बढ़ाने का मंत्र

ॐ नमो हुंकारिणी प्रसव ॐ शीतलाम्।

गाय, भैंस आदि दुधारू पशुओं के चारे को इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करके खिलाने से उनका दूध बढ़ जाता है।

माता भैरवी का मंत्र

ॐ क्षौं क्षौं क्षौं क्षौ क्षौ यट।

उपरोक्त मन्त्र शुद्ध विचार के साथ माता भैरवी का ध्यान करके ५०१ बार नित्य जपें। इससे परिवार में मंगल एवं परम शान्ति का वातावरण व्याप्त होता है और साधक की हर प्रकार की पारिवारिक कलह दूर होती है।

भूत-प्रेतादि नाशक मंत्र

ॐ नमो नरसिंहाय हिरण्यकश्यपुवक्षोविदारणाय त्रिभुवन व्यापकाय भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी-कुलोन्मूलनाय स्तम्भोद्तदाय समस्त दोषान हर हर विसर विसर पच पच हन हन कम्पय कम्पय मथ मथ ह्रीं ह्रीं फट् फट् ठः ठः एह्यहि बज्र श्राज्ञापयति स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र नृसिंहदेव का भूत-प्रेतादि नाशक अमोघ मन्त्र है। इस मन्त्र का नियमपूर्वक जप करने से हर प्रकार की भूत-प्रेतादि बाधा और भय दूर होता है। भूतादि का आवेश भी सम्पूर्ण रूप से नष्ट हो जाता है।

वाग्वादिनी देवी का मंत्र

ॐ ऐं वद वद वाग्वादिनी मम जिह्वाग्रे स्थिराभाव सर्वसत्ववशंकरि स्वाहा।

यह वाग्वादिनी देवी का मन्त्र है। प्रतिदिन ब्रह्म मुहूर्त में कुश के आसन पर बैठकर पीले वस्त्र पहनकर शुद्ध घृत का दीपक जलाकर रूद्राक्ष अथवा हल्दी की गांठ की माला से, भगवती का स्मरण करके इस मन्त्र का जप करें। यह मन्त्र केवल ४१ दिन तक नित्य ११० की संख्या में जपने से सिद्ध हो जाता

है। मन्त्र सिद्ध होने पर साधक की वाणी में माधुर्य और ओज आ जाता है। उसको भविष्य की बातों का भी ज्ञान प्राप्त हो जाता है। सभी प्रकार के दुखों और संकटों से छुटकारा मिल जाता है। इसक शत्रु भी शत्रुता त्यागकर उसके मित्र बन जाते हैं।

अन्नपूर्णा देवी का मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं क्लीं लं अन्नपूर्णायं भवान्यै स्वाहा।

यह मन्त्र अन्पूर्णा देवी का मन्त्र है। इस मन्त्र की विशेषता यह है कि इसे सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है फिर भी इससे प्राप्त होने वाला प्रतिफल अमूल्य है। इस मन्त्र का जप अन्नपूर्णा देवी का ध्यान करते हुए प्रतिदिन ११ बार करें। जप नियमित चलते रहना चाहिए। इससे साधक की निर्धनता, दीनता दूर होकर उसे ऋण से मुक्ति मिलती है और उसके धन-धान्य आदि में वृद्धि होती है जिससे उसका जीवन सुख से व्यतीत होता है।

यदि उपलब्ध हो सके तो माता अन्नपूर्णा का चित्र अपने सामने रखकर भक्तिभाव से माता से प्रार्थना करते हुए मन्त्र का जप किया जाये।

□□

टेली-रेसपान्स पावर

आपके शरीर में छुपी हुई वह अदृश्य शक्ति जिसके द्वारा आपकी इच्छित प्रत्येक वस्तु आपको मिल सकती है, जिसके द्वारा आप किसी को भी अपने वश में कर सकते हैं, जिसके द्वारा कौड़िया, पासे और ताश भी आपकी इच्छानुसार पलट जाते हैं, इसी शक्ति को जाग्रत करने की शिक्षा देने वाला रहस्यमय वैज्ञानिक कोर्स जो अमेरिका में आज भी 850 रुपये का बिक रहा है।

हिप्नाटिज्म के चमत्कार

इस पुस्तक से घर बैठे सम्मोहन विद्या सीखकर स्त्री-पुरुषों का मन मोह लेना, आँखें बन्द करके हजारों मील की दूरी पर घट रही घटनाओं को देख लेना, लोगों की बीमारियाँ व कष्ट दूर कर देना आदि कार्य कर सकते हैं। अनेकों चित्र।

चमत्कारिक मन्त्र, तन्त्र और टोटके

लेखक--के० ए० दुबे 'पदमेश'

तन्त्र विद्या तथा ज्योतिष के प्रकाण्ड विद्वान तथा 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' के स्थायी लेखक पदमेश जी ने इस पुस्तक में ऐसे मन्त्र, तन्त्र, ताबीज और टोटके आदि दिये हैं जिनसे आपके बिगड़े काम बन सकते हैं समस्त मनोकामनाएँ पूरी हो सकती हैं।

अलौकिक शक्तियां

घरेलू साधनाएं जिनके द्वारा आप रहस्यमयी अलौकिक शक्तियों के स्वामी बनकर लोगों को अपने वश में कर लेना, मृत आत्माओं को बुलाकर उनमें से बातचीत करना, दिव्य दृष्टि प्राप्त करके वर्तमान, भूत व भविष्य की बातें बता देना आदि चमत्कारिक कार्य कर सकते हैं। विघ्न बाधाएं दूर करके मनोकामना पूर्ति के लिए यन्त्र, मन्त्र और तन्त्र आदि भी दिए हैं। अनेकों चित्र।

वर्ल्ड बुक कम्पनी, 301-चावडी बाजार, दिल्ली-6

सर्व मनोकामना पूरक अनमोल पुस्तकें

विद्वान कर्मकाण्डी ब्राह्मणों की लिखी हुई एकदम शुद्ध और प्रामाणिक उपासना सम्बन्धी पुस्तकें

बटुक भैरव साधना

बटुक भैरव को आपदुद्धारक कहा जाता है। किसी बैरी के पीछे लग जाने, झगड़े मुकदमे में फंस जाने या अचानक कोई भारी आपत्ति आ जाने पर पुस्तक में दी गई बटुक भैरव की विधिपूर्वक साधना करने पर चमत्कारिक रूप से काम अवश्य ही बन जाता है।

हनुमान उपासना

हनुमान जी को प्रसन्न करना सबसे आसान है। अगर कोई दुश्मन हाथ धोकर पीछे पड़ गया है तो विधिपूर्वक हनुमान जी की साधना करने पर वह मरेगा तो नहीं परन्तु उसे इतना कष्ट अवश्य होने लगेगा कि आपका पीछा छोड़ देगा। अन्य बिगड़े कार्य भी हनुमान साधना से ठीक हो जाते हैं।

गणेश उपासना

इस पुस्तक में ऋणहर्ता नाम से प्रसिद्ध देवता गणपति की साधना करने की ऐसी सरल घरेलू विधियां बताई हैं जिनका पालन करने से धन प्राप्त होकर समस्त कर्जा उतर जाता है। ऐसी लड़कियां जो ३०-३५ वर्ष की अवस्था तक घर में क्वारी बैठी हुई थीं उनके विवाह भी पुस्तक में वर्णित सरल घरेलू साधनाओं द्वारा सम्पन्न हो गए हैं।

शनि उपासना

प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में कभी न कभी कुछ समय के लिए शनि पीड़ा झेलनी ही पड़ती है। शनि दशा खराब होने के कारण ही रामचन्द्र जी तथा महाबली पाण्डवों को जंगल-जंगल भटकना पड़ा। पुस्तक में शनि कष्ट से निश्चित रुप से मुक्ति पाने के लिए सिद्ध शनि स्तोत्र पाठ विधि तथा अन्य उपाय बताए हैं। साथ ही नव ग्रह शान्ति की विधियां भी संक्षेप में बताई हैं।

तन्त्र विद्या लेखक – पण्डित लक्ष्मीनारायण शर्मा

इस पुस्तक में तन्त्र साधना सम्बन्धी बातें जैसे षोडसोपचार पूजन विधि, विनियोग, न्यास, पुरश्चरण विधि आदि सरल हिन्दी भाषा में समझाई हैं। काली, तारा, षोडसी (त्रिपुर सुन्दरी), भुवनेश्वरी, त्रिपुर भैरवी, छिन्नमस्ता, घूमावती,बगलामुखी, मातंगी, कमला इन दशों महाविद्याओं की साधना और सिद्धि की विधियां बताई हैं। इनके अतिरिक्त वशीकरण, आकर्षण, विद्वेषण, स्तम्भन, उच्चाटन तथा मारण आदि के गोपनीय तान्त्रिक प्रयोग विस्तार से सरल भाषा में समझाए गए हैं। पुस्तक में दशों महाविद्याओं के चित्र भी दिए गए हैं।

मन्त्र महोदधिः

मन्त्र महोदधि भारतीय मन्त्र शास्त्र का सर्वाधिक प्रमाणिक तथा प्राचीनतम उपलब्ध ग्रन्थ है। इसमें मन्त्र साधना के सभी आवश्यक अंगों का विस्त. पूर्वक वर्णन करने के पश्चात प्रायः सभी प्रमुख देवी देवताओं, अर्ध देवताओं, पिशाचों, यक्षों, यक्षणियों का वर्गीकरण, मारण, उच्चाटन आदि षटकर्मों के मन्त्रों और साधना बिधियों का सम्पूर्णतः, आद्योपान्त तथा विस्तृत उल्लेख है। इस ग्रन्थ के अतिरिक्त मन्त्र साधना की प्रामाणिक सामग्री से युक्त दूसरा कोई भी प्राचीन ग्रन्थ आज उपलब्ध नहीं है। ग्रन्थ में मूल संस्कृत मन्त्रों के साथ संस्कृत टीका तथा हिन्दी भाषा में अनुवाद तथा व्याख्या भी है ताकि कोई भी व्यक्ति पुस्तक को भली-भांति समझ सके। हर प्रकार की साधना के लिए आवश्यक यन्त्रों के चित्र भी दिए गए हैं जिससे पुस्तक अपने में पूर्ण हो गई है। बड़े आकार के 825 पृष्ठ।

धनदा तन्त्र

धनदा रतिप्रिया यक्षिणी तन्त्र दरिद्रता नाशक एक श्रेष्ठ कल्प है। जो इस मन्त्र को सदा जपता है उसके पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र आदि कभी दरिद्रता द्वारा अभिभूत नहीं होते। मूल एवं भाषानुवाद सहित।

वर्ल्ड बुक कम्पनी 301–चावड़ी बाजार, दिल्ली–6

हमारे लोकप्रिय प्रकाशन

शाकाहारी व्यंजन	वन्दना अग्रवाल, एम. एस-सी.	60.00
रत्न विज्ञान	खान आलीजाह	50.00
संपूर्ण योग शिक्षा (अष्टांग योग)	पं. शिवकुमार आयुर्वेदाचार्य	50.00
अलौकिक शक्तियां	दिनेश शास्त्री	35.00
टेलीरेस्पान्स पावर	जॉन डि पाल	35.00
हस्तरेखा विज्ञान	कीरो	30.00
अंक विद्या	कीरो	60.00
मंत्र तंत्र साधना	पं. लक्ष्मीनारायण शर्मा	50.00
चमत्कारी मंत्र तंत्र और टोटके	के. ऐ. दुबे 'पद्मेश'	35.00
तंत्र विद्या	पं. लक्ष्मीनारायण शर्मा	50.00
मंत्र विद्या	सत्यवीर शास्त्री	50.00
यंत्र विद्या	सच्चिदानन्द	50.00
हिप्नाटिज्म के चमत्कार	डा. कालीचरन	30.00
बटुक भैरव साधना	सच्चिदानन्द	25.00
गणेश उपासना	सच्चिदानन्द	30.00
हनुमान उपासना	सच्चिदानन्द	25.00
शनि उपासना	सच्चिदानन्द	20.00
शिव उपासना	सच्चिदानन्द	30.00
काली उपासना	सच्चिदानन्द	30.00
दुर्गा उपासना	सच्चिदानन्द	30.00
लक्ष्मी उपासना	सच्चिदानन्द	30.00
सूर्य उपासना	प्यारेलाल शर्मा	60.00
शर्बत जैम जैली	निशा अग्रवाल	35.00
अचार, चटनी और मुरब्बे	निशा अग्रवाल	35.00
55 चमत्कारी जड़ी-बूटियां	शिव गोविन्द त्रिपाठी	50.00
स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज		80.00
लहसुन महाराजा	डा. कालीचरन	25.00
चरित्र परखने की कला (अंग विज्ञान)	कीरो	50.00
कद लम्बा कैसे करें	डा. चार्ल्स डब्लू लीनार्ट एम. डी.	25.00
माडर्न ऐलोपैथिक ट्रीटमेन्ट	डा. कालीचरन, डा. व्यास	170.00
स्त्री रोग एवं प्रसूति विज्ञान	डा. विजय रिख	80.00
ऐलोपैथिक निदान और चिकित्सा	डा. विजय रिख	70.00
सामान्य रोगों की आयुर्वेदिक चिकित्सा	वैद्य दिनेश कुमार शर्मा	70.00
फलों-सब्जियों के चमत्कारी गुण	प्यारेलाल शर्मा	70.00
त्वचा और बालों के रोग	डा. विश्व प्रकाश	30.00

वर्ल्ड बुक कंपनी, चावड़ी बाजार, पोस्ट बॉक्स-1300, दिल्ली-6